Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४५
माह- अगस्त २०१९
अङ्क -०५ (१९८)
वर्ष -१४ (१९)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैंक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.com

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

❖ **सम्पादकीय :** **पल्लव**
- वर्षायोग-धर्मकर्म का मौसम : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणमुनि विश्वस्तसागर जी ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- गुरु पूर्णिमा पर गुरुदेव का...: श्री विरागसागरजी ६
- झुकना, भरने का आयाम है :आ.विनम्रसागरजी ८
- बैर-विरोधों पर समता .... : श्री विरागसागर जी ९
- माचारी से विश्वास ... : आर्यि.विदूषीश्री माता ११
- वात्सल्य को आत्मसात ... : श्री विरागसागर जी १२
- स्वतंत्रता दिवस सार्थक ... : श्री विरागसागर जी १८
- बांझ, निसंतान का कारण..: श्री विरागसागर जी २०
- अंगुली पकड़कर चलना... : श्री सुबलसागर जी २१
- गुरु के प्रतिसमर्पणता : मुनिश्री विवर्धनसागर जी २२
- मेरा चातुर्मास इनके ...: मुनिश्री सुपार्श्वसागर जी २३
- जीवन की परमोत्कृष्ट..: आ.श्री विशुद्धसागरजी २४
- गुरुदेव ने आशीर्वाद...:आर्यि.विजिज्ञासाश्री माता २६
- A Man is bundle of...: क्षुल्लि. विज्ञप्तिश्री माता २६
- प्राणायाम से बढ़ाये ... : आर्यि. पुनीतचैतन्यमति २७
- शुद्ध सम्यक्त्वी राजा वज्रकर्ण : पदम्पुराण भाग २८
- चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट एवं प्रार्थनाएँ ३०
- आध्यात्मिक शंका-समाधान :श्री विरागसागरजी ३४
- स्नान कराना : संस्कार सुरभि से ३६
- गोम्मटसार कर्मकाण्ड ग्रंथ ... का शुभारंभ ३७
- प.पू.श्री विरागसागरजी के विहार का विवरण ४१
- उपसंघों की संशोधित सूची ४३

❖ **स्वास्थ्य जगत-**
- अनाजों का राजा गेहूँ : आर्यि.विवक्षाश्रीमाता जी ३३

❖ **कविताएँ**
- वीतराग देव : आ. श्री विशुद्धसागर जी २२
- गुरु चरण मत छोड़ना : आर्यिका वियुक्तश्री माता २३
- समर्पित किया है : आर्यि. विसंयोजनाश्री माता २५
- विरागसागर नाम हमें.... : पं.विजेन्द्र कुमार जैन ३२

❖ **समाचार** ४४
❖ **विराग वर्ग पहेली** ५०

संपादकीय

वर्षायोग-धर्म कर्म का मौसम

इंजी. आनन्द कुमार जैन

वर्षायोग धर्म कर्म एवं आस्था का प्रतीक है साधु और श्रावक का योग है। चातुर्मास की बेला में सबसे बड़ा काम होता है साधुओं की सेवा करना, उनके नियम उनकी पद्धति के अनुसार चर्या में सहयोगी बनना ये बहुत बड़ी बात मानी जाती है। हम प्राय: मंगल की कांक्षा व कामना करते हैं हमारे जीवन में मंगल हो वह कैसे हो। आप पर द्रव्यों के माध्यम से मंगल करते हो, चाहे कोई भी कार्य हो सबके साथ में मंगल लगाना चाहते हो- मंगल गृह प्रवेश, मंगल विवाह मुहूर्त, मंगल जन्म दिवस, मंगल विहार, मंगल प्रवेश इत्यादि मंगल शब्द कहते हैं। यहाँ तक ही नहीं अब तो लोग मृत्यु तक के कार्यक्रम करते हैं तो लिखते हैं मांगलिक कार्यक्रम। कहीं भी अमांगलिक नहीं लिखना चाहते मंगल ही मंगल चाहते हैं। किन्तु वह मंगल बाहर से चाहते हैं सत्यता ये है कि जो मंगल बाहर से होते हैं वे आत्मा को मंगल नहीं बना पाते। अपनी आत्मा को मंगल बनाने के लिये हमें आत्मिक मंगलों की आवश्यकता है। जिनका हमारी आत्मा से सीधा संबंध हो सकता है। जिनका हमारे शरीर से संबंध है वे हमारे आत्मा को मंगल कैसे बनायेंगे। आत्मा को मंगल बनाने वाले चार मंगल हैं जिन्हें परमार्थिक मंगल कहते हैं। वे चार मंगल अनादिकाल पहिले भी थे, आज भी है और अंनत काल तक रहेंगे। यूँ तो कर्म ही हमारे लिये अनिष्ट कारक है, कर्म हमें हमारे स्वभाव को प्राप्त नहीं होने देता, जब तक कर्म की एक प्रकृति भी शेष रहेगी तब तक हम समग्र स्वभाव को प्राप्त करने में असमर्थ ही रहेंगे। सम्पूर्ण कर्म प्रकृति के नष्ट होने से हम समग्र स्वभाव को प्राप्त कर सकते हैं। फिर भी कुछ प्रकृतियाँ ऐसी होती हैं जो हमें स्वभाव तक ले जाने में बाधक नहीं है इसलिये उन्हें हम साधक कह सकते हैं।

परम पूज्य गणाचार्य १०८ श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने बताया कि आज के युग में ज्ञान का बहुत अधिक महत्व है बच्चे यदि पढ़ने में कमजोर होते हैं तो उनके माता-पिता को बड़ी चिंता हो जाती है। आज प्राय: कर बच्चे बुद्धि विकास के लिये न जाने कहाँ कहाँ के चक्कर लगाते हैं। दहरी-दहरी पर सिर टेकते हैं फिर भी उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती है। घबराओं नहीं कही जाने की आवश्यकता नहीं है, हमारे यहाँ श्रुत पंचमी व्रत है जो केवल वर्ष में एक दिन किया जाता है ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी का यह व्रत है जो व्यक्ति की बुद्धि विकास का प्रबल हेतु है। इस व्रत को करने वाले छात्र-छात्राएँ एवं साधक तीव्र बुद्धि वाले हो जाते हैं। कम परिश्रम में ही उन्हें ज्ञान प्राप्त हो जाता है। दूसरी बात ज्ञान विकास करने का तरीका यह है कि हम मंदिरों की जिनवाणी को सुरक्षित करें। उन पर वेष्ठन लगायें गुरुओं को शास्त्रदान दें इससे भी ज्ञान की बृद्धि होती है। बन्धुओं बीच का कुछ ऐसा समय निकाले जिस समय अज्ञानता के कारण लोगों ने शास्त्रों की रक्षा नहीं की और हमारे बहुत सारे ग्रन्थ इधर-उधर विदेशों में चले गये।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार २४.१०.१९८२)

।। ऊँ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।।

हे आत्मन्! संसारी भव्य प्राणी संसारार्णव से पार होने के लिए जीवन्मुक्त परमात्मा बनने का ध्यान, मनन, चिन्तन श्रेओमार्ग है अत: इस पंचकल्याणक में सर्वप्रथम गर्भकल्याणक ध्यान करते समय चिंतन मनन में संस्कार की उपयोगता का विचार किया जाता है। नगरी की रचना १२ योजन की की गई थी और सचित्त विमानों में रहने वाली श्री आदिक छप्पन कुमारी माता की सेवा करने के लिए आती है और माता सोलह सपने देखती है और अपने पति से पूछती है वे उनको कहते हैं कि तुम तीर्थंकर की माँ कहलाओगी माता इस वार्ता को सुनकर आनंद घन परमात्मा समान आनंद को प्राप्त होती है। वाद में नवमाह बाद में शुभ वेला में पुत्र जनती है उस समय भगवान के पुण्योदय से देवों के विमानों में सिंह ध्वनि होती है शंख आदि अनेक अतिशय होते हैं। चारों निकाय देव देवागनाय जन्म कल्याणक मनाने के लिए आते हैं उस समय सर्व प्रथम इन्द्राणी ही भगवान के दर्शन करती है और महाखुश होकर पुलकित होती है और मायामयी बालक सुलाकर तीर्थंकर बालक को इन्द्र को देती है तब सहस्त्र नयन बनाकर भी इन्द्र तृप्त नहीं होता तब पांडुक शिला पर महाअभिषेक कर पुन: नगरी को लाते हैं और पिता को देकर तांडव नृत्य करता है उसका पुण्य हे विमल.....बनो

जिनोपदेश

संकलन- समाधिस्थ श्रमणमुनि विश्वस्त सागर जी महाराज की डायरी से संकलित

दु:खस्यानन्तरं सौख्यं ततो दु:खं हि देहिनाम्।। ४/३४।। क्ष.चू.

अर्थ- प्राणियों को दु:ख के बाद सुख और उस सुख के बाद दु:ख होता है।

स्वस्यैव सफलो यत्न:, प्रतिये हि विशेषत:।। ४/३४।। क्ष.चू.

अर्थ- अपना ही यत्न सफल होता हुआ विशेषरूप से प्रीति के लिये होता है।

इष्टस्थाने सती वृष्टि-स्तुष्टये हि विशेषता:।। ४/४१।। क्ष.चू.

अर्थ- इष्ट स्थान में हुई उत्तम वर्षा विशेष रीति से संतोष के लिये होती है।

तत्त्वज्ञान हि जागर्ति, विदुषामार्तिसम्भवे।। १/५७।। क्ष.चू.

अर्थ- विद्वानों के पीड़ा के होने पर भी कर्तव्य का विवेक स्थिर ही रहता है।

शोकनामलमपुण्यानां, पापं किं न फलप्रदम।
दीपनाशे तमोराशि: किमाह्वानमपेक्षते।। १/५८।। क्ष.चू.

अर्थ- जिस प्रकार दीपक के बुझ जाने पर अँधेरा अपने आप ही आ जाता है, उसे बुलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, उसी प्रकार पुण्य के नष्ट हो जाने पर दु:ख को बुलाने की आवश्यकता नहीं होती।

हन्त क्रूरतमो तिथि:।। १/६३।। क्ष.चू.

अर्थ- खेद है कि भाग्य बहुत कठोर है।

न ह्यङ्गुलिरसाहाय्या, स्वयं शब्दायते तराम्।। १/६४।। क्ष.चू.

अर्थ- सहायता रहित अंगुलि अपने आप शब्द नहीं करती।

दृष्टान्ते हि स्फुटायते मति:।। १/८६।। क्ष.चू.

अर्थ- दृष्टान्त के मिल जाने पर बुद्धि स्पष्ट हो जाती है।

निश्चलादविसम्वादाद्, वस्तुनो हि विनिश्चय:।। १/९४।। क्ष.चू.

अर्थ- अटल निर्विवाद वचन से वस्तु का अटल निश्चय हो जाता है।

गुरु पूर्णिमा पर गुरुदेव का विशेष संदेश

प्रवचनकार -परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज

गुरु वह जो वजनदार हो, वजन में नहीं अपितु गुणों में, त्याग, तप, चर्या, आचरण में, संघ संभालने में, जिनकी हर एक बात मजबूत एवं सटीक होती है वे होते हैं 'गुरु'

जैनागम में आचार्य भगवंतों (गुरु) आचार्यों का लक्षण देते हुए कहा है-

दंसण णाणपहाणे-वीरियचारित्र वरतवायारे।
अप्पं परं च जुंजइ सो आइरियो मुणी णेओ।।

जो दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप और वीर्य इन पंचाचारों का स्वयं पालन करते हैं एवं अपने शिष्यों से पालन करवाते हैं वे आचार्य कहलाते हैं। पहले वे सारी बातों को अपने में ढ़ालते हैं फिर शिष्यों को उसमें ढ़लने की बात कहते हैं।

हमारे पूज्य गुरुदेव आचार्य विमल सागर जी महाराज हमें अलग से प्राश्चित देते थे सभी को चातुर्मासिक प्राश्चित में १२ उपवास देते थे और मुझे मात्र ५ उपवास देते थे। पू. गुरुदेव सन्मतिसागर महाराज का भी यही सिस्टम था। गुरुदेव विमल सागर जी बोलते थे आपने इतनी बड़ी बीमारी से निकल कर दीक्षा ली है इसलिए उपवास आदि ज्यादा नहीं करना और पू. सन्मतिसागर जी गुरुदेव कहते थे सारे दिन लिखता पढ़ता रहता है इतना बड़ा संघ संभालता है यही सबसे बड़ी तपस्या है अब उपवास की ज्यादा तपस्या नहीं करना।

यद्यपि ऐसा विधान है कि जो साधक स्वस्थ है उन्हें चातुर्मास काल में १२ उपवास करना चाहिए। हम भी प्राश्चित में १२ उपवास देते हैं इसलिए स्वयं भी १२ उपवास करते हैं क्योंकि गुरुजन जो चर्या शिष्यों से कराते हैं वो स्वयं भी करते हैं।

गुरु का अर्थ ऊँचे आसन पर बैठना, नमस्कार कराना, सम्मान पाना ही नहीं बल्कि श्रेष्ठ साधना करना है। उन्हें ही देखकर शिष्यगण सारी चर्या सीखते हैं।

जैसे छोटे बच्चे भगवान के दर्शन करती हुई माँ को देखकर स्वयं भी वैसी प्रतिक्रिया करने लगते हैं उसी प्रकार गुरु की चर्या देखकर शिष्य भी वैसी चर्या करते हैं।

गुरु को अपना आदर्श स्वयं बनाकर रखना चाहिए क्योंकि आदर्शशील गुरु को देखकर शिष्य भी वैसा आदर्शवान बनता है। लोग यूँ ही किसी को सिर नहीं झुकाते जब आपके अंदर गुणाधिकता, चर्या श्रेष्ठता देखते हैं तभी वे उन गुणों के अनुराग वश उनकी प्राप्ति हेतु आपको सिर झुकाते हैं आपकी भक्ति पूजा करते हैं।

गुरु आचार्य, उपाध्याय और मुनि भी हो सकते हैं देव, शास्त्र, गुरु पूजन में आया है-**गुण छत्तीस, पच्चीस आठ बीस** ... आ. समन्तभद्र स्वामी ने भी रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा है-

विषयाशावशातीतो निरारम्भोऽपरिग्रहः।
ज्ञानध्यानतपोरक्तः तपस्वी सः प्रशस्यते।।

जो विषयों की आशा से रहित हैं। मन से विषयों की आशा निकाल देना बड़ी बात है। संयम पथ पर एक-एक कदम फूक-फूक कर रखना होता है हम रोड़ पर चलते समय तो पढ़ लेते हैं 'नजर हटी दुर्घटना घटी' लेकिन उसे जीवन में उतार नहीं पाते, जबकि संयम पथ पर हर कदम संभालकर रखने की आवश्यकता होती है।

अपने संघ का पुराना नियम है कि कभी एकल विहारी नहीं रहेंगे मूलाचार में भी कहा है- 'मा में सुत्त एकाकी' मेरा शस्त्रु भी क्यों न हो तो भी एकल विहारी न रहें। समलिंगी दो होना चाहिए। यदि मुनि हैं तो दो मुनि हो, आर्यिका है तो दो हों, क्षुल्लक भी दो क्षुल्लिकाएँ भी कम से कम दो हों।

हमारे संघ से कभी कोई एक नहीं गया। दो-तीन आदि समूह में ही विहार करते हैं लेकिन बाद में एक-एक हो जाते हैं। आज समाज में भी ऐसे नियम बन गये हैं कि एकल विहारी का चातुर्मास नहीं करायेंगे उन्हें ज्यादा समय तक नहीं रोकेंगे आदि मैं सोचता हूँ साधु स्वयं ही संभल जायें।

पू. गुरुदेव विमलसागर जी बोलते थे एकल विहारी साधु को एक, दो आहार कराओं और प्रार्थना करलो महाराज आगे कहाँ विहार करना है। जब हम लोग कुचामन के पास नावा राजस्थान में प.पू. आचार्य धर्मसागर जी महाराज के पास गये तो उसके एक दिन पहले आ. विद्यासागर जी महाराज के गुरु भाई आ. कल्प विवेकसागर जी महाराज का वहाँ प्रवेश हुआ लेकिन उनकी आगवानी में आ. श्री धर्मसागर जी के संघ का एक भी साधु नहीं आया और जब दूसरे दिन हमारा प्रवेश हुआ तो सारा संघ दूर तक लेने आया। यह बात समाज के लोगों में फैल गई आखिर इतना अंतर क्यों तेरह, बीस पंथ तक बात पहुँचने लगी तभी पू. आचार्य धर्मसागर जी महाराज ने मंच पर उसका खुलासा करते हुए कहा- विवेक सागर जी की पांच छह पिच्छी जरूर आई लेकिन मुनि वे अकेले थे इसलिए संघ ने उनकी आगवानी नहीं की और विरागसागर जी भले दो पिच्छी हैं लेकिन वे समलिंगी दो मुनि है अत: सारे संघ ने उनकी आगवानी की।

अपने यहाँ दीक्षा के समय ही एकल विहारी ने होने का नियम दिलाया जाता है निभने-निभाने का सूत्र दिया जाता है फिर भी लोग विचार न मिलने से एकल विहारी हो जाते हैं। १००प्रतिशत अपनी कोई चलाना चाहे तो कभी नहीं चल सकती, गुरु भी शिष्यगण जहाँ व्यवस्था बना देते हैं वहाँ रूक जाते हैं वे भी १०० प्रतिशत अपनी नहीं चलाते कभी-कभी शिष्यों की मानते हैं तो शिष्य भी उनकी आज्ञा पालन में तत्पर रहते हैं श्रद्धा से स्वीकार करते हैं। निभो-निभाओं गुण जिनमें होता है वे सभी जगह खुश प्रसन्न रहते हैं। घर-परिवार भी तभी चल पाता है कभी बच्चे मुखिया की बात मानते हैं तो कभी मुखिया को बच्चों की बात मानना होती है।

अपने संघ का एक और महत्वपूर्ण सूत्र है कि विलिंगी अर्थात् विपरीत लिंग वालों से एकांत में चर्चा नहीं होती है कम से कम दो व्यक्ति जरूरी हैं।

आज ऐसी घटनाएँ घट रही हैं ऐसी चर्चायें आ रही हैं वे कितनी सत्य हैं कितनी असत्य यह तो भगवान जाने, लेकिन एकांतिक चर्चा निषेध रूप संघ के नियम का उलंघन हुआ है और ऐसे में कोई भी संदेह खड़ा कर सकता है। ईर्ष्यालु बात को बढ़ा चढ़ाकर बदनामी के कटघरे में खड़ा कर सकता है अत: ऐसा अवसर ही न आने दें।

लोगों को भी चाहिए वे किसी साधु के रूम में अकेली महिला को न जाने दें अथवा रूम बंद न करने दें, स्वयं वहां जाकर बैठ जायें ऐसा कुछ न करके खाली चर्चा बदनामी करना बहुत बड़ी मूर्खता है इससे आप धर्म की हँसी के अपराधी बन रहे हो।

मेरे पास समाचार आ रहे हैं, सभी साधु संघ इन नियमों का दृढ़ता से पालन करें अन्यथा उन्हें संघ से अलग कर दिया जाये इसलिए सभी सावधान रहें क्योंकि आज ईर्ष्या का जमाना है किसी की ज्यादा प्रसिद्धि प्रतिष्ठा लोगों को पचती नहीं हैं। इसमें मात्र श्रावक ही क्या साधु भी पीछे नहीं हैं, वे दुष्प्रचार कर देते हैं लेकिन सुनने वालों को भी चाहिए कि वे मात्र एक पक्ष की बात पर विश्वास न करें दोनों ओर की बात सुने फिर आगे कोई बातें करें। अन्यथा जब आपकी बात झूठ निकल जायेगी तब आपके पास कोई उत्तर नहीं रहेगा उस समय आप ही अपनी एवं जिनशासन की अप्रभावना के प्रबल हेतु ठहरेंगे। 'निरारम्भो परिग्रह:' साधुजन आरंभ सारंभ के कार्य व्यापार, उद्योग आदि किसी भी प्रकार का आदेश उपदेश नहीं दे सकते। ८वीं प्रतिमाधारी जब आरंभ का त्यागी होता है वह अपने घर गृहस्थी के कार्य नहीं कर सकता फिर साधु तो उससे बहुत ऊँचे होते हैं। एक बार जिन मंदिर मूर्ति का उपदेश देना मान सकते हैं लेकिन घर गृहस्थी संबंधि सामग्री के उद्योग का उपदेश कभी नहीं देना चाहिए क्योंकि आप नौ कोटी से आरंभ सारंभ के त्यागी हैं।

कई बार देखा जाता है अकेले साधु भी एक-एक, दो-दो गाड़ी रखते है अनाप सनाप सामग्री जोड़कर रखते हैं अरे! आवश्यकता किसकी नहीं पड़ती इसका मतलब यह नहीं हम सब कुछ रखने लगें। यह निर्ग्रन्थों का पथ है इसमें यदि १ पेन से आपका काम चल रहा है तो दो मत रखो यदि दो चटाई काफी हैं तो अधिक मत रखो ताकि हम भी गर्व से कह सकें कि हमारे उपकरणों से ही हमारा काम चल जाता है।

अंत में ज्ञान और अध्यन रूपी तप में जो लीन रहते हैं। ध्यान स्थिरता पूर्वक होना चाहिए। यदि स्थिरता नहीं है तो वह मात्र कायक्लेश है क्योंकि आपका मन किसी निश्चित पदार्थ के चिंतन में नहीं लगा इधर-उधर घूम रहा है ऐसा ध्यान कर्मक्षय का कारण नहीं बन सकता।

ज्ञान प्राप्ति के प्रति उद्यम किये बिना करते रहना, याद नहीं होता। हमारे संघ में गोम्मटमति नाम की एक वृद्ध माता जी थी उन्होंने स्कूल की एक भी क्लास नहीं पढ़ी थी लेकिन फिर भी उनमें इतनी लगन थी ५०० से अधिक ग्रन्थों के प्रश्न उन्हें याद हो गये थे। एक-एक लाईन दूसरों से पूछ-पूछ कर उन्होंने काफी पाठ याद कर लिये थे तो हम भी इसी प्रकार ज्ञान ध्यान तप में लीन रहें तभी गुरुपूर्णिमा सार्थक हो सकती है। तभी आप सच्चे गुरु बन सकते हैं। लेकिन गुरु बनने का कभी प्रयत्न मत करना क्योंकि कहा है-

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर।
चीटीं ले शक्कर चली हाथी के सिर धूल।।

नाव जितनी हल्की होती है उतनी ऊपर आती है वजनदार होने पर डूब जाती है। पतंग जितनी हल्की होती है उतनी ऊपर जाती है लेकिन तभी तक जब तक वह अपनी डोरी से बंधी है उसी प्रकार शिष्य रूपी पतंग तभी तक उपलब्धियों के आसमान को छूती है जब तक वह गुरु की आज्ञा अनुशासन की डोर से बंधा है।

गुरु नहीं शिष्य के गुणों से भरो क्योंकि जो सच्चा शिष्य बन जाता है शिष्य के गुणों से भर जाता है वही भविष्य में एक अच्छा गुरु बन पाता है। सही शिष्य में ही गुरुपने का शुभारंभ होता है इसलिए सदैव शिष्य बनना चाहिए।

धर्मरूपी नदी के गुरु शिष्यरूपी दो तट हैं अगर ये दोनों अपने कर्तव्य पालन में व्यवस्थित हैं तो धर्म पिपासुओं की प्यास बुझती रहेगी और धर्म परम्परागत अनवरत व्यवस्थित प्रवर्तता रहेगा।

झुकना, भरने का आयाम है

आचार्य विनम्रसागर जी

हर आदमी कुछ पाता है तो पहले कुछ खोना पड़ता है कहीं-कहीं तो पहिले खोना पड़ता है बाद में पाना हो या न हो यह जरूरी नहीं। जुए में जुआरी पहले दाँव पर लगाने के लिए खो देता है, पाना उसकी किस्मत पर निर्भर करता है। मन हमारा जितना ज्यादा वस्तुओं में फैलता है आत्मा उतनी ही सिकुड़ती है और जब आत्मा गुणों के प्रति फैलती है तो मन को उतना ही संकुचित दायरे में होना पड़ता है। मन दायरे में हो तो आत्मा दरिया बनकर समन्दर में मिल जाती है और मन दायरे में न रहे तो आत्मा दरिद्री बनकर दर-दर की ठोकरें खाती है। मन आत्मा से दुनियाँ की वस्तु माँगने को कहे तो वह भोगी व रोगी आत्मा होती है और यदि मन आत्मा से गुण माँगे तो आत्मा महात्मा बनती है। संत और महंत वही बनते हैं जो अपने गुणों को पाने के लिए झुकते हैं क्योंकि झुकना भरने का तरीका है आज जो गुणों से नहीं भरे वो वास्तव में झुके नहीं हैं।

शिष्य परमात्मा के प्रति गुरुओं के प्रति जितना विनम्र होता जाता है उसके हृदय में ऋद्धि-सिद्धि उतनी ही अधिक प्राप्त होती है। पहाड़ अकड़कर जमीन पर खड़ा रहता इसीलिए पानी बरसने के बाद भी सूखा का सूखा रहता है और तालाब जितने झुके होते हैं तो बरसात में उतने ही भर जाते हैं। बाँस का पेड़ जितना ऊँचा खड़ा रहता है उतना ही एक हवा के झोंके से चकनाचूर हो जाता है और घास तीव्र हवा में झुक जाती है तो तीव्र हवा भी उसे उखाड़ने में समर्थ नहीं हो पाती है।

आज तक चाहे एकलव्य हो, चाहे उपमन्यु, चाहे अर्जुन, चाहे श्रवणकुमार जिसने भी विद्या आदि गुणों को प्राप्त किया है वे सभी गुण विनम्रता से प्राप्त हुए हैं अत: हम सभी को महान् गुणों को पाना है तो सर्वप्रथम झुकने का विचार बनाना पड़ेगा तभी ज्ञान के क्षेत्र को विकसित करके अपने जीवन को उज्जवल बना सकते हैं और अपना जीवन गुणों से भर सकते हैं।

''तुमने जो सत्य माना था वही तुम्हें मिला है।''

बैर-विरोधों पर समता की विजय

भगवान पार्श्वनाथ (मोक्ष सप्तमी)

प्रवचन- महासंघाधिनायक गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

२४ तीर्थंकरों में २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के मंदिर विश्व में सबसे अधिक मिलेंगे। उन मंदिरों में यदि वेदिया हैं तो सबसे अधिक भगवान पार्श्वनाथ की वेदिया हैं। कितने मंदिरों में तो मैंने देखा कि वेदी पर जितनी भी प्रतिमायें थी सभी भगवान पार्श्वनाथ की थी।

पूजाओं में भी सबसे अधिक पूजायें भगवान पार्श्वनाथ की लिखी गई। चालीसा, स्तोत्र भी सबसे ज्यादा पार्श्वनाथ भगवान के हैं। अतिशय क्षेत्रों की गिनती में भी पार्श्वनाथ भगवान के अतिशय क्षेत्र सबसे अधिक हैं एवं विशालतम् प्रतिमा भी ग्वालियर के गोपाचल पर्वत पर सबसे बड़ी ४२ फीट पद्मासन भगवान पार्श्वनाथ प्रभु की है।

अगर हम साहित्य में देखें तो प्रथमानुयोग में सबसे अधिक वर्णन भगवान पार्श्वनाथ के जीवन चरित्र का है। मंत्र साहित्य में सबसे अधिक पार्श्वनाथ भगवान से जुड़े हुए मंत्र हैं। अतिशय चमत्कार भी भक्तों में पार्श्वनाथ भगवान की मंत्र, जाप्य से सबसे अधिक होते हैं।

सम्मेद शिखर जी से यद्यपि अभी तक अनंतानंत परमात्मा सिद्धि को प्राप्त हो चुके हैं। वर्तमान हुण्डापसर्पिणी काल में भी २० तीर्थंकर वहाँ से मुक्ति को प्राप्त हुए हैं लेकिन फिर भी सम्मेद शिखर पार्श्वनाथ पर्वत के नाम से जाना जाता है। शासन ने भी पार्श्वनाथ हिल (स्टेशन) बनाकर सम्मेद शिखर को महत्व दिया है।

इसका मतलब है भगवान पार्श्वनाथ हम सबकी जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र हैं। आराधना और साधना के केन्द्र हैं। इसका मुख्य कारण है भगवान पार्श्वनाथ का संघर्षमय जीवन। जब हम दस भव पूर्व से उनके चरित्र पर दृष्टि डालते हैं तो दो प्रकार की स्थिति दिखती है भाई-भाई होने पर भी कमठ के अंदर बैर-विरोध था लेकिन पार्श्वनाथ के अंदर क्षमाभाव था। इतिहास इस बात का स्वयं साक्षी है कि आज तक जितने भी ऐतिहासिक पुरुष हुए हैं उनके पीछे कोई न कोई शत्रुभाव रखने वाला भी रहा है। एक दृष्टि से वह उपकारी रहा है क्योंकि उसके माध्यम से उन महापुरुषों का नाम जगत विख्यात हुआ है।

यदि कंश न होता तो कृष्ण के लिए कोई न समझ पाता। यदि रावण न होता तो राम को कोई नहीं समझ पाता और यदि कमठ न होता तो भगवान पार्श्वनाथ को भी कोई नहीं जान पाता। ऐसा लगता है वह विरोधी नहीं अपितु उनकी उन्नति और प्रसिद्धि का कारण रहा है।

बन्धुओ! भगवान पार्श्वनाथ पर हर भव में घनघोर उपसर्ग हुए। हर भव में भगवान पार्श्वनाथ के जीव का कमठ ने हनन किया लेकिन प्राण लेने पर भी पार्श्वनाथ के मन में क्रोध उत्पन्न नहीं हुआ। बैर-विरोध उत्पन्न नहीं हुआ। अभिमानी कमठ सोच रहा था कि- मैं पार्श्वनाथ को झुका दूँगा लेकिन भगवान पार्श्वनाथ की नम्रता, सहजता ने बैरी कमठ को ही अपने चरणों में झुका लिया।

बड़े से बड़ा तूफान भी नम्रशील घास का कुछ नहीं कर पाता जबकि विशाल काय बांस को गिराने में हवा का एक झौका ही सक्षमक और समर्थ हो जाता है।

भगवान पार्श्वनाथ के जीवन चरित्र में सहजता, नम्रता के दर्शन होते हैं। जहाँ छोटी सी समस्या में व्यक्ति अपने कदम कमजोर कर लेते हैं जब व्यक्ति के कदम डगमगाने लगते हैं वहाँ पार्श्वनाथ भगवान प्रकट होते हैं और कहते हैं- घबराओं नहीं यदि तुम सत्य पर हो तो तुम्हारी विजय होगी। भगवान पार्श्वनाथ विजय का पाठ पढ़ाते हैं और यदि सहनशीलता हमारे अंदर है तो सफलता भी निश्चित हमारे हाथ आयेगी। व्यक्ति भगवान के पास जाकर प्रार्थना करता है। उनके चरणों में गिड़गिड़ाता है, अपनी समस्या उन्हें सुनाता है लेकिन जब सुनबाई का नम्बर आता है तब तक वह वहाँ से गायब हो जाता है यह उसकी सबसे बड़ी कमजोरी होती है। व्यक्ति आज के बोये हुए बीज का फल आज ही चाहता है लेकिन यह संभव

नहीं है। उस फल को पाने के लिए कुछ धैर्य भी चाहिए। हाँ जब हमारी भक्ति सच्ची होती है तो उसके चमत्कार से तत्क्षण भी फल प्राप्त हो सकता है।

कल्याण मंदिर स्तोत्र, भक्तामर स्तोत्र इस बात का प्रतीक है कि- आचार्य मानतुंग स्वामी जैसे-जैसे स्त्रोत के एक एक काव्य की रचना करते गये वैसे-वैसे ताले बंद ४८ दरवाजों में से एक-एक दरबाजें स्वत: खुलते गये, वसर्ते हमारी श्रद्धा-भक्ति भी वैसी होना चाहिए। हमारी भक्ति नम्बर दो की होती है और हम फल नम्बर एक का चाहते है जो कभी नहीं मिल सकता। बबूल के बीज बोने वाले को आम का फल प्राप्त हो जाये यह कभी संभव नहीं हो सकता। आम के फल पाने के लिए आपको बीज भी आम के ही बोना होगा।

भगवान पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र अनेकों उपदेशों से भरा हुआ है। उन्होंने करूणा दया, अहिंसा के मात्र नारे ही नहीं लगाये अपितु अपने आचरण में उतार कर जनमानस को दिखा दिया कि अहिंसा, दया, करूणा क्या होती है। तड़फते हुए नाग-नागिन को जब छोटे से बालक पार्श्वनाथ ने देखा तो वे अपने हाथी से उतर कर नीचे आ गये और उस तापसी से बोले- हे तापसी तुम जिस लकड़ी को जला रहे हो उसमें नाग-नागिन का जोड़ा जल रहा है शीघ्र ही उस लकड़ी की आग बुझाकर उनकी रक्षा कीजिए। वह तापसी बोला- हे बालक तू बहुत छोटा है। मैं इतने वर्ष पुराना तापसी हूँ तू मुझे शिक्षा देने आया है। जा-जा अपने घर जा, इस लकड़ी में कोई भी नाग-नागिन नहीं है। पार्श्व कुमार बोले- हे तापसी! यदि नाग-नागिन नहीं निकले तो तुम्हारी जीत और मेरी पराजय होगी, किन्तु यदि निकल आये तो आपकी पराजय और मेरी जीत होगी। बात सुनते ही वह तपस्वी तिलमिला उठता है तुरन्त कुल्हाड़ी लाकर उस लकड़ी को चीर देता है। उसमें से अर्धजले नाग-नागिन को निकला देख उसे आश्चर्य होता है ओ हो! यह तीर्थंकर होने वाला महापुरुष है जन्म से तीनज्ञान का धारी होने से उसे समझ में आ गया कि इसमें नाग-नागिन जल रहे हैं।

पार्श्वनाथ ने उन मरते हुए नाग-नागिन को णमोकार मंत्र सुनाया जिसके प्रभाव से वे मरकर धरणेन्द्र और पद्मावती हुए। कालान्तर में जब तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान पर उपसर्ग आया तो उस वक्त पांचों कल्याणकों में अहम् भूमिका निभाने वाले सौधर्म इन्द्र का भी ध्यान उस ओर नहीं गया, और न ही अन्य किसी देवों के आसन कम्पायमान हुए। उस समय सबसे पहले दौड़कर आने वाले धरणेन्द्र और पद्मावती थे, उन्होंने उपसर्ग दूर किया था।

बन्धुओ! यह बात हमें शिक्षा देती है कि- सज्जन पुरुष कृतज्ञता को कभी नहीं भूलते है। कृतज्ञता सत्यपुरुषों का प्राण है। शास्त्रों में कहा है- 'न हि कृतमुपकाराइ साधव: विस्मरन्ति' किये गये उपकारों को सज्जन पुरुष कभी नहीं भूलते हैं। हम भी इस बात का विशेष ध्यान दे कि यदि हमारे ऊपर किसी ने उपकार किया है, चाहे वे माता-पिता हों, गुरुजन हों, मुनिजन हो अथवा अन्य कोई भी हो यदि उन्होंने उपकार किया है तो हमें उनके प्रति कृतज्ञता का परिचय देना चाहिए। कहते हैं उपकार का बदला तो भव-भव में भी चुकाया नहीं जा सकता, किन्तु धरणेन्द्र और पद्मावती ने तीर्थंकर भगवान के उपसर्ग को दूर कर, उपकार का बदला उपकार से चुकाकर जन-मानस को कृतज्ञता का पाठ पढ़ाया।

आज हम सभी छोटी-छोटी बातों से घबरा जाते हैं लेकिन पार्श्वनाथ भगवान भयावह घनघोर उपसर्गों में भी अपनी साधना से विचलित नहीं हुए। उन्होंने कमठ को भी दिखा दिया कि विजय बैर-विरोध की नहीं, समता, सरलता और सहनशीलता की होती है। घनघोर उपसर्ग की भूमिका में अडिग ध्यानी भगवान पार्श्वनाथ को जब केलवज्ञान हुआ तो बैरी कमठ भी बैरभाव छोड़कर फूट-फूटकर उनके चरणों में पड़कर रोने लगा, अपने अपराधों की क्षमा मांगने लगा। यह था भगवान पार्श्वनाथ की क्षमा का परिणाम जिसने बैरी को भी चरणों में झुका दिया। और इसी क्षमा ने उन्हें जगत में विख्यात कर जन-जन का आराध्य बना दिया।

बन्धुओ! आज मोक्ष सप्तमी के दिन अधिकांशत: भक्तगण सम्मेद शिखर जी के स्वर्णभद्र टोंक पर जाकर लाडू चढ़ाते हैं भगवान की वंदना करते हैं उस टोंक का भी अपने आप में बहुत बड़ा महात्म्य है। सम्मेद शिखर महात्म्य ग्रंथ के रचेयता स्वामी लोहाचार्य कहते हैं कि- इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र आर्यखण्ड के अंगदेश में गन्धपुरी नाम की नगरी थी

उसके राजा प्रभासेन बड़े ही नीति निपुण थे किन्तु उनकी रानी शांतसेना पुत्र सुख से वंचित थी। राजा ने सोमसेन नामक मुनिराज से पुत्रोत्पत्ति का उपाय पूछा, जिसके उत्तर में मुनिराज ने कहा- हे राजन! तीर्थराज सम्मेद शिखर तीर्थों में सर्वोत्तम है। उसकी वंदना भव्यों को अभीष्ट सुखों को देने वाली है। तुम यही उस सम्मेदगिरी की प्रतिष्ठा करो तथा भगवान पार्श्वनाथ की स्वर्णभद्र टोंक पर प्रतिमा विराजमान कर पूजा भक्ति करो, सिद्धचक्र व्रत और एक अभीष्ठ दान देओ। जिससे तुम्हें पुत्रसुख का लाभ होगा।

राजा ने उसी नगरी के वन में सम्मेद शिखर की रचना की एक विशाल शिखरवद्ध स्वर्ण मंदिर में नीलमणि रत्न की पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान की उसमें स्वर्णभद्र टोंक की स्थापना कराकर खूब पूजा भक्ति की सिद्धचक्र व्रत कर चतुर्विध संघ को दान दिया। जिसके फल स्वरूप उसके भावसेन नामक सुन्दर पुत्र हुआ। राजा प्रभासेन तपस्या कर उसीभव से मोक्ष गया तथा पुत्र भावसेन ने भी सम्मेद शिखर का अचिन्त्य महात्म्य जान ८४ लाख भव्य जीवों के साथ सम्मेद शिखर की यात्रा की और अंत में स्वर्णभद्र टोंक पर दीक्षा ले तप किया और थोड़े ही दिनों में कमक्षय कर मोक्ष का असीम सुख प्राप्त किया।

हम सभी भी कृतिम सम्मेद शिखर ही सही लेकिन रचना कर असीम पुण्य तो प्राप्त कर ही लिया। हम यही सोचे की हम साक्षात् भगवान पार्श्वनाथ की स्वर्णभद्र टोंक पर भगवान की पूजा भक्ति कर लाडू चढ़ा रहे हैं।

बन्धुओ! आज भगवान पार्श्वनाथ का २८६७वाँ निर्वाण महोत्सव हम सभी बड़े ही धूम-धाम से मना रहे हैं। और भक्ति भाव से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु आपकी समता क्षमा तो जगत में आदर्श बन गई हम भी ऐसी क्षमा और सहनशीलता को प्राप्त कर सकें तथा कर्मों का क्षय कर आपके समान सिद्ध पद को प्राप्त कर सकें तो हम सभी का पूजा भक्ति करना लाडू चढ़ाना वास्तविकता में सार्थक और सफल हो सकेगा।

।। जय बोलिए पार्श्वनाथ भगवान की जय।।

मायाचारी से विश्वास समाप्त होता

संकलन- आ. विदूषीश्री माता जी

एक बार की बात है कि एक नगर में एक ग्वाला (वरेदी) था। वह गायों को रोज चराने जंगल में ले जाता था। वह सरल, सदाचारी, भद्र परिणामी था तथा अच्छी तरह गायों का पालन-पोषण करता था। उसमें बहुत सारी अच्छाईयाँ थी लेकिन एक दुर्गुण था कि वह हमेशा धोखा करता था, वह गायों को पहाड़ पर ले जाता और पहाड़ की ऊँची चोटी पर पहुँच कर वहाँ से आवाज लगाता था कि- अरे भैया! दौड़ों-दौड़ों भालू आया है, गायों को पकड़ कर के ले जा रहा है, खत्म कर रहा आदि-आदि अनेक प्रकार की बात करता था। जिससे गाँव के लोग उसके पास बचाने के उद्देश्य से आ जाते थे और लोगों के पास आने पर वह कहता कि अरे! कोई नहीं आया और ठहाका लगा कर हँसने लगता था। कभी-कभी वह झूठ भी बोलने लगता था कि हमने नहीं किसी और ने कहा होगा। इस प्रकार जब बहुत दिन हो गये और लोगों ने देखा कि यह पेरशान करता है तो उस पर सभी का विश्वास समाप्त हो गया और धीरे-धीरे वह आवाज लगाता लेकिन कोई भी गाँव का व्यक्ति नहीं आता। इसी बीच एक घटना घट गई कि वह गायों को लेकर जंगल पहुँचा। और उसके पास भालू आ गया तथा वह गायों को पकड़ कर ले गया। तब उसने सुरक्षा के लिये आवाज लगाई पर कोई भी व्यक्ति उसके पास नहीं पहुँचा और भालू ने उसे घायल कर दिया। आक्रमण करने के बाद गाँव के लोगों को पता चला तो वे सभी वहाँ पहुंचे। तब उसने कहा- आप सभी मेरे कैसे भैया हो, कैसे पड़ोसी, रिश्तेदार हो कि मेरे आवाज लगाने पर भी आप कोई भी नहीं दौड़े? और वह सभी को उलाहना देता है। तब पड़ोसी कहते हैं कि- भैया, हम सभी दौड़ आते, अगर तुम किसी के साथ छल करके अपना विश्वास समाप्त नहीं करते क्योंकि छल व मायाचारी करने वाले का विश्वास समाप्त हो जाता है। विश्वासहीन जीवन, जीवन को बिगाड़ देता है।

वात्सल्य को आत्मसात करने का पर्व है- रक्षाबंधन

प्रवचन- प.पू. युगप्रमुख श्रमणाचार्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी गुरुदेव

बन्धुओ! आज रक्षाबंधन पर्व का दिन है। हमारे पुराने इतिहास की ओर लौटने का दिन है। पुराने आचार्यों को स्मरण करने का दिन है उनके तप और त्याग की महिमा को जानने का दिन है। केवल भाई-बहिनों में राखी बांधने का नहीं सत्य यह है कि राखी से बढ़कर गुरुओं की उपासना का दिन है। संतों की आराधना का दिन है। वात्सल्य की परिभाषा कहने का नहीं उसे साकार रूप में जानने पहचानने का दिन है।

आप सभी को मालूम है कि आज रक्षा बंधन है। दिगम्बर जैन इतिहास में रक्षा बंधन पर्व का साक्षी २०वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ का शासन काल रहा। उस समय उज्जैनी नगरी में रारा श्री वर्मा राज्य करते थे। उनके चार मंत्री थे। (१) बलि (२) प्रहलाद (३) वृहस्पति (४) नमुचि। चारों में बलि नामक मंत्री प्रधान था। राजा श्रद्धालु जिनेन्द्र भक्त परम धर्मात्मा थे किन्तु चारों मंत्री धर्म से प्रतिकूल थे। योगायोग उसी उज्जैनी नगरी में एक दिन विहार करते हुए अकंपनाचार्य आदि ७०० मुनिराजों का संघ उपस्थित हुआ। क्या वह मनोरम दृश्य होगा कि जिस समय ७०० मुनिराज का एक साथ आगमन हुआ होगा।

आज हम सभी सौ-दौ सौ साधुओं के समूह को देखते है तो मन आल्हादित हो उठता है। हम लोगों के संघ में लगभग ५वर्ष के अंतराल में युगप्रतिक्रमण यतिसम्मेलन होता है जिसमें लगभग २०० पिच्छी धारी साधुक उपस्थित होते हैं। केवल उस साधु समूह को एक साथ देखने के लिए व्यक्ति दौड़े-दौड़े आते हैं। कई ऐसे भक्त लोग हैं जिन्होंने वर्ष में १०८ पिच्छियों के दर्शन करने के संकल्प लिये हैं और उन्हें काफी दूर-दूर संतों के दर्शन करने जाना होता है। २०१८ में सम्मेद शिखर जी में हमारे संघ की ९० एवं अन्य संघों को मिलकर १०८ पिच्छियाँ थी। वहाँ दर्शन करने वाले गद्गद हो जाते थे। ओहो! सिद्धक्षेत्र पद ऐसा मनोरम दृश्य, कई लोग तो कहने लगते थे कि ऐसा लग रहा है मानों हम चतुर्थकाल का ही दृश्य देख रहे हों।

फिर जहाँ ७०० साधुओं का संघ एक साथ हो तो उन्हें देखकर कितना आनंद आता होगा। लोग कहते है इतनी पिच्छियाँ एक साथ आ जायेगी तो चौका कौन लगायेगा। प्राय: करके लोगों को चौके की बड़ी चिंता हो जाती है। अगर हम किसी से कहते हैं दीक्षा ले लीजिए तो कुछ लोग कहते हैं यदि सभी दीक्षा ले लेगें तो आहार कौन देगा। मैंने कहा- आहार के लिए कोई महाराज नहीं बनता है उनका पुण्य, उनका भाग्य उनके साथ चलता है। मुनि, साधुजन वीतरागी होते हैं वे चौके और व्यवस्थाओं के पीछे नहीं जाते बल्कि उनका पुण्य उनका भाग्य ही उनकी सारी व्यवस्था बना लेता है।

यदि साधु का पुण्य है तो जंगल में भी मंगल हो सकता है और यदि पुण्य नहीं है तो सब कुछ सुविधा है में भी व्यवधान आ सकता है। अंतराय आ जाता है, आहार नहीं हो पाये अब ये किसी के हाथ की बात नहीं है। अपने-अपने पुण्य और पाप का ही खेल है।

बन्धुओ! वहाँ अकंपनाचार्य महाराज का विशाल संघ आया वे सभी साधक आत्मध्यान के अच्छे अभ्यासी थे। आचार्य अकंपनाचार्य भी ज्ञानी थे, दूर दृष्टा थे। उन्होंने अपने ज्ञान से यह अहसास कर लिया कि संघ के ऊपर कोई न कोई संकट आने वाला है। ध्यान रखिये स्वाध्याय की बेला में परसों मैंने बताया था कि वैय्यावृत्ति के भेद में आचार्य का प्रथम स्थान रखा गया है वह इसलिए रखा है कि वे संपूर्ण संघ के नायक होते हैं, धर्म देशना देते हैं, हर प्राणी को कल्याणकारी मार्ग दर्शन देते हैं इसलिए उनको प्रधान स्थान पर रखा है। संघ में जितने भी साधक साधना करते हैं, जो भी आराधना, उपासना, भक्ति करते हैं उसके अनुसार संघ नायक आचार्य के पुण्य का प्रतिशत बढ़ता जाता है ऐसी उनकी गरिमा, महिमा

होती है इसलिए उनकी आत्मविशुद्धि भी विशेष रहती है और वही आत्म विशुद्धि उन्हें भविष्य में घटने वाली घटना का अहसास करा देती है।

परम पूज्य गुरुदेव विमलसागर जी महाराज को मैंने निकट से देखा वे व्यक्ति को देखते ही उसके आगे, पीछे की बाते बतला देते थे। आने वाले संकटों को बतला देते थे। कितने सारे ऐसे भक्त हैं जिन्होंने जाने की आज्ञा मांगी तो महाराज ने कहा- आज नहीं जाना, बोले- महाराज टिकिट बन चुकी है, आज तक की ही छुटियाँ थी आज तो जाना ही है महाराज ने बोला- नहीं, आज नहीं जाना है और वे महाराज की बात मान गये, पता चला बहुत बड़ा संकट टल गया। कई ऐसे भी लोग रहे जिन्होंने बात नहीं मानी तो पता चला ऐक्सीडेंट हो गया। किसी के हाथ टूटे, किसी के पाँव टूटे और वे लौटकर पू. आचार्य श्री के पास आये, क्षमा मांगी कि गुरुदेव क्षमा करो यदि आपकी आज्ञा हम मान जाते तो ऐसी दशा नहीं होती।

बन्धुओ! कहने का तात्पर्य बस यह है कि आचार्यों की जो विशुद्धि होती है वह बहुत सारी उपलब्धियों प्रदान करती है। आचार्य श्री अकंपनाचार्य ने अपने सभी शिष्यों को आदेश दिया आज सभी साधक ध्यानस्थ रहेंगे किसी को आंखे खोलने और आशीर्वाद देने की आवश्यकता नहीं है। किसी को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में जो विनय से युक्त होकर गुरु वचनों का पालन करते हैं उसमें श्रद्धा रखते हैं वे ही सच्चे और प्रशंसनीय शिष्य माने जाते हैं। गुरु के वचनों में बड़ा रहस्य होता है। गुरु के वचन न तर्क के विषय होते हैं न किसी शर्त के विषय होते हैं अपितु इनसे परे गुरु के वचन आत्म विशुद्धि से निकले हुए होते हैं इसलिए हर प्राणी के कल्याणकारी होते हैं। जो गुरु आज्ञा का पालन करता है वही शिष्य, शिष्यत्वता को प्राप्त है जो आज्ञा पालन नहीं करता वह शिष्य नहीं कुपुत्र की तरह है।

आचार्य अकंपनाचार्य ने जैसे ही आज्ञा दी सभी शिष्यों ने ध्यान से उसे सुनकर शिरोधार्य किया। सभी शिष्य आसन लगाकर ध्यानस्थ हो गये मूर्ति की तरह उनकी वीतराग ध्यानस्थ मुद्रा बड़ी ही मोहनीय प्रतीत हो रही थी।

उसी समय वन माली ने जब वन की शोभा देखी कि सभी ऋतुओं के फल-फूल साथ फूल रहे हैं। सूखे कुएँ, बावड़ी जल से भर गई हैं उसे बड़ा आश्चर्य हुआ तभी उसे मुनिसंघ के दर्शन हुए। वह भक्ति-भाव से दर्शन कर समझ गया इन्हीं संतों के प्रभाव से वन अपरिमित शोभा युक्त हो रहा है। वह छहों ऋतुओं के फल फूल ले राजा के पास पहुँचा और कहा- हे राजन! लगता है आज हम सभी के पूर्व जन्म का पुण्य फल एक साथ उदय में आया है जिससे हमारे उपवन में अकंपनाचार्य आदि ७०० मुनिराजों के संघ का आगमन हुआ हैं। उन्हीं की साधना का एक ऐसा प्रभाव है कि छहों ऋतुओं के फल फूल एक साथ आपके सामने उपस्थित हैं। हे राजन! आप एक बार जरूर पधारें वहाँ की छटा ही अपने आप में निराली है। राजा वनमालीक की बात सुन प्रसन्नचित्त हो गया तुरन्त मंत्री को बुलाकर राजा ने आज्ञा दी मंत्रीवर सारे नगर में घोषणा की जाये, आज संपूर्ण प्रजाजनों को उपवन में पधारे निग्रन्थ दिगम्बर योगीराज के दर्शनार्थ चलना है। लेकिन राजा की आज्ञा सुनकर चारों मंत्रियों के चेहरों पर उदासीनता छा गई।

बन्धुओ! अगर अपने आराध्य देव, शास्त्र, गुरु की कोई बात आये और हमारे मन में उदासीनता छा जाए तो समझ लीजिए श्रद्धा में कोई न कोई कमी है। और यदि आनंद प्रसन्नता से मन भर जाए तो समझ लीजिए वह व्यक्ति श्रद्धावान सम्यग्दृष्टि है। सम्यग्दृष्टि के अंदर देव, शास्त्र, गुरु की बात सुनते ही प्रसन्नता आ जाती है। राजा तो सम्यग्दृष्टि था उसका हृदय तो प्रसन्नता से भरा था। किन्तु मंत्रीगण मिथ्यादृष्टि थे उनका मन नहीं था कि राजा मुनिराजों के दर्शनार्थ जाये किन्तु राजा जा रहे हैं तो मंत्रियों को भी साथ में जाना पड़ा। राजा ने उपवन में पहुँच कर एक-एक मुनिराज की वंदना की लेकिन किन्हीं भी मुनिराज ने न तो आँखे ही खोली न आशीर्वाद दिया। चारों मंत्री मुनियों को इस तरह ध्यानालीन देख कर लौटते समय राजा से कहते हैं महाराज लगता है यह सात सौ की संख्या जरूर है लेकिन सभी मूर्ख हैं। किसी को ज्ञान नहीं है। शास्त्रों का अभ्यास नहीं है। किसी को ये नहीं ज्ञात हुआ कि राजा आ रहे हैं तो राजा के आने पर किस तरह खुशी प्रकट

करना चाहिए। स्वागत सम्मान कराना चाहिए कम से कम प्रसन्नता भरी निगाहों से देख लेते। हाथ ऊपर उठाकर आशीर्वाद दे देते इतना भी नहीं कर पाये, कैसे ये साधु थे।

बन्धुओ! नास्तिक प्राणी की भाषा ही उसका परिचय दे देती है और अस्तिक्य प्राणी की भाषा आस्तिक्य की तरह शिष्ट रूप में अपना परिचय दे देती है। राजा ने कहा- हे मंत्रीगण! तुमने ये सब देखा लेकिन यह नहीं देखा कि वे कितने वीतरागी थे। कितने ध्यान साधना में लीन थे उन्होंने आत्म साधना से बढ़कर किसी भी कार्य को प्रधानता नहीं दी। उनकी दृष्टि में राजा, रंक सभी समान हैं। इस प्रकार की चर्चा राजा और मंत्रियों में चल ही रही थी इतने में ही सामने से श्रुतसागर मुनिराज आते हुए दिखे, जो कि आहार करके लौटने में लेट हो गये थे। उन्हें गुरु की आज्ञा का पता नहीं था। उन्हें देखते ही मंत्रियों ने कहा- राजन् देखो एक और तक्र पीतो अगं अर्थात ये एक और मुनि छाछ पीकर आ रहा है। ये वाक्य श्रुतसागर मुनिराज ने भी सुन लिये वे बड़े विद्वान थे उन्होंने मंत्रियों के भावों को समझ लिया और उत्तर देना उचित समझ कहा- हे मंत्रियों! छाछ पीला नहीं सफेद होता है।

व्याकरण में एक सूत्र है शब्दानामनेकार्य: शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। पीतो का अर्थ पीकर आना भी है और पीतो का अर्थ पीला भी है। अब अर्थ कर्ता पर निर्भर है वह किस रूप में अर्थ करना चाहता है। चूंकि महाराज को उन्हें समाधान देना था। उनके अभिमान को चूर करना था इसलिए उन्होंने कहा- छाछ पीला नहीं सफेद होता है। जिसकी दृष्टि में पीलिया रोग हो जाता है उसे सफेद छाछ भी पीली दिखती है। हे राजन्! लगता है आपके मंत्रियों को पीलिया रोग हो गया है जिससे उन्हें सफेद छाछ भी पीली दिख रही है अर्थात् एक निर्ग्रन्थ दिगम्बर ज्ञानी मुनिराज भी इन्हें मूर्ख दिख रहे हैं।

समयसार ग्रंथ में कहा है रत्नत्रयधारी तीन गुप्ति से सहित मुनिराज ज्ञानी हैं। महाराज की बात सुनकर मंत्री भड़क उठे और शास्त्रार्थ प्रारंभ हो गया मुनिराज ने चारों मंत्रियों को निरूत्तरित कर दिया। उन चारों के चेहरे नीचे हो गये। राजा वहाँ से आगे बड़ा और कहता है धन्य है ऐसे संघ को जिसमें एक-एक मुनिराज इतने विद्वान हैं तो सारा संघ कितना ज्ञानी होगा। काश! यदि बात करते होते तो हमें कितना कल्याणकारी उपदेश मिलता। मंत्रियों तुम संतों के ज्ञान को नहीं समझते हो।

इधर चारों मंत्रियों में तो पराभव की आग धधक रही थी वे सोचते हैं इस अपमान का बदला तो हम लेकर रहेंगे। जो होना हो जायेगा। आवेग, कषाय, बैर कुछ ऐसे कारण होते हैं जो व्यक्ति के विवेक को शून्य कर देते हैं और विवेक विहीन व्यक्ति के अंदर में कर्तव्य अकर्तव्य की बुद्धि समाप्त हो जाती है।

चारों मंत्रियों ने निर्णय किया कि आज रात्रि में हम चारों उपवन में जाकर सभी साधुओं की गर्दन अपनी तलवार से अलग कर देगे। एक को भी नहीं छोड़ेंगे इस साधु संतों के कारण अपना पराभव हुआ है। राजा की दृष्टि में हम लोग गिर गये, ऐसा विचार कर रहे थे। उधर श्रुतसागर जी महाराज बड़े हर्ष के साथ अपने गुरुदेव के चरणों में पहुँचे और कहा- हे गुरुदेव! आज मैं आहार करके जिस रास्ते से आ रहा था उसी से चारों मंत्रियों सहित राजा जाते हुए दिखे। मंत्रियों की भाषा संघ की भक्ति के प्रतिकूल झलक रही थी। इसलिए उत्तर देना मैं उचित समझा और उन सभी को निरुत्तरित करके आया हूँ।

बन्धुओ! श्रुत सागर जी बात बता ही रहे थे कि अकंपनाचार्य ने कहा- शांत हो जाओ तुमने ये जो कुछ भी किया अच्छा नहीं किया। अरे! हमने उन्हें निरुत्ररित, पराजित किया और आप कह रहे हैं अच्छा नहीं किया। आज के समय के शिष्य तो पता नहीं क्या-क्या सोचने लग जाए, लेकिन श्रुतसागर बहुत धैर्यशील शिष्य थे। गम्भीर और गुरुभक्त ये। उन्होंने कहा- गुरुदेव आप क्या कह रहे है? हाँ, तुमने तो संघ के ऊपर घनघोर उपसर्ग को ही मानो आमंत्रण दे दिया। गुरुदेव! मुझसे ऐसा हो गया? हाँ, श्रुतसागर मुनिराज की आंखे भर गई, उन्होंने कहा- भगवन् अब ऐसा कुछ उपाय बताईये जिससे ये अनहोनी घटना न घट सके। अकंपनाचार्य ने कहा- आज जहाँ तुमने मंत्रियों के सथ शास्त्रार्थ किया था उसी स्थान पर जाकर प्रतिमायोग में रात्रि व्यतीत करना है। गुरु आज्ञा पाते ही श्रुतसागर जी महाराज उसी स्थान पर आकर प्रतिमायोग से ध्यान साधना में लीन हो गये।

वहाँ रात्रि का समय होते ही चारों मंत्री बन की ओर निकले रास्ते में जैसे ही उनकी दृष्टि श्रुतसागर जी पर पड़ी तो उनका क्रोध और भड़क गया। ओह! वही है जिसने सबसे पहले राजा के समीप हमारा पराभव किया था। अब पहले इसी का काम तमाम करने के बाद हम आगे कदम बढ़ायेंगे। बात करते-करते चारों ने म्यान से तलवार निकाल ली लेकिन अब पहले प्रहार कौन करे यह चर्चा खड़ी हो गई। चारों मंत्री विद्वान थे उन्हें यह ज्ञान था कि यति हत्या एक ऐसा महापाप है जिसका कोई प्रायश्चित नहीं होता। अंत में निर्णय लिया कि हम चारों ही एक साथ प्रहार करेंगे। जैसे ही उन वीतराग चर्या के धनी, निर्ग्रन्थ मुनि, समता की प्रतिमूर्ति, जो छोटे से छोटे प्राणी की रक्षा करते हैं उनके ऊपर चारों मंत्रियों ने एक साथ तलवार उभारी, बन्धुओ! अपने में लीन रहने वाले इन महान साधु संतों को मारने सताने एवं दु:ख देने की भावना करने वाला व्यक्ति असानी से न धुलने वाले वज्र के समान कठोर महापाप का बंध कर लेते हैं अज्ञानता में उन्हें कुछ भी भाव नहीं रहता किन्तु उसका फल मिलने पर वे ही गिड़गिड़ाते हैं। चीखते-चिल्लाते हैं फिर कोई उनकी रक्षा करने में समर्थ नहीं होता।

दिगम्बर संत दिखते जरूर अकेले हैं किन्तु उनकी रक्षा में उनका भाग्य और उनकी साधना से प्रभावित हुए अनेकों देविक शक्तियाँ रहती हैं। अहिंसा, संयम और तप जिनके अंदर रहता है उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं। ध्यान रखिये यद्यपि वीतरागता का पथ उपसर्ग परिसह का प्रतिकार करने का नहीं उसे स्वीकार करने का होता है वे सब समता से सहन करते हैं यही कारण है हर देव, मनुष्य उनकी समता से प्रभावित हो जाते हैं। सत्य की विजय सहीं से प्रारंभ हो जाती है।

तलवार उभारने वाले उन चारों मंत्रियों को वहाँ के रक्षक देव ने कील दिया। प्रात: होने पर नगर वासियों ने यह दृश्य देखा चर्चा सुन राजा भी वहाँ उपस्थित हुआ उसे बड़ा दुख हुआ कि हमारे राज्य में ऐसे मंत्री जो एक दिगम्बर संत पर उपसर्ग करें इनका राज्य में रहना ठीक नहीं हैं काला मुख करके उन्हें राज्य से निकाल दिया गया।

कालान्तर में ऐही चारों मंत्री यहाँ से तिस्कृत होकर हस्तिनापुर पहुँचे और अपनी बुद्धि चातुर्य से वहाँ के राजा को प्रभावित कर वहाँ के मंत्री बन गये। योग ऐसा रहा कि अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनिराज भी विहार करते हुए हस्तिनापुर पहुँचे गये।

जिस समय मंत्रियों ने अल्पवयी राजा पद्म के शत्रु सिंहवल को बंधी बनाया था उस वक्त खुश होकर राजा पद्म ने इन चारों मंत्रियों से वरदान मांगने की बात कहीं उस समय मंत्रियों ने कहा- राजन् हमारे वरदान को अपने खजाने में सुरक्षित रख लीजिए हमें जब आवश्यकता होगी तब मांगेंगे राजा ने भी ज्यादा सोच-विचार न कर तथास्तु कह स्वीकृति दे दी। ये वे ही राजा पद्म है जो की राजा महापदम के छोटे पुत्र और विष्णुकुमार मुनिराज के छोटे भाई थे। पिता एवं बड़े पुत्र दोनों को एक साथ वैराग्य हुआ। अत: राज्य छोटे बेटे पद्म को दिया गया था। छोटी अवस्था देख आस-पास के राजा इन्हें परेशान करते थे जिन्हें मंत्रियों ने जीत लिया था।

अकंपनाचार्य का संघ आया सुन उन मंत्रियों का खून खौल गया। उन्होंने सोचा अब ये हमारी पुरानी बाते खोलकर हमें यहाँ से भी निकलवा देंगे। अत: अब हम ऐसी युक्ति करें जिससे इनका काम तमाम हो जाये।

कहा जाता है कुत्ते की पूछ को १२ वर्ष तक भी कुंभरी में डालो लेकिन जब निकालोंगे तब वह टेड़ी ही निकलेगी। कितनी भी समस्या को व्यक्ति सहन करता जाता है फिर भी अपना टेड़ा स्वभाव नीं छोड़ पाता। चारों मंत्रियों ने राजा से अपना रखा हुआ वरदान देने की प्रार्थना की। राजा को मुनि आगमन की कोई सूचा न थी फिर भी उसने कहा- आज अचानक वरदान मांग रहे हो मंत्रियों ने कहा- हाँ आज ही उसकी आवश्यकता है। राजा ने कहा- मांग लीजिए उन्होंने सात दिन का राज्य मांगा राजा ने भी उन्हें सात दिन का राज्य वचन पूर्वक दे दिया और सिंहासन पर उन्हें बैठाकर स्वयं रनवान में चला गया।

राज्य गद्दी पाते ही मंत्रियों ने आदेश दिया जहाँ सात सौ मुनि बैंठे हैं उसके चारों ओर बेड़ा बनाकर लकड़ी आदि

नगर का कचरा कूड़ा डलवाकर आग लगवा दी जाये और नरमेघ यज्ञ का शुभारंभ किया जाये। हालाकि नरमेघ यज्ञ ऐसा नहीं होता। सभी ने प्रश्न खड़े तो किये लेकिन उन मंत्रियों के प्रकोप के सामने किसी की एक भी न चली अनेकों भक्तों की आंखों में अश्रुधारा बहती रही लेकिन वे कुछ कर नहीं सके।

शाम को यज्ञ प्रारंभ हुआ उसी रात्रि में बहुत दूर एक पर्वत पर सागर सेन नाम के आचार्य महाराज अपनी साधना कर रहे थे अचानक उनकी दृष्टि आकाश में पहुँची तो उन्हें श्रवण नक्षत्र दिखा। श्रावण माह में ही इस नक्षत्र का प्रभुखता से उदय रहता है इसी के कारण इस माह का नाम श्रावण माह पड़ा। श्रवण नक्षत्र उन्हें कांपता हुआ दिखा। वे आचार्य ज्योतिष के ज्ञाता एवं अनेक विद्याओं में पारंगत थे। उन्होंने अपने ज्ञान से समझ लिया ओहो! मुनियों के ऊपर घनघोर संकट ऐसा सोचते ही उनके मुख से रात्रि में ही चीख निकल पड़ी उसे सुन पास में बैठै क्षुल्लक जी उठकर खड़े हो गये। वे क्षुल्लक जी पूर्व में विद्याधर थे। अत: उन्होंने पूर्ण विद्या का त्याग न कर क्षुल्लक दीक्षा ली थी। तक्षण वे गुरु के पास पहुँचे और विस्मय करते हुए चीख का कारण पूछा-सागर सेन आचार्य ने उन्हें मुनियों के ऊपर उपसर्ग को ज्ञात कराया और कहा- इस उपसर्ग को विष्णुकुमार मुनिराज ही दूर कर सकते हैं क्योंकि उन्हें विक्रिया ऋद्धि उत्पन्न हुई है। शब्द सुनते ही आज्ञा ले क्षुल्लक जी धरणीधर पर्वत पर जा पहुँचे जहाँ विष्णुकुमार मुनिराज तपस्या कर रहे थे। उनकी साधना आज के साधकों के लिए बहुत बड़ी शिक्षा है कि चमत्कार के लिये नहीं दौड़े, निर्दोष चर्या, आत्म विशुद्धि में लीनता रखो सिद्धियाँ तुम्हें स्वयं हो जायेंगी। पूज्य गुरुदेव विमलसागर जी महाराज कहते थे निर्ग्रन्थ संतों को बिना सिद्ध किये ही सिद्धियाँ हो जाती हैं। मूलाचार में आचार्य कुन्दकुन्द देव लिखते हैं आचार्यों की प्रसन्नता से साधकों को ऋद्धि-सिद्धि स्वयमेव ही सिद्ध हो जाती हैं।

क्षुल्लक जी ने ध्यान में लीन विष्णुकुमार मुनिराज के चरणों में नमोस्तु कर साधुओं पर आये उपसर्ग को दूर करने की प्रार्थना की। साधुओं पर उपसर्ग शब्द सुनते ही उन्होंने ध्यान विसर्जित कर पूछा- क्या? कहाँ उपसर्ग हो रहा है? क्षुल्लक जी ने सारी बात बताते हुए कहा- गुरु ने कहा है इसे आप ही दूर कर सकते हो क्योंकि आपको विक्रिया ऋद्धि सिद्धि है। धन्य हैं वे वीतरागी संत जो सिद्धियों के देवता बनकर भी सिद्धियों से अपरिचित थे। उन्हें मालूम ही नहीं था कि मुझे कोई विद्या सिद्ध हुई हैं। निश्चित ही जो सिद्ध बनने की साधना में संलग्न हैं उन्हें लौकिक सिद्धियों से क्या प्रयोजन है। उपलब्धि भीड़ बढ़ाने से नहीं चर्या और साधना बढ़ाने से प्राप्त होती है।

विष्णुकुमार ने ऋद्धि की परीक्षा के लिए अपना हाथ फैलाया तो सुमेरु पर्वत तक वह फैलता गया जिससे उन्हें विश्वास हो गया साथ ही सागरसेन आचार्य का शब्द अन्यथा नहीं हो सकता। उन्होंने कहा है रक्षा हमारे द्वारा होगी तो निश्चित ही होगी। और मैं जरूर उपसर्ग दूर करूँगा। वे तुरंत हस्तिनापुर पहुँचे, राजा पद्म से उन्होंने कहा- सदैव मुनियों की सेवा भक्ति में तत्पर रहने वाले इस राज्य में तुमने कुल कलंकित करने वाला उपगर्स कैसे प्रारंभ किया है। पद्म राजा के आँखों से अशुधारा बह रही थी उन्होंने कहा- गुरुदेव सत्य राजा का प्राण होता है ऐसा हमारे पिता ने सिखाया था मैं वचनों से बंधा हूँ। अत: कुछ भी नहीं कर सकता अब आप ही कोई उपाय बतायें। विष्णुकुमार मुनिराज के पास इतना समय ही कहाँ था, वे पूरी बात सुने बिना ही सुने तुरंत यज्ञ भूमि में पहुँचे, जहाँ चारों मंत्रीगण यज्ञ की तैयारी कर रहे थे। मुनिराजों के चारों ओर अग्नि प्रज्जवलित हो चुकी थी।

धन्य हैं विष्णुकुमार का वात्यल्य, एक साधक दूसरे साधक की रक्षा के लिए इतना बड़ा निर्णय करले संभवत: यह शब्द आज के समय में कान खड़े कर देता है। मुझे नहीं लगता है आज के समय में कोई ऐसा निर्णय ले सके। जैसा कि विष्णुकुमार ने लिया। उन्होंने अपनी विद्या से वामन अंगुल के ब्राह्मण का रूप धारण किया वेदपाठी, मंत्रोच्चारण करते हुए वे यज्ञभूमि की ओर बढ़े। हिन्दू साहित्य में कहा जाता है वामन अंगुल का ब्राह्मण यदि यज्ञ में आ जाये तो सर्वश्रेष्ठ होता

है। चारों मंत्रियों ने देखते ही उनका स्वागत किया और यज्ञ प्रारंभ करने की प्रार्थना की। विप्र ने कहा- काम करके दक्षिणा लेने वाले विप्र बहुत मिलेंगे ये विप्र तो पहिले दक्षिणा लेता है पहिले मुझे दक्षिणा दीजिए। मंत्रियों ने उसकी बात सुन कहा- क्या तुझे विश्वास नहीं है कि मैं दक्षिणा दूँगा। विप्र ने कहा- विश्वास किस पर रखा जा सकता है ? आप तो वचन दीजिए कि जो मैं मांगूगा वह आप देंगे। तभी मैं आगे का कार्य करूँगा। बलिमंत्री ने कहा- ठीक है मैं जलाञ्जलि पूर्वक तुम्हें वचन देता हूँ तुम्हें मुखमांगा वरदान दूँगा। विप्र ने वरदान में तीन कदम जमीन माँगी जिसे सुनते ही चारों मंत्री हँसते हुए बोले- लगता है जैसा तुम्हारा शरीर है बुद्धि भी वैसी ही है तू अपने पैर तो देखले। विप्र ने कहा- राजन् तुम मेरे पैर नहीं देखो वचन देखों अपना वचन पूरा करो। राजा ने कहा- तू माप ले जहाँ से मापना चाहता है। विप्र ने अपना शरीर सुमेरु पर्वत के बराबर बना लिया एक कदम में सुमेरु पर्वत और दूसरे पैर में मानुसोत्तर पर्वत तक संपूर्ण लोक माप लिया अब तीसरा पैर कहाँ रखें बताओ। मंत्रियों के पास तो कोई उत्तर नहीं था वे कांपने लगे, किंकर्तव्य विमूढ़ राजा ने कहाँ- मेरी पीठ पर रख दो उन्होंने आवेग में जैसे ही वह पैर रखना चाहा वैसे ही आकाश से आवाज गूँज उठी रक्षाम् देही, रक्षाम् देही, रक्षाम् देही मंत्रीगण उनके चरणों में पड़ गये उपसर्ग दूर हो गया दुखों के बादल छट गये सभी में हर्ष खुशी छा गई। विष्णुकुमार की जय-जयकार गूँजने लगी। उन्होंने मुनियों की रक्षा कर पुन: दीक्षा धारण की और साधना कर निर्वाण प्राप्त किया। कहने का तात्पर्य वस इतना है कि आज वे चार मंत्री कोई और नहीं हमारे अंदर के क्रोध, मान, माया और लोभ है। विष्णुकुमार हमारा विवेक, श्रद्धा और आस्था हैं अत: हम सदैव ध्यान रखें कि यदि किसी साधु की प्रशंसा न कर सकें तो बुराई कभी नहीं करेंगे। बुराई साधु की नहीं धर्म की होती है। नाम से कोई किसी को नहीं पहचानता, कहने में यही आता है जैन साधु, जैन मुनि। एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है सारे व्यक्तियों के ऊपर अंगुली उठने लगती है। सबसे ज्यादा चर्चा का विषय बाहर के नहीं घर के लोग बनाते है। बाहर के लोग कम करते हैं अपने लोग ज्यादा सोच विचार करते हैं। चार लोगों को सुनाते हैं। जबकि हमारे शास्त्र कहते हैं यदि आपको किसी के अंदर कमी दिखती है तो चर्चा का विषय नहीं बनायें लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि किसी की गल्ति को छिपाते रहें, दबाते रहे ऐसा जैनशास्त्र कभी नहीं कहता, आप उपगूहन के साथ उसका स्थिति करण भी करें।

आज का युग कितना बदल गया है आज लोग आमने-सामने चर्चा कम करते हैं पत्र-पत्रिका, टी.वी.चेनल, मोबाइल से ज्यादा प्रचार करते हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है प्याज के छिलके की तरह बातें तो होती रहती हैं लेकिन उसमें निकलता कुछ नहीं है फिर लगता है कि फिजूल में धर्म की बदनामी हुई, अच्छा होता यदि बात सीमा में रहती। मैं ये नहीं कहता हूँ किसी की गल्ति, अपराध की पुष्टि कीजिए, नहीं उसकी कभी पुष्ठि नहीं होना चाहिए बल्कि उसे दूर करने का तरीका होना चाहिए। उसे समझाने का प्रयास कीजिए। कितने ऐसे लोग होते हैं जो बाहर तो चर्चा करते रहते हैं लेकिन जिसकी चर्चा कर रहे हैं उसके पास तक एक बार भी नहीं पहुँच पाते जबकि आपका कर्तव्य था आप उनके पास जाकर समझायें फिर भी न माने तो उनके गुरु के पास ले जाईए और जब वो भी न सुनें तो फिर सार्वजनिक निर्णय लेना चाहिए। यदि वास्तविक अपराध है तो उस पर ब्रेक लगाना चाहिए अन्यथा वह भविष्य में विकराल रूप ले लेगा। अत: आवश्यकता है हमारा तरीका सही हो तरीका के अभाव में मात्र धर्म की बदनामी ही हाथ लगती है जिस धर्म के विषय में गर्व से कहा जाता है कि यदि त्याग-तपस्या और वास्तविक धर्म देखना है तो जैन संतों में देखिये। लेकिन वे ही लोग जब टी.वी. चैनलों में ऐसी विपरीत बातें सुनते हैं तो उनकी श्रद्ध भी समाप्त हो जाती है। अत: हम ऐसा संकल्प लें कि कभी अपने द्वारा धर्म की धर्मात्मा की अप्रभावना नहीं करेंगे।

आज का यह रक्षा बंधन पर्व हमारे लिए यही संदेश लेकर आया है हम वात्सल्य भाव को स्वयं भी अपनायें और जन-जन में प्रेम वात्सल्य के बीज बोयें तभी यह रक्षा बंधन पर्व सफल और सार्थक हो सकेगा।

।। जय बोलिए श्रेयांसनाथ भगवान की जय।।

स्वतंत्रता दिवस सार्थक होगा

प्रवचन- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

जिस देश में हम लोग रहते है इस देश का पुराना नाम अजनाभ वर्ष था। वह इसलिए पड़ा क्योंकि भगवान आदिनाथ स्वामी के पिता का नाम नाभिराय था। उनके हाथ घुटनों तक लम्बे थे इसलिए उन्हें अजानबाहु भी कहा जाता था। अगर हम अजान बाहु नाभिराय नाम में से कुछ-कुछ अक्षर कम कर दें तो अजनाभ वर्ष नाम बन जायेगा।

कालान्तर में महाराजा नाभिराज के पुत्र प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान हुए और उनके पुत्र भरत चक्रवर्ती हुए, जिन्होंने इस धरा पर अखण्ड साम्राज्य किया। उनके प्रजा पालन काल में सभी इतने संतुष्ट थे कि उन्हीं के नाम से देश का नाम भारत देश पड़ गया।

बन्धुओ! जिस देश में हम रहते हैंक उस देश की गरिमा और सम्मान रखना हमारा कव्य होता है। जो व्यक्ति देश में रहकर भी उसका सम्मान नहीं रख पाता उसे उस देश में रहने का अधिकार नहीं होता है। अत: हम जिस देश, जिन नगर, जिस समाज एवं जिस परिवार में रहे उस परिवार का सम्मान अवश्य रखना चाहिए। जो अपने देश का, अपने नगर एवं अपने घर का सम्मान रखता है वह प्राणी राष्ट्र, देश, समाज, परिवार को गौरवान्वित करने से स्वयं भी गौरवशील होता है। सत्य तो यह है हमारा देश प्रारंभ से सुसंस्कारित ही था स्वाधीन ही था लेकिन बीच की कुछ ऐसी परिस्थिति आई जिसके कारण हमारे देश में पराधिनता आ गई। उस पराधिनता का कारण यह था कि भारत के कतिपय राजागण अपने कर्तव्यों में विमुख होने लगे। प्रजा संरक्षण रहित की तरह कष्ट से समय बिताने लगी, उस समय अन्य देशों ने भारत पर अपनी निगाह अड़ा कर रखी। भारत में जो धन था, संपत्ति थी। जिसके नाम से भारत सोने की चिड़ियाँ के नाम से जाना जाता था। हमारे देश में अन्य देशों की अपेक्षा अधिक सोना था। इस देश में रहने वाले प्राणियों के अंदर प्रेम था, भाईचारा था।

हमारे देश में सुख शांति की वृद्धि का कारण समय-समय पर होने वाले ऋषि, मुनिगण हुए जिन्होंने अपनी देशना से इस धरा-धरती को सींचा था तथा यहाँ के लोगों में प्रेम, करुणा और दया उत्पन्न हुई। अन्य देशों की अपेक्षा आज भी हमारे भारत देश में शांति का प्रतिशत सर्वाधिक हैं यहाँ खुशी, आनंद हैं। इसका सर्वश्रेय एक मात्र यहाँ के ऋषि मुनियों को जाता है। लेकिन देश में जो पराधीनता आई है वह राजाओं के कारण आई है।

भारत को पराधीन बनाने वाली वस्तु शराब थी। शराब पीकर राजागण अपने देश की मर्यादा, संस्कृति भूलते गये और उस समय बाह्य शक्तियों ने अपना राज्य स्थापित करना प्रारंभ किया जिसका परिणाम कि हमारा देश परिपूर्ण रूपेण पराधीन हो गया।

अंग्रेजों के राज्य में देशवासी कष्टमय जीवन व्यतीत करने लगे शिक्षा प्रणाली मंद हो गई क्योंकि अंग्रेजों की धारणा थी कि यदि यहाँ का नागरिक पढ़ा लिखा होगा तो हमारी स्वतंत्रता में व्यवधान उत्पन्न करेगा। अत: वे लोगों को पढ़ने नहीं देते थे।

उस समय पढ़ाई के अभाव में जीने वाले हमारे नगर बासियों से मेहनत तो कराई जाती थी लेकिन मेहनत के अनुसार उन्हें वेतन नहीं दिया जाता था। उनकी मेहनत से जितना वेतन प्राप्त होना चाहिए था उस पर हस्ताक्षर तो करा लिए जाते थे लेकिन देते वक्त आधा ही वेतन देते थे।

पराधीनता की जंजीरों में जकड़े देश को स्वतंत्र कराने के लिए अनेकों जबानों ने संघर्ष किये यहाँ तक की उन्हें अपने प्राण भी न्यौछावर करने पड़े। महात्मा गांधी जैसे देश हितैशियों ने अहिंसा और सत्य के बल से देश को आजाद कराने का संकल्प लिया। उन्होंने विचार किया कि देश को स्वतंत्र कराने का सबसे बड़ा हथियार शिक्षा है अत: उन्होंने ग्राम-ग्राम में

नगर-नगर में स्कूल खुलवाये ताकि हमारे देश की आगामी पीड़ी शिक्षित हो और वे अपने एवं अपने परिवार की रक्षा सुरक्षा का उपाय कर सकें। देश की उन्नति एवं अवनति के पहलुओं को जान सकें। मजदूरी में दिन भर मेहनत करने पर भी ४-५ हजार रूपये वेतन मिलता है जबकि वही व्यक्ति पढ लिखकर यदि शिक्षक की पोस्ट पर पहुँचेगा तो उसे ४०-५० हजार रूपये वेतन मिलेगा जिससे देश की गरीबी भी दूर होगी। आज हमारे देश ने इस विषय में काफी तरक्की की है छोटे-छोटे गाँव तक स्कूल कॉलेज पहुँच चुके हैं इसका मतलब है गांधी जी का स्वप्न साकार हो गया। आज हमारे देश में शिक्षा की कोई कमी नहीं है लेकिन आज वह शिक्षा मात्र व्यवसाय बनती जा रही है। शिक्षा केवल सर्विस के लिए की जाती है। आजीवका का विषय वन रही है यही कारण है कि देश की गरीबी रेखा समाप्त होती जा रही है।

आज हमारे देश में कोई भी गरीब व्यक्ति नहीं है आज का हर मानव लखपति और करोड़पति बन रहा है यहाँ तक कि यहाँ का भिखारी भी लखपति है उसके हाथ में भी मोबाइल तथा घर में टी.वी. लगी मिलती है।

शिखर जी के पहाड़ पर बहुत सारे लोग अपना वर्तन लिए हुए बैठे रहते हैं उनके रहने का घन नहीं दिखता वहाँ मात्र घास की झोपड़ी दिखती है और एक भजन गाते हैं 'सांवलियाँ पारसनाथ शिखर पर भले विराजे जी' दयालु यात्रीगण उन्हें चावल अथवा पैसे दे देते हैं जिससे वे पेटभर भोजन नहीं अपितु व्यसनों की पूर्ति करते हैं। तब लगता है कि देश में पेटभर भोजन न हो इतना गरीब कोई नहीं है लेकिन फिर भी अशांति का स्तर बढ़ रहा है इसका कारण एक मात्र नैतिकता का अभाव है। शिष्टाचार, सदाचार न होने के कारण हर घर में अशांति छाई है।

आज हमारा देश शराब के कारण तहस-नहस हो रहा है घर-परिवार बर्वाद हो रहा है। शराब के नसे में व्यक्ति अण्डे, मांस आदि अपवित्र वस्तुओं का भक्षण करता है। खुले आम बिना डर-भय के जीवों की हिंसा करता है अत: शांति आये भी कैसे?

सुख, शांति, आनंद को पैसों से नहीं खरीदा जा सकता। वह नैतिकता से आयेगी ऐसा भगवान महावीर स्वामी कहते हैं। हमें मांस का, अण्डे और शराब का त्याग करना होगा तब कहीं हमें शांति प्राप्त हो सकेंगी। हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में तो प्रतिदिन प्रगति कर रहा है लेकिन शांति का प्रतिशत घटता जा रहा है। एक वह समय था जब शांति के दूत के रूप में भारत देश को जाना जाता था लेकिन अब वह बात नहीं रही।

आज हम जब किसी बच्चे से उसके पिता, शिक्षक आदि का नाम पूछते हैं तो वे बच्चे डारेक्ट नाम बोलते हैं न श्री, न श्रीमान, आदरणीय कुछ भी नहीं लगाते जिससे यह भी पता नहीं चलता पिता का नाम ले रहे हैं अथवा अपने किसी मित्र का। जब मर्यादा पुरुषोत्तम रामचंद्र जी से उनके पिता का नाम पूछा जाता था तो वे बड़े ही आदर के साथ पूज्यनीय राजाधिराज महा मण्डलेश्वर श्रीमान दशरथ जी और भी न जाने कितने विशेषण जोड़ते थे, तो क्या आप श्री, श्रीमान भी नहीं जोड़ सकते? बन्धुओ! आज नैतिकता की बहुत आवश्यकता है यदि बेटा पिता के नाम में आदरणीय पूज्यनीय शब्दों का प्रयोग करेगा तो माता-पिता क अंतर मन से निकला आशीष उनके जीवन की उन्नति करेगा।

आज स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम लौकिक शिक्षा के साथ यह भी सबक सीखे कि अपने माता-पिता, गुरुजन अथवा बड़े भाई आदि का नाम लें तो उसके पूर्व श्री, श्रीमान और नाम के अंत में जी लगाना प्रारंभ करे दें तो मुझे लगेगा आपका स्वतंत्रता दिवस मनाना सार्थक हो गया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव ने धर्मसभा में उपस्थित स्कूलों के सभी छात्रों को मांस मदिरा एवं अण्डे के त्याग का संकल्प दिया, सभी ने हाथ उठाकर संकल्प ग्रहण किया।

।। जय बोलिए महावीर भगवान की जय।।

बांझ, निसंतान का कारण भ्रूणहत्या

प्रवचन - प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज

भारतीय संस्कृति भ्रूण हत्या की नहीं प्रेम वात्सल्य और स्नेह की रही है। यहाँ पर घर में आने वाले हर मेहमान का स्वागत अतिथि देवो भव: की भावना से किया जाता है फिर चाहे वह बेटी हो अथवा बेटा।

भो भव्यात्माओं हमारे तीर्थंकर भगवान ने बेटों की तरह ही बेटियों को सम्मान दिया है संप्रतिकाल के प्रथम तीर्थेश ऋषभदेव ने भारत, बाहुवली आदि पुत्रों की तरह ही ब्राह्मी-सुन्दरी पुत्रियों को शिक्षा प्रदान की थी। यह भी बड़े आश्चर्य का विषय है कि पुत्रों को दी गई शिक्षा पुत्रों के नाम से भले प्रसिद्ध न हुई हो लेकिन बेटियों की दी गई विद्या आज तक ब्राह्मी-सुन्दरी के नाम से जगत विख्यात है। एक ऐसी बेटियाँ हुई जिन्होंने पिता के सम्मान को बरकरार रखने के खातिर जीवन पर्यन्त का ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार किया था।

इसके अतिरिक्त सीता, द्रौपती, अंजना, सोभा आदि ऐसी महासतियाँ हुई जिन्होंने विषय परिस्थितियों में भी आदर्श जीवन जीकर दोनों कुलों को प्रकाश पुञ्ज बना दिया अर्थात् जगत विख्यात किया।

यह एक ऐसी भूमि है जहाँ शांतला, सुभ्रद्रा जैसी नीतिज्ञ तथा लक्ष्मी बाई जैसी देशभक्त पुत्रियों ने जन्म लिया है अब उसी देश में बेटियों को भ्रूण हत्या की जाये भला इससे घ्रणित कार्य और क्या होगा।

हे माताओं! ममतामयी माँ शब्द को बदनाम मत करो जरा विचार करो यदि तुम्हारी माँ तुम्हें जन्म देने के पूर्व ही खत्मकर देती तो क्या आज तुम और तुम्हारा परिवार संसार में होता? यदि सभी मातायें बेटियों को जन्म देना बंद कर दें तो क्या पिता को एक अच्छी पत्नी, भाई को एक अच्छी बहिन और बच्चों को जन्म दात्ती एक अच्छी माँ मिल पाती? नहीं ना, जब पति को पत्नी, भाई को बहिन और बच्चों को माँ चाहिए तो फिर बेटी क्यों नहीं चाहिए? बेटियाँ की भ्रूण हत्या क्यों की जाती है। भ्रूण हत्या करने वाली माँ, माँ नहीं शूकरी, कूकरी और नागिन कहलाने की पात्र है जो बच्चों को जन्म तो देती है लेकिन भूख लगने पर उन्हीं का भक्षण कर लेती है।

कर्मों की कैसी विचित्र लीला है तिर्यंच होकर भी ये पशु कम से कम बच्चों को जन्म तो देते हैं किन्तु आज की निर्दयी माँ दुनियाँ में आने के पूर्व भ्रूण अवस्था में ही बच्चों को समाप्त कर देती है। इससे अधिक निर्दयता की बात और क्या होगी? जब आप इन शब्दों का संबोधन भी पसंद नहीं करती तो ऐसे घ्रणित कार्य कैसे कर लेती हैं। इस प्रकार के अपराध करने वाले माता-पिता को धार्मिक अनुष्ठान में प्रमुख पात्र एवं गुरुओं को आहार दान देने के अधिकारी नहीं होते हैं।

विज्ञान ने गर्भावस्था में बच्चे को कोई तकलीफ न हो इसके परीक्षण के लिए मशीनों का अविष्कार किया था लेकिन वही वर्तमान में प्रमुखता से लिंग परीक्षण का साधन बन जाने से संस्कृति का घात करने वाला अभिशाप बन चुका है अत: मेरा डॉक्टर्स वर्ग से प्रधानता से निवेदन है कि वे बच्चों की बीमारी तो दूर करें लेकिन लिंग परीक्षण कभी न करें जिससे विनाश की कगार पर खड़ी संस्कृति बच सके।

माता-पिता भी ध्यान दें बच्चें भगवान का रूप होते हैं यदि आप अपनी गोद को भरा चहाते हैं घर के आंगन में किलकारी भरने वाली संतान चाहते हैं तो बेटे और बेटी का भेद न करें। दोनों ही भगवान का दिया हुआ उपहार है उसे तिष्कृत करना भविष्य में वांझ अथवा निसंतान होने का दिव्यघोष करना है। अत: उससे बचें और अपने जीवन में भ्रूण हत्या जैसे पाप को कभी न करने का संकल्प लें।

अंगुली पकड़कर चलना सिखाया

(प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने)

प्रवचन - प.पू. श्रमणाचार्य सुबलसागर जी महाराज

शास्त्रों में सुना है, पढ़ा है कि तीर्थंकर भगवंतों का समवशरण भव्य जीवों के पुण्य से आता है क्योंकि वे मोह से रहित होते हैं मोह से इच्छाएँ होती है अत: उनके पास इच्छा भी नहीं होती। जहाँ के जीवों का पुण्य होता है वहाँ वे स्वत: पहुँच जाते हैं यह बात जिनवाणी है अत: सत्य हैं।

हम लोग जिनवाणी को पढ़ तो लेते हैं लेकिन उस पर मनन मंथन नहीं करते, वर्तमान परिपेक्ष्य में वह किस तरह घटित हो सकती है यह नहीं सोचते। वो तीर्थंकर भगवान हैं लेकिन यहाँ दिगम्बर संतों का विहार भी इच्छा से रहित होता है। इन्हें किसी से राग नहीं होता है ये भी भक्तों के पुण्य से चलते हैं।

परम पूज्य गणाचार्य विरागसागर जी महाराज कलकत्ता में आये हैं आप बताओं ये अपनी इच्छा से आये हैं या आपके पूण्य से ? यदि अपनी इच्छा से आये हैं तो आप बार-बार इतने श्रीफल क्यों चढ़ा रहे हो ?

बन्धुओ ! जहाँ पुण्य गाढ़ा होता है वहाँ संयोग स्वयमेव मिल जाते हैं। पुण्य करो। कलकत्ता वालों का तो पुण्य बहुत गाढ़ा है यहाँ अनेकों बड़े-बड़े साधु संतों का चातुर्मास होता आया है और आज भी हो रहा है। यद्यपि हमें यहाँ आना नहीं था पर हमसे दीक्षा में ज्येष्ठ मुनि सुपार्श्वसागर जी के निमित हमारा यहाँ आना हो गया। २०१३ में सागर म.प्र. के चातुर्मास में भाव जाग्रत हुए थे कि सम्मेद शिखर जी की वंदना करना है लेकिन सफलता २०१९ में मिल सकी और सौभाग्य ऐसा जगा कि वहाँ हमें गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का सान्निध्य भी प्राप्त हो गया।

सत्य बतायें ये गणाचार्य विरागसागर जी महाराज हमारे गुरु हैं बीज इन्होंने ही बोया है अंगुली पकड़कर चलना सिखाया है इसलिए मैं इनसे दूर नहीं होना चाहता हूँ क्योंकि आप लोग तो गाड़ी से कहीं भी जाकर संतों के दर्शन कर सकते हैं लेकिन हमें बड़ी मेहनत, परिश्रम करने के बाद दर्शन प्राप्त होते हैं इसलिए मैं ज्यादा से ज्यादा समय इनके चरणों में बीतें अधिक से अधिक अनुभव शिक्षाएँ प्राप्त हो ऐसी भावना रखता हूँ। चूँकि मैं भी किसी अन्य डाल से बंधा हूँ अत: चातुर्मास के लिए जैसा भी संयोग होगा।

विरागामृत

(१०.७.२०१९ काकुड़ गाछी, कलकत्ता)

१. जहाँ कर्ता भाव आता है वहाँ अहंकार आता है।
२. महापुरुष अपने को कर्ता नहीं कहते अपने कार्य की सफलता में वह दूसरों को ही श्रेय देते है।
३. अहंकार से कर्मों का बन्ध होता है। और उनके फलों को भोगकर दुख भोगता है।
४. मनुष्य नई-नई खोजों में लगा हैं उसे अपनी आत्मा की कोई खोज नहीं।
५. मंहगाई के इस समय में यदि सस्ती है तो आदमी की जिन्दगी है।
६. मिथ्यात्व में जीव को आत्मा परमात्मा कुछ नजर नहीं आता।
७. मरने के बाद क्या दुख कष्ट होगा कैसी दुर्गति होगी कुछ भी परवाह नहीं है।
८. वेहोस व्यक्ति शराब पीता है यदि व्यक्ति होश में हो तो वह शराब नहीं पी सकता।
९. आत्मा किसी अचेतन वस्तु को उत्पादन नहीं कर सकता।
१०. पुद्गल का पुद्गल में ही परिणमन होता है।

गुरु के प्रति समर्पणता

श्रमण मुनि विवर्धन सागर

प.पू. गुरुदेव गणाचार्य भगवन् में विद्यमान अनेकानेक गुणों में अपने गुरु के प्रति समर्पण भाव भी एक ऐसा गुण है जो जनमानस के लिये आदर्श बना हुआ है यदि कोई समर्पणता का पाठ सीखना चाहे तो उसे गुरुदेव से सीखना चाहिए क्योंकि वर्तमान में जहाँ कतिपय शिष्य दीक्षा-शिक्षा के उपरांत गुरु को ही भूल जाते हैं वहीं पू. गुरुदेव वर्तमान युग के सर्वश्रेष्ठ आचार्य होने पर भी अपने गुरु के प्रति कृतज्ञभाव रखते हैं इतना ही नहीं बल्कि प्रतिदिन अपने द्वय गुरुओं के साथ बीते उन अमूल्य क्षणों को अनुभव के रूप में हम शिष्यों को बतलाते हैं उन अनुभवों को सुनकर एवं सन् २००७ में गुरुणांगुरु प.पू. तपस्वी सम्राट आ.श्री सन्मति सागर जी महाराज के साथ हुये चातुर्मास के दौरान जो पू. गुरुदेव की अपने गुरु के प्रति जो समर्पणता देखी है वह वास्तविकता में अद्वितीय है। एक शिष्य को अपने गुरु के प्रति किस प्रकार समर्पित रहना चाहिये। यह मैंने पू. गुरुदेव की चर्चा से नहीं अपितु चर्या से सीखा है।

यद्यपि वर्तमान दृष्टि से विचार करूँ तो मेरे प्रारंभिक अर्थात् दीक्षा के उपरान्त एवं आज के समर्पण में काफी अन्तर हैं क्योंकि प्रारंभिक दशा में सोच तो यही थी कि मैं पू. गुरुदेव के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित रहूंगा। किन्तु किस तरह एक शिष्य को अपने आराध्य के प्रति समर्पित रहना चाहिए यह धीरे-धीरे पू. गुरुदेव की अपने गुरु के प्रति समर्पणता देखकर सीखा है। सन् २००४ कारंजा में पू. गुरुदेव ने मुझसे क्लास में पढ़ाये विषयों के नोट्स तैयार कर चुके हैं। गुरुदेव से ऐसा कह तो दिया किन्तु उसी समय से मेरा मन पूरे दिन अशान्त रहा कि मैंने पू. गुरुदेव की आज्ञा टाल दी। दूसरे दिन ही मैंने पू. गुरुदेव से कहा- पू. श्री जैसे नोटस तैयार करने को आपने कहा- वह मैं तैयार करूँगा। पू. गुरूदेव ने भी मेरी बात सुनकर मुस्कुरा दिया। इस प्रसंग के बाद मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब कभी भी पू. गुरुदेव की किसी भी प्रकार आज्ञा का उल्लघन नहीं करेंगे एवं उनके सेवा भक्ति-वैय्यावृत्ति, चिन्तन, मनन आदि समस्त कार्यों में सहयोगी बनकर पूर्ण रूपेण गुरु के प्रति समर्पित रहेंगे।

फिर भी मेरा पाप कर्मोदय ही कहें कि मेरी योग्यता में कमी होने से पूज्य गुरुदेव की अपेक्षानुसार उतना सफल नहीं हो पाता हूँ किन्तु कोशिश हमेशा यही रहेगी कि मैं भी गुरुसम समर्पित शिष्य की तरह जीवन में सदा गुरु चरणों में समर्पित होकर उनकी आज्ञानुसार कार्य करता रहूँ यही भावना हैं।

वीतराग देव

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

हे ज्ञानी!
वीतराग देव ही
सच्चे देव है,
और करूणामयी धर्म ही
सच्चा धर्म है।
वीतराग देववाणी ही
जिनवाणी है।
इस वाणीनुसार
करते हैं जो आचरण
वे ही सच्चे गुरु
हमारे पथ प्रदर्शक।

मेरा चातुर्मास इनके चरणों में होगा

प्रवचन- मुनि सुपार्श्व सागर जी महाराज

जैनधर्म में जन्म मिलना सहयोग शरीर धार्मिक परिवार प्राप्त होना उत्तरोत्तर दुर्लभ हैं। किन्तु इन सबसे अधिक दुर्लभ निर्ग्रन्थ साधु और उसमें भी परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी गुरुदेव के विशाल संघ का सान्निध्य पा जाना है। ये सारी बाते आज पूर्व पुण्य से आपको प्राप्त है निश्चित ही यह किसी विशेष, सामूहिक रूप में किये गये पुण्य का फल है। यह वह धरा है जिसमें तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी जैसे महान संत के दो चातुर्मास हुए हैं और अन्य भी बड़े-बड़े साधुसंघों के यहाँ चातुर्मास सम्पन्न हुए हैं। कलकत्ता के इतिहास में यह चातुर्मास भी अपने आपने अद्वितीय और ऐतिहासिक होगा। ऐसा मेरा निश्चय है। आप चातुर्मास की स्वीकृति की बात कर रहे हैं तो ध्यान रखें मेरा चातुर्मास तो परम पूज्य विमलकीर्ति, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज एवं आचार्य श्री सुबलसागर जी के चरण सान्निध्य में सम्पन्न होगा। इनका दीर्घ कालीन अनुभव, शिक्षायें अपने को संभालने के तरीके इस चातुर्मास में हमें प्राप्त होगे।

गुरु चरण मत छोड़ना

श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माता जी

जमाना दौड़ रहा है
ख्याति लाभ की चाह में
प्रोग्रेस और कॉम्पीटीशन की राह में
जहाँ देखो वही धूममची है
संतों की सादगी भी इससे कब बची है
मन कभी-कभी घबरा जाता है
कभी स्वयं से कभी दीवारों से टकरा जाता है
मुझे नहीं चाहिए लोकेषणा की हवा
मुझे तो चाहिए अनादि भ्रमण की दवा
मेरे नादान मन, गुरु चरण मत छोड़ना
मजबूरी हो या जरूरी, रेस में मत दौड़ना
तुझे कुछ नहीं आता, इसकी फ्रिक मत करना
हाँ लोगों से अपनी कमजोरी का जिक्रक मत करना
वर्णा ये लोंग हँसेंगे, जाने क्या-क्या ताने कसेंगे
तुझे किस्मत के भरोसे छोड़ देंगे
तू अकेला था इसका तब एहसास होगा
जब अकेला तेरा साया साथ होगा
अर्थी को कंधा लगाने, रोने- चिल्लाने
तुझसे अपनापन दिखाने, लोग हजारों आएंगे उस वक्त
लेकिन उससे लाभ क्या तुझे
जब तू ही न होगा कमबख्त
सम्हल जा वक्त को संवार ले
भक्ति की पतवार ले, चल-चलें जमाने के उस पार
जहाँ तेरे स्वप्न हों साकार।

जीवन की परमोत्कृष्ट निधि : स्वाध्याय

आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज

हे हंसात्मन्! कर तू स्वाध्याय। स्व का अध्ययन करना ही जीवन का परम-सार है। यदि तेरे पास स्वाध्याय है, तो सब कुछ है। स्वाध्याय ही जीवन की आंतरिक निधि है। इस निधि के अभाव में साधु की कोई कीमत नहीं। साधु के पास धन की कीमत नहीं है। यदि साधु के पास धन है, तो वह दो कौड़ी का नहीं और श्रावक के पास धन नहीं तो वह दो कौड़ी का नहीं। साधु के पास धन की महत्ता नहीं, स्वाध्याय रूपी धन की महत्ता होती है। सर्वस्व तेरा गहन अध्ययन है, यही पूज्य बनाता है। चाहे परमार्थ दृष्टि से देखें या चाहे लौकिक दृष्टि से देखें। जनमानस तेरे परिचय में यह नहीं पूछना चाहता है कि महाराज श्री! आपके कितने भाई हैं, कितनी बहिनें हैं, आप कैसे थे, आपका परिवार सम्पन्न है या नहीं, निम्न श्रेणी का है या मध्यम-उच्च श्रेणी का है। हाँ, यदि पूछता है तो वह अज्ञानी/नासमझ है और साधु स्वयं ये सब बतलाता है तो वह साधु सच्चा साधक नहीं, क्योंकि पूर्व स्मृति अभी तक नहीं गयी, यानी शरीर तो साधु बन गया लेकिन मन अभी साधु नहीं बना, मन अभी असाधु रूप ही है। तन-मन दोनों साधुरूप होना ही सच्चे साधक की विशेषता है। वही उसका परिचय है। समझदार श्रावक यही पूछता है कि, हे गुरुदेव! किस ग्रंथराज का पठन-पाठन, वाचन, चिंतवन चल रहा है, किस-किस का पारायण हो चुका है एवं क्या-क्या और आगे चलना है। यदि आगम-ग्रंथों की आवश्यकता है तो मैं शक्तिश: उपलब्ध कराऊँगा। ये समीचीन चर्चायें श्रावक-साधक के बीच होनी चाहिए क्योंकि श्रावक का साधक के प्रति यही सच्चा दायित्व एवं वात्सल्य है। देश में क्या हो रहा है, कौन सी पार्टी विजय को प्राप्त हुई, भो ज्ञानी! तुझे क्या लेना देना? न तुझे किसी से कुछ लेना है और न कुछ देना, अपने आप में निमग्न रहना है। स्व में निमग्न रहना ही साधक का परम कर्त्तव्य है एवं यही है सच्ची साधुता। ज्ञानधन का इतना अर्जन कर लो, जिससे पूछनेवाले को गौरव से अपना परिचय दे सको, नहीं तो स्व-परिचय देने में शर्म आयेगी अथवा जिस परिचय को देने की आवश्यकता नहीं थी, उस परिचय को देना शुरु कर देगा, कि 'मेरी पढ़ने की तीव्र आकांक्षा थी, पर ऐसे निमित्त नहीं मिले, गुरु महाराज ने पढ़ाया नहीं और साधन नहीं जुटाये। यानी व्यर्थ का परिचय देकर तूने गुरु महाराज को अपने साथ में कर लिया कि मैं ही नहीं बल्कि हमारे गुरु भी हमारी श्रेणी में हैं। कम से कम गुरुदेव को आप अपनी श्रेणी में मत लो। ज्ञानाभ्यास गुरु के निमित्त से एवं स्व-पुरुषार्थ से ही होता है। स्व पुरुषार्थ तेरे को जागृत करना चाहिए। स्वयं में उत्सुकता न हो और गुरु पर दोष रखना ये 'नाच न आवे आंगन टेढ़ा' जैसी कहावत सिद्ध हुई। स्वयं आलस्य प्रमाद के कारण अध्ययन न करो और गुरु को दोषी ठहराओ, ये तो महाभूल है।

ज्ञानी के लिए काम-क्रोधरूप भाव जहर है। कामी-क्रोधी पुरुष सरस्वती की आराधना नहीं कर सकता है। अहंभाव भी ज्ञान का विनाश करा देता है। यदि सच्चा ज्ञानी बनना है, तो इन विकारी भावों का परित्याग करना होगा क्योंकि ज्ञान विनयशील की संपत्ति है। उस साधक के पास ही ज्ञान सुरक्षित रह सकता है, जो अहं नहीं करता। क्योंकि बादल मेघों में आच्छादित हों तो वे भी नीचे आ जाते हैं। वृक्ष फलित होते ही झुक जाते हैं। इसी प्रकार विवेकी, ज्ञानी अपने आप में नम्र-स्वभावी होता है, वह भी साधु-पुरुषों को देखकर झुक जाता है और यहीं से प्रारंभ होता है- स्वाध्याय। क्योंकि नम्रता स्वाध्याय की पृष्ठ भूमिका है।

अत: हे साधक! नम्र होकर निज जीवन का अध्याय प्रारंभ कर। स्व में डुबकी लगा। यही तेरा वास्तविक स्वाध्याय है।

❖❖❖❖

समर्पित किया है

श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी

गुरुवर आप समझाते जाना, हम समझते जायेंगे।
आप कहते जाना, हम करते जायेंगे।
आप (रत्नत्रय) देते जाना, हम लेते जायेंगे।
आप पढ़ाते जाना, हम पढ़ते जायेंगे।
आप लिखते जाना, हम लिखते जायेंगे।
आप सिखाते जाना, हम सीखते जायेंगे।
आप चलाते जाना, हम चलते जायेंगे।
आप सुनाते जाना, हम सुनते जायेंगे।
आप हँसाते जाना, हम हँसते जायेंगे।
क्योंकि हमने अपना जीवन, आपको समर्पित किया है।
मात्र इस भव को ही नहीं, हर भव को अर्पित किया है।।

सागर में बूँदो की तरह असीमित हैं आपके उपकार,
वृक्ष में पत्तो की तरह लगते है आपके उपकार।
आपने जो दिया वो आज तक नहीं दिया किसी ने,
सूरज में किरणों की तरह चमकते हैं आपके उपकार।। १।।

सागर की गहराई आप में नजर आई है,
आकाश की ऊँचाई भी आपसे शर्माई है।
उपमा के बंधन से आपको क्या बांधे गुरुवर,
प्रभु की मूरत भी आपमें समाई है।। २।।

प्यासे पपीहा की तरह, आपको निहारते हैं हम,
बूँद सागर की तरह, आपमें समाते हैं हम।
आपसे पृथक हमारा, अस्तित्व कहाँ है गुरुवर,
भक्त भगवान की तरह, आपको पुकारते हैं हम।। ३।।

सागर से पानी की तरह, आकाश से तारों की तरह।
गुरु शिष्य संबंध होता है, जीवन में शासो की तरह।। ४।।

आपके ज्ञान से दीप जलने लगे, देख मुस्कान को फूल खिलने लगे।
आपके त्याग ने कैसा जादू किया, दर्शकर मुक्तिपथ पे हम चलने लगे।। ५।।

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अतः सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया और (वीजा) बन गया

श्रमणी आर्यिका विजिज्ञासाश्री माता जी

तीर्थराज सम्मेद शिखर चातुर्मास के दौरान पूज्य गुरुदेव के पास अनेकों यात्री अपने कष्टों को सुनाने आते थे। कोई तन से दु:खी होते, कोई धन से, कोई पारिवारिक जन से तो कोई और भी अनेकों प्रकार के कष्टों को जब सुनाते तो पूज्य गुरुदेव सान्त्वनामयी सम्बोधन एवं आशीर्वाद देकर जल्द से जल्द खिसकाने का प्रयास करते क्योंकि पूज्य गुरुदेव को भीड़भाड नहीं भाती उन्हें तो एकांत निर्जन स्थान में सतत ध्यान, अध्ययन एवं लेखन करना ही पसंद है।

लेकिन फिर भी स्व के साथ पर कल्याण की भावना यह निर्ग्रन्थों की पहचान हुआ करती है इसलिए पूज्य गुरुदेव व्यस्ततम् समय में से थोड़ा समय श्रावकों को भी देते यद्यपि जब कोई पूज्य श्री को अपनी परेशानी या कोई बात सुनाता है तो भी पूज्य गुरुदेव उसे अकर्तत्व बुद्धि से सुनते हुये अपने लेखन में उपयोग लगाते और उनके तदनुरूप समाधान या आशीर्वाद देकर पुन: आत्म-साधना में व्यस्त हो जाते हैं यह पूज्य गुरुदेव की सबसे बड़ी विशेषता है और सच्चे साधुओं की तो यही पहचान हुआ करती है।

ऐसे ही एक दिन पूज्य गुरुदेव माध्यान्हिक देव वंदना से निर्वृत्त होकर जब लेखन कर रहे थे तो रूम के बाहर प्रतिदिन की भांति श्रावकों का जमावड़ा लगा हुआ था उसमें एक लड़की रूपल गुजरात के अहमदाबाद से आई थी जो कि विदेश से जॉव का ऑफर आने पर भी वीजा न बन पाने के कारण हताश थी उसे पूर्ण भरोसा था कि पू.श्री यदि आशीर्वाद देंगे तो उसका काम जरूर हो जायेगा। उसने श्रमण मुनि श्री विहितसागर जी (जो पू. गुरुदेव के रूम के बाहर ही बैठते थे) से पू. गुरुदेव से आशीर्वाद दिलाने के लिये आग्रह किया।

जब उसने पू. गुरुदेव से अपनी बात कही तो पू. गुरुदेव ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि चिंता मत करो, जहाँ पुरुषार्थ सम्यक होता है वहाँ सफलता अवश्य मिलती है। पू. श्री से आशीर्वाद लेकर वह अपने रूम तक ही पहुंची थी कि वीजा ऑफिस से फोन आ गया कि आपका वीजा पास हो चुका है। आप अपना वीजा कार्ड ले जाये। यह सुनकर उसकी खुशी का पार न रहा वह तुरन्त पू. गुरुदेव के पास वापस आई और वीजा बन जाने की बात सुनाते हुये बोली कि पू.श्री ये सब आपके आशीर्वाद का ही प्रभाव है जो मेरा वीजा पास हो गया, पू. गुरुदेव तो उनकी बातों से ज्यादा गौर न करते हुये अपने लेखन में ही रत थे, जबकि रूपल का पू. गुरुदेव के आशीर्वाद से सम्पूर्ण जीवन बदलने वाला था।

A Man is bundle of disires

'इच्छा का परिमाण' 'परिग्रह परिमाणु व्रत' (पद्म पुराण १४ सर्ग १९४ गाथा)

अपनी इच्छा का सदा परिमाण करना चाहिये। क्योंकि इच्छा पर यदि अंकुश नहीं लगाया गया तो वह दु:ख देती है।

उदाहरण- भद्र और कांचन नाम के दो व्यक्ति थे। बैर आदि को बेचने वाले एक भद्र नामक पुरुष था उसने प्रतिज्ञा की थी कि 'मैं एक दीनारका ही परिग्रह रखूंगा। एक बार उसे मार्ग में पड़ा हुआ बटुआ मिला। उस बटुये में यद्यपि बहुत दीनार रखी थी। पर भद्र ने अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान कर कुतूहल वश उनमें से एक दीनार निकाल ली। शेष बटुआ वही छोड़ दिया। वह बटुआ कांचन नामक दूसरे पुरुष ने देखा तो वह सबका सब उठा लिया। दीनशिंका स्वामी राजा था। जब उसने जाँच-पड़ताल की तो कांचन को मृत्यु की सजा दी गयी। और भद्र ने एक दीनार ली थी वह स्वयं ही आकर राजा को वापस कर दी। जिससे राजा ने उसका सम्मान किया।

A Man is bundle of disires

मनुष्य इच्छा का बंडल होता है।

क्षुल्लिका विज्ञप्तिश्री माताजी

प्राणायाम से बढ़ाये स्वस्थता

आर्यिका पुनीत चैतन्यमति माता जी

जिंदगी खुद हो अपने बलबूते पर जीना बेटा बहु या लाठी का सहारा नहीं लेना पड़े। अत: योग का जीवन में एक हिस्सा बना लो।

१. प्राणायाम करते समय 'ऊँ ह्रीं नम:' या 'ओऽम' का जाप करना आध्यात्मिक रूप से विशेष गुणकारी है।

२. प्राणायाम करते समय मुख-आँख, नाक आदि अंगो पर किसी प्रकार तनाव न लाकर सहजवस्था में रखना चाहिये।

३. प्राणायाम से ७२ करोड़ नाडियों की शुद्धि बुद्धि का विकास माइग्रेन, डीपरेशन से बचेंगे, अनुलोम विलोम प्राणायाम हार्ट के लिए सब ब्लोकेझ दूर भीतर भक्ति प्रकट होती है।

४.भ्रामरी प्राणायाम से काम, क्रोध मोह लोभ अंधकार दूर होता है। तेज उत्पन्न होता है। मनुष्य भव मिला है पुण्य का फल है उसे सार्थक करो।

५. हर दिन माता-पिता को प्रणाम करे, प्राणायाम करें। ९ महिने गर्भ में ९ महीने गोद में रखती है माता उसका ऋण कभी नहीं चुका सकते। कभी भी भूल से माता-पिता का दिन नहीं दुखाना।

प्राणायाम हेतु नियम-

१. प्राणायाम शुद्ध सात्वविक निर्मल स्थान पर करना चाहिए, हो सके तो जल के समीप।

२. प्राणायाम के लिए सिद्धासन वज्रासन या पदमासन में बैठना उपर्युक्त है।

३. श्वास सदा नासिका से ही लेना चाहिए। इससे श्वास फिलटर होकर अन्दर जाता है दिन में भी श्वास नासिका से ही लेना चाहिए।

४. योगासन की तरह प्राणायाम करने के लिए कम से कम ४-५ घन्टे पूर्व भोजन कर लेना चाहिए। प्रात: शौचादि से निवृत्ति होकर योगासनों से पूर्व प्राणायाम करें, तो सर्वोत्तम है। शुरु में ५-१० मिनिट ही अभ्यास करें, धीरे-धीरे बढ़ाते हुए आधा से एक घंटे तक करना चाहिये। हमेशा नियत संख्या में करें, कम या ज्यादा न करें। यदि प्रात: उठकर पेट साफ नहीं होता है तो रात्रि में सोने से पहले हरड़ चूर्ण या त्रिफलाचूर्ण गर्म पानी से ले लों, कुछ दिन कपालभाति प्रणायामक करने से कब्ज भी स्वत: दूर हो जाता है।

५.प्राणायाम करते समय मन: शान्त एवं प्रसन्न होना चाहिए। प्राणायाम अपनी-अपनी प्रकृति और ऋतु के अनुकूल करना चाहिए।

६. प्राणायाम करते हुए थकान अनुभव हो तो दूसरा प्राणायाम करने से पूर्व ५-६ सामान्य दीर्घ श्वास लेकर विश्राम कर लेना चाहिए।

७. गर्भवती महिला, भूख से पीड़ित, ज्वर रोगी, अजितेन्द्रिय पुरुष को प्राणायाम नहीं करना चाहिए।

८. प्राणायाम में श्वास को हठ पूर्वक नहीं रोकना चाहिये। प्राणायाम से मन को भी स्थिर एवं एकाग्र करने का अभ्यास करना चाहिये।

९. प्राणायाम से पूर्व कई बार 'ओऽमं'का लम्बा नादपूर्ण उच्चारण करना और भजन कीर्तन करना उचित है ऐसा करने से मन शान्त एवं एकाग्र हो जाता है।

१०. रसना और वासना को जीत लिया तो शाश्वत सुख का मार्ग प्रशस्त होते हुए एक दिन इशित्व को पा सकते है।

११. मन इन्द्रिय को नियंत्रित करने वाला योग की सिद्धि के साथ सुख पाता है।

शुद्ध सम्यक्त्वी राजा वज्रकर्ण

किसी समय उज्जयिनी नगरी में राजा सिंहोदर अनेकों नगरों को अपने आधीनस्थ करता हुआ। राज्य करता था। उसका अत्यंत प्रिय सेवक दशांगपुर का राजा वज्रकर्ण था जो कि धर्माचरण से शून्य हिंसा आदि पापों में संलग्न रहता था।

एक दिन राजा वज्रकर्ण जीवों से भरी अटवी में शिकार खेलने हेतु प्रतिष्ठ हुआ। उस वन में घूमते हुए उसने कनेर वन के बीच में शिला तल पर विद्यमान उत्तम शांति केधारक एक दिगम्बर साधु देखे। श्रमण लक्ष्मी से विभूषित उन मुनि से भाला हाथ में लेकर राजा ने कहा- कि हे साधो! यह क्या कर रहे हो? साधु ने उत्तर दिया कि जो पिछले सैकड़ों जन्मों में भी नहीं किया जा सका ऐसा आत्मा का हित करता हूँ। राजा वज्रकर्ण ने हँसते हुए कहा- कि इस अवस्था में तो तुम्हें कुछ भी सुख नहीं है फिर आत्मा का हित कैसा? भोगों में लिप्त राजा वज्रकर्ण को देखकर दयालु मुनिराज बोले- कि तू आशापाशरूपी बंधन को तोड़ने वाले मुझसे हित क्या पूछ रहा है? हित के उपायों से दूर यह जो तू हजारों प्राणियों का घात करने वाले आत्म क अनर्थ करने में तत्पर एवं सद् असद् के विचार से रहित है सो अवश्य ही भयंकर नरक में पड़ेगा। तूने नरक की पृथिवियों को अभी तक जाना नहीं है इसीलिए तो तू पाप में प्रीति कर रहा है। इस पृथ्वी के नीचे नरकों की सात पृथिवियाँ हैं जो अत्यंत भयंकर हैं अत्यंत दुर्गन्ध से युक्त हैं जिनका देखना अत्यंत कठिन है, जिनका स्पर्शक करना अत्यंत दुखदायी है, नारकी जीव वहां प्रतिक्षण हजारों दु:ख प्राप्त करते हैं। हिंसा आदि पापों में लिप्त तुम्हारे जैसे प्राणी ऐसे नरकों में जाकर दुख भोगते हैं। किंपांकक फल के समान जो इन्द्रिय जन्य सुख है उसे प्राप्त कर तू आत्मा का हित मान रहा है यह तेरी मूर्खता है। आत्मा का हित तो वे करते हैं जो जीवों पर दयाभाव रखते हैं महाव्रतों का पालन करते हैं अथवा अणुव्रतों का पालन करते है इनके अलावा शेष मनुष्य तो दुख के ही पात्र हैं। हे राजन! यदि तू अपना वास्तविकक हित करना चाहता है तो हिंसादि पाप छोड़ सम्यक्त्व को धारण कर तभी तेरा कल्याण होगा।

मुनिराज प्रीतिवर्धन के वचन सुन राजा नम्रता को प्राप्त हो गया उसने मुनिराज को नमस्कार कर ग्रहस्थ धर्म अंगीकार किया साथ ही प्लावित मन होकर मैं सच्चे देव (अर्हन्त) निर्ग्रन्थ मुनिराजों को छोड़कर अन्य किसी को नमस्कार नहीं करूँगा ऐसी प्रतिज्ञा ली। धर्माचरण में लीन राजा ने एक दिन विचार किया कि मैं राजा सिहोदर का सेवक हूँ अत: यदि मैं उसे नमस्कार नहीं करूँगा तो निश्चित ही वह निग्रह करेगा दण्ड देगा। इसलिए कुछ उपाय करना जरूरी है ऐसा सोच उसने देवाधिदेव मुनिसुव्रत नाथ भगवान की प्रतिमा से युक्त एक स्वर्ण की अंगूठी बनवाकर उसे अपने दाहिने हाथ के अंगूठे में धारण कर लिया। अब वह बुद्धिमान वज्रकर्ण, राजा सिहोदर के सामने खड़े होकर दोनों हाथ जोड़कर उस प्रतिमा को नमस्कार कर अपने व्रत का निर्दोष पालन करने लगा।

किसी दिन छिद्रान्वेशी वैरी ने यह बात राजा सिहोदर से कह दी जिससे क्रोधित हो सिहोदर ने वज्रकर्ण को छल से अपने पास बुलवाया। सरल चित्त राजा वज्रकर्ण उसके पास जा ही रहा था कि रास्ते में राजा के महल में चोरी हेतु जाने वाले विद्युदंग नामक वैश्य पुत्र ने राजा सिहोदर के कुपित होने की सारी बात सुना दी और कहा- चूंकि आप धर्मात्मा हैं अत: मेरी प्रार्थना है कि आप वहाँ न जायें क्योंकि क्रूरचित्र सिहोदर निश्चित ही आपको मरणदण्ड देगा इसलिए आप अपनी व धर्म की रक्षा करें। विद्युदंग की बात सुन राजा वज्रकर्ण वापस नगर में लौट आया और अपने दुर्गभ नगर में युद्ध की तैयारी करने लगा। उधर सिहोदर ने सेना सहित आकर वज्रकर्ण के नगर को घेर लिया। सिहोदर ने वज्रकर्ण के पास पत्र भेजा कि मेरे द्वारा प्रदत्त नगर का उपभोग करता हुआ भी तू मुझे छोड़ जिनशासन को नमस्कार करता है यह अत्यंत नियचेष्टा है। तू या तो शीघ्र आकर मुझे नमस्कार कर अथवा मृत्यु को प्राप्त हो। इसके उत्तर में वज्रकर्ण ने पत्र में लिखा कि आप मेरी सम्पदा के स्वामी हो शरीर के नहीं, अत: संपूर्ण सम्पदा लेकर मात्र रानी सहित मुझे छोड़ दो, मेरी धर्माराधना में बाधा न डालें, अर्हन्त देव और जिन गुरु को छोड़कर मैं किसी को नमस्कार नहीं करूंगा यह मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है। इतना कहने पर भी सिहोदर का क्रोध शांत नहीं हुआ उसने वज्रकर्ण के राज्य को उजाड़ना प्रारंभ कर दिया कई घरों व झोपड़ियों में आग लगा दी। जिससे वे जल गई उसके उत्पात से संपूर्ण नगर में भगदड़ मच गई।

उसी समय वनवास में निकले राम लक्ष्मण एवं सीता उसी नगर के निकटवर्ती प्रदेश में आ पहुँचे नगर से लोगों को भागते देख उन्होंने किसी व्यक्ति से वज्रकर्ण की प्रतिज्ञा का सारा समाचार जान लिया। राम की आज्ञा से लक्ष्मण भोजन व्यवस्था हेतु वज्रकर्ण के नगर में आये, सो उनके लक्षण व सुन्दर रूप को देख धर्मात्मा वज्रकर्ण ने अपने लिये बनाये गये भोजन में से स्वादिष्ट भोजन उन तीनों के लिए अपने सेवकों के साथ भेज दिया। राम उसके अतिथि सत्कार एवं जिनेन्द्र देव के प्रति दृढ़ श्रद्धा से अत्यंत प्रभावित हो गये और सिहोदर को जीतकर उसे धर्मात्मा राजा वज्रकर्ण के चरणों में डाल दिया। वज्रकर्ण ने उसे जीवन दान देने की प्रार्थना की उस समय से राजा सिहोदर वज्रकर्ण का आज्ञाकारी सवेक बन गया।

राजा वज्रकर्ण का यह कथानक आज के युग के लिए बहुत बड़ी शिक्षा प्रदान करने वाला है। जहाँ व्यक्ति छोटी-छोटी परिस्थितियों में घबरा जाते हैं दर-दर की ठोकरें खाते हैं अपने सिर को बाजार का श्रीफल बनाकर जहाँ तहाँ चढ़ा देते हैं उनके लिए यह कथानक शुद्ध सम्यक्त्व प्रदान करने वाला है साथ ही हर परिस्थिति में अपनी प्रतिज्ञा में दृढ़ रहने की सीख देता है कि हर नियम की परीक्षा होती है उस समय जो ठील देता है वह असफल हो जाता है किन्तु जो दृढ़ रहता है उसे इस भव में और पर भर में अचिन्य फल प्राप्त होता है।

पद्म पुराण भाग-२ वर्ष ३३

प्रमोद भाव में गुरुवर

पू. आचार्य श्री - विरजा श्री आईये।
क्षु. विरजा श्री - का भओ?
पू. आ.श्री - हम पूछ रहे हैं तुमाओ का भओ।
क्षु. विरजा श्री - महाराज! आँख दिखाना है।
पू. आ.श्री - हमें ने दिखाओ, डॉक्टर को दिखाना।

बा.ब्र. रूबी दीदी - आचार्य श्री हमें छोटी रहल (टेबल) चाहिये।
पू.आ.श्री - ले लो (देते हुये)
रूबी दीदी - (बड़ी रहल वापिस करते हुये) आ.श्री. ये नहीं चाहिये।
पू.आ.श्री - दोनों रख लो।
रूबी दीदी - आ.श्री बैग छोटा है उसमें नहीं बनेगी।
पू.आ.श्री - तो बड़ा बैग रख लो।

मुनिराज - नमोस्तु आचार्य श्री! स्वप्न में एक दिन में दो बार आहार किया था।
आ. श्री - क्यों, एक बार के आहार में पेट नहीं भरा था क्या?

महत्वपूर्ण जानकारी

परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर ससंघ कहाँ विराजमान हैं, जानने के लिए Google अथवा किसी भी इंटरनेट Browser पर जाकर टाईप करें।

Viragsagar.trackerbox.co.in जो Location दिखाएँ उसे बड़ा करके उसके विषय में तथा आस-पास की Location के विषय में जाना जा सकता है।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट एवं प्रार्थनाएँ

गुरुदेव आपका चातुर्मास होगा तो यहाँ धर्म की ऐसी गंगा प्रवाहित होगी जिसका कोई हिसाब नहीं रहेगा। इसलिए आप अपनी कृपा दृष्टि डालते हुए अपना चातुर्मास कोलकता में करने की स्वीकृति प्रदान करें।

भागचंद्र काला, कोलकता

ये वो धरती हैं जहाँ अनेकों अतिशय हुये है और होते हैं यहाँ जो भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा विराजमान है वह सम्मेद शिखर जी से प्रतिष्ठित होकर आई है। उनके दर्शन से मन तृप्त नहीं होता है और जब मैंने परम पूज्य गणाचार्य विरागसागर जी महाराज के दर्शन किये तो इनके तेजोपुंज मुख मण्डल ने स्वत ही अपना परिचय दे दिया। अब हम सभी आपसे मात्र यही प्रार्थना करते हैं कि आप यहाँ चातुर्मास कर अपने संयम त्याग की सुगंधि से सभी को सुभाषित कर दें।

ब्र. के.सी. जैन

इतना विशाल संघ संपूर्ण बंगाल एवं कोलकता के इतिहास में प्रथम बार आया है। आचार्य श्री ससंघ के आने से इस बेलगछिया प्रांगण में ऐसा माहौल बन गया है मानों यहाँ साक्षात् तीर्थंकर भगवान का ही समवशरण आया हो। गुरुदेव हमारी पूरी समाज करबद्ध आपसे प्रार्थना कर रही है कि आप इस वर्ष का चातुर्मास हम कोलकता वासियों को प्रदान करें।

अध्यक्ष- सुमेर चंद चूड़ीवाल चौरंगी कलकत्ता

जहाँ सौम्यता, सरलता और सादगी होती है वहाँ मन स्वत: ही खिंचा चला आता है। आपके चेहरे की सौम्यता, हृदय की सरलता तथा कठोर चर्या की सादगी हम सभी के हृदय में अमिट छाप छोड़ चुकी है अब हमारा मन आपसे दूर जाने को नहीं करता है तो आप हमसे दूर कैसे जा सकते हैं। हमने अपनी मजबूत भक्ति की डोर से आपको बांध लिया है अब निश्चित ही हमारे कल्याण हेतु आप यह चातुर्मास हमें दें ऐसी हम भावना भाते हैं।

जामुन जैन

परम पूज्य आचार्य विमलसागर जी एवं तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर जी महाराज द्वारा बोया गया यह बीज आज विशाल बटवृक्ष वन संपूर्ण जगत को छाया प्रदान कर रहा है। आपकी उन्नति को देख निश्चित ही दोनों आचार्य जहाँ भी होंगे वहाँ फूले नहीं समाते होगे। हम भक्तों को आपका सान्निध्य प्राप्त हुआ। यह हमारा महान पुण्य है भविष्य में भी आपके चरण हमें प्राप्त होते रहें। आपका चातुर्मास हमें प्राप्त हो ताकि हमें भी पुण्य कमाने का अवसर मिल सके।

मुन्ना लाल जी पहाडिया

गुरुदेव यह हमारा महापुण्य है कि हमें आपका सान्निध्य शिखर जी तेरहपंथी कोठी में प्राप्त हुआ और अब कोलकाता में भी प्राप्त हुआ है। यद्यपि यह मेरी बहुत बड़ी अज्ञानता थी कि हम आपके संघ से घबराते थे किन्तु अब नहीं घबराते क्योंकि हमने आपके संघ का एक्जेस्टिंग पावर देख लिया है। साथ ही आपके चरण पड़ते ही हमने कलकत्ता में बड़े-बड़े चमत्कार देखे हैं। जब आप बंगवासी में थे उस समय अंतिम दिन आपके प्रवास के लिए जो स्थान खुला वह हिन्दू सम्प्रदाय के साधु के रहने का स्थान था आज तक वह किसी के लिये नहीं खुला था जो कि आपके संघ के लिए खुल गया।

दूसरा बेलगछिया की एक विलिंग वर्षों से बंद पड़ी थी अनेकों प्रयत्न करने पर भी बड़े-बड़े साधु संघों के लिए भी वह नहीं मिली वही आपके आते ही पूर्ण रूपेण समिति को मिल गई। इसलिए मैं पूर्ण रूपेण निश्चित हो चातुर्मास की प्रार्थना करता हूँ और विश्वास रखता हूँ आपके चरणों के प्रसाद से हर प्रतिकूलता अनुकुलता में बदल जायेगी।

मनीश जैन, काकुडगाछी

आपके शिष्य पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक संपूर्ण भारत में धर्म प्रभावना कर रहे हैं। आप ४०० से अधिक शिष्य-प्रशिष्यों के नायक होते हुए भी इतने सरल स्वभावी हैं उसे कहा नहीं जा सकता। मैंने शिखर जी में देखा कि हमारी ओर से कई प्रकार की त्रुटियाँ होने पर भी आपने कभी उनका जिक्र नहीं किया, सदैव हमारी अच्छाईयों की ही प्रशंसा की यह आपकी बहुत बड़ी महानता हैं। अब कोलकत्ता में चातुर्मास कर आप हमें सेवा करने का अवसर प्रदान करें।

कैलाश चंद जी, बड़जात्या, चौरंगी कोलकाता

गुरुवर हमारी सम्यक्त्व वर्धिनी महिला मण्डल हर वर्ष धार्मिक अनुष्ठान करती थी किन्तु आपके प्रवास काल में सभी महिलाओं में जो उत्साह दिखा वह आज तक देखने नहीं मिला। आपने त्रिदिवसीय अल्प प्रवास से जो धर्म की प्यास जगाई है वह निश्चित ही आपके और अधिक प्रवास के बिना शांत नहीं हो सकेगी। अत: हे गुरुवर आप हम भक्तों को तृप्त करने की कृपा करें।

मंजू जैन, चौरंगी कोलकाता

हे पूज्यवर यद्यपि यह सत्य है कि जब तक आप यहाँ नहीं आये थे तब तक हम सभी बहुत डर रहे थे कि इतने बड़े संघ को व्यवस्था कैसे कर सकेंगे। कहाँ ठहरायेंगे आदि-आदि किन्तु आपके प्रताप से बहुत बड़ा अतिशय हो गया। जहाँ आपको रुकाने का स्थान निश्चित किया था उसका मालिक लंदन में था अत: स्थान मिलना न मुमकिन था किन्तु न जाने कैसा चमत्कार हुआ कि उसने लंदन से फोन किया कि संतों के लिए जितना स्थान चाहिए वह सब खोल दें। और एक दिन का तीस हजार किराया वाला स्थान हमें बिना चार्ज के ही मिल गया। यह सब आपकी कृपा है। अब हमारी समाज के लोगों में चर्चा चल रही है कि गुरुदेव ने त्रिदिवसीय प्रवास दे हमें डुबकी लगाना सिखाया है लेकिन तैरना तो सीखना बाकी है अत: आप और प्रवास देकर हमें तैरना भी सिखायें।

भागचंद्र जी पहाड़िया, चौरंगी कोलकाता

परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज का ११ दिवसीय प्रवास हमें बड़े बाजार में मिला। उन ग्यारह दिनों में हमारी समाज में मानों पर्यूषण ही हो ऐसा माहौल था। अभी तक धर्म कार्यों में मात्र महिलाओं की ही प्रधानता रहती थी किन्तु गुरुवर की हर परिचर्या में चाहे वह स्वाध्याय हो, आहार हो, प्रवचन, शंका समाधान हो अथव शाम की वैय्यावृत्ति हो सभी में पुरुष वर्गो ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। कल्याण मंदिर विधान का दृश्य तो देखते ही बनता था। जिसमें ४४ माड़ना माड़कर ४४ से भी अधिक जोड़ों ने एक साथ बैठकर भगवान की पूजन अर्चना की। हम सभी बड़े बाजार वासी गुरुवर से प्रार्थना करते हैं चातुर्मास काल अथवा उसके बाद पुन: हमें सान्निध्य प्रदान कर पुण्यलाभ दें।

जिनवाणी पत्रिका संपादक- दिनेश दगड़ा बड़ाबाजार, कोलकाता

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का नाम ही अपने आप में अनूँठा है। इनके नाम का एक-एक अक्षर प्राणी मात्र का हित करने वाला है।

वि - विद्वता को बढ़ाये।

रा - राग को खत्म करें।

ग - गतियों का नाश करें।

मैं पूज्य आचार्य श्री से विगत ३० वर्ष से जुड़ा हूँ मैंने इनके संघ के अनुशासन, वात्सल्य एवं ज्ञानाराधना, संयमाराधना को करीब से देखा है इसलिए यह कह सकता हूँ कि गुरुदेव विरागसागर जी जैसा संघ दुनियां में दूसरा नहीं है। कोलकाता में पूज्य गुरुदेव का चातुर्मास निश्चित ही एक नया इतिहास रचेगा। जिस नगर में एक साधु पहुँच जाते हैं वहाँ १० किमी. सुभिक्षता फैल जाती है फिर जहाँ ५२ पिच्छि हों वहां संपूर्ण कोलकता ही क्या अवशेष बंगाल भी इनकी पवित्र ऊर्जा से अभिसिंचित होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रति. पं. कमल कुमार, कोलकाता

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.com**
2. **Facebook : viragvani**
3. **Email : viragsagarji@gmail.com**
4. **youtube : Ganacharya Viragsagarji**
5. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा हैं

पं. विजेन्द्र कुमार जैन,(वीरू) देवेन्द्रनगर

सागर सम गंभीर हैं गुरुवर इनमें रतन समाये हैं,
इन अनमोल रतन को पाने द्वार तुम्हारे आये हैं।
इनकी अतुल सम्पदा से सौ धर्म इन्द्र भी हारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

मैं सोया था नींद जाल में गुरु ने मुझे जगाया है,
बोधि लाभ को पाने ऐसा सुंदर अवसर आया है।
इन क्षण को न व्यर्थ गंवाओं गुरुदेव ने उचारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

अपने कर को आगे करके गुरु से मांगे यह बेटा,
हे गुरु हम पर दया करो तुमने लाखों का दु:ख मेटा।
जनम-जनम से कष्ट उठाये मिला न कोई सहारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

सूत्रधार बन कर जीवन का मोक्षसूत्र बतलाया है,
जिसने धारा वह इस जग में वापस कभी न आया है।
जग में ठुकराया लाज रखो यह सांचा तेरा द्वारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

हर प्राणी लालायित तेरा नेह पात्र बन जाने को,
तेरे दर पें आये हैं अपना जीवन सफल बनाने को।
समय समझकर सही समय पर समयसार को धारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

हृदयासन अवलोक रहा है वरदहस्त बन आओ तुम,
दर पर खड़ा है बालक आके इसको मत विसराओ तुम।
टेर रहा हूँ देर करो न हमने हृदय बुहारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

वह दिन कब आयेगा जब मैं जिनदीक्षा स्वीकार करूँ,
उस पल को पलको में संजो के आतम का उपकार करूँ।
जग का शाश्वत पद मिल जाए मैंने यही विचार है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

सुप्रभात की बेला आई मन प्रमुदित हो जाता है,
हृदय कमल में आन विराजो गुरु चरण में माथा है।
मेरे मन शिल्पी ने गुरु का चित्र हृदय में उकारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

अनाजों का राजा गेहूँ

- खाद्य पदार्थों में गेहूँ का महत्वपूर्ण स्थान है और उसका उपयोग भी अत्यन्त विशाल मात्रा में होता है। सभी प्रकार के अनाजों की अपेक्षा गेहूँ में पौष्टिक तत्व अधिक हैं। दैनिक आहार में प्रयुक्त सब प्रकार के अनाजों में गेहूँ श्रेष्ठ है। उसकी इस उपयोगिता के कारण गेहूँ 'अनाजों का राजा' माना जाता है।
- भारत में सर्वत्र गेहूँ का उत्पादन होता है। नहरों के पानी की सुविधा के कारण विशेषत: पंजाब में गेहूँ की फलस अधिक मात्रा में होती है। गुजरात में भी गेहूँ पर्याप्त मात्रा में होता है।
- गेहूँ का पौधा डेढ-दो हाथ ऊँचा होता है। उसका तना पोला होता है और उस पर ऊमियाँ लगती है जिनमें गेहूँ के दाने होते हैं। हरी ऊमियाँ (बालें) सेंककर खाया जाता है।
- गेहूँ की अनेक किस्में होती है। कठोर गेहूँ और नरम गेहूँ ये दो प्रमुख किस्में हैं। रंग भेद की अपेक्षा से गेहूँ सफेद और लाल दो प्रकार के होते हैं। सफेद गेहूँ की अपेक्षा लाल गेहूँ अधिक पौष्टिक माने जाते हैं। इसके उपरान्त बाजिया, पूसा, बंसी,पूनमिया, टुकड़ी, दाऊखानी, जूनागढ़ी, शरबती सोनारा, कल्याण, सोना, सोनालिका आदि गेहूँ की अनेक किस्में प्रसिद्ध है। इन सभी नस्लों में बंसी गेहूँ सर्वोत्तम माना जाता है। गुजरात में भाल प्रदेश के कठोर गेहूँ और मध्य भारत में इंदौर मालवा के गेहूँ प्रशंसनीय है।
- गेहूँ में चरबी का अंश कम होता है अत: उसके आटे में घी या तेल का मोयन दिया जाता है। घी के साथ गेहूँ का आहार करने से वायु-प्रकोप दूर होता है और बद हजमी नहीं होता है।
- गेहूँ की राब की अपेक्षा रोटी पाचन में भारी होती है और उसकी अपेक्षा पूड़ी, हलुआ, लड्डू, लपसी, गुड-पपड़ी क्रमश: एक दूसरे से अधिक भारी होती है। गुजरात में अत्यन्त पतली, हल्की-फुल्की रोटी बनाई जाती है किन्तु पतली रोटी में से गेहूँ के प्रजीवक (विटामिन) आग की आंच से जल्दी नष्ट हो जाते हैं। वास्तव में उत्तरी भारत की मोटी रोटी या बाटी आरोग्य की दृष्टि से अधिक हितकारक है।
- सामान्यत: गेहूँ का सेवन बारहों मास किया जा सकता है। किन्तु नये गेहूँ कफ कारक एवं जल्दी न पचने वाले माने जाते हैं। वर्षा ऋतु में कई लोग गेहूँ के स्थान पर बाजरा खाना पंसद करते हैं क्योंकि इस समय जठराग्नि मंद पड़ जाती है और गेहूँ भारी होता है।
- बाजारू आटा घर के ताजे आटे की तुलना नहीं कर सकता, बाजार के केक, ब्रेड, बिस्कुट पावरोटी आदि की अपेक्षा घर के आटे की बनी रोटी, लापसी आदि गुणकर एवं उत्तम आहार है।
- गेहूँ में मधूर, शीतल और वायु पित्त को दूर करने वाले, गरिष्ठ, कफ कारक, वीर्यवर्धक बलदायक, स्निग्ध, टूटे हुए को जोड़ने वाले, मल का निष्कासन करने वाले, पौष्टिक, शरीर के वर्ण को उज्ज्वल करने वाले, हितकारी, रूचि उत्पन्न करनेवाले और स्थिरता लाने वाले विशेष तत्त्व हैं।
- गेहूँ की रोटी बलदायक, रोचक, पौष्टिक, धातुवर्धक, वायुनाशक, कफकारक, गरिष्ठ और दीप्त जठराग्निवालों के उत्तम है।
- गेहूँ की रोटे जुकाम, सांस और खाँसी को मिटाने वाले होते हैं।
- एक छटांक भर गेहूँ आधा सेर पानी में शाम को भिगोकर रखें और प्रात: काल बारीक पीस उसे छानकर, एक तोला शक्कर मिलाकर सात दिन तक पीने से प्रमेह दूर होता है।
- नाक से खून गिरता हो तो गेहूँ के आटे में शर्करा और दूध मिलाकर पीने से बंद हो जाता है।
- गेहूँ के आटे की पुलटीस बनाकर फोड़े पर बाँधने सेवह पक जाता है और शीघ्र ठीक होता है।
- दुर्बल पाचन शक्तिवालों को गेहूँ के मेदे की रोटी या पूड़ी नहीं खाना चाहिए।
- जिनकी जठराग्नि मंद है, जिन्हें दस्त, पेचिश हो, बुखार आता हो या वायुविकार हो, उनके लिए गेहूँ हितकर नहीं है।
- गुल्म, कफ, उदररोग, संग्रहणी आदि रोगों में भी गेहूँ खाने से नुकसान होता है।
- नवजात शिशु की माता के लिए भी गेहूँ का सेवन हितकारी नहीं है।

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका- ऐसे कैसे ?

समाधान- बिना सम्यक्त्व के उपलब्धि को किसमें गर्भित करते मिथ्यात्व में ही तो।

शंका - यदि युगपत् मानेंतो ?

समाधान- तब तो घटित हो ही जायेगा अर्थात् अभेदरत्नत्रय युगपत् होता है अतः जिन्हें अभेदरत्नत्रय पाया जाता है उन्हें आत्मोपलब्धि भी एक साथ पायी जाती है इसीलिये हमने उपरोक्त समाधान में निश्चय या वीतराग यह विशेषण जोड़ा।

शंका- उपलब्धि किसे कहते है ?

समाधान - देखिये **(सि.वि.वृ. १/२/८/१४)**

उपलभ्यते अनया वस्तुतत्त्वमिति उपलब्धिः अर्थादापन्ना तदाकारा च बुद्धिः।

अर्थ- जिसके द्वारा वस्तु तत्त्व उपलब्ध किया जाता है या ग्रहण किया जाता है वह उपलब्धि है, पदार्थ से उत्पन्न होने वाली तदाकर परणत बुद्धि उपलब्धि है।

इसी बात का खुलासा **(पं.का.त.प्र.गा.३९)** में कहा है

चेतयन्ते अनुभवन्ति उपलभन्ते विन्दंतीत्येकार्याश्चेतनानुभूत्युत्युपलब्धि वेदनानामेकार्थत्वात्।

अर्थ-चेतता है, अनुभव करता है, उपलब्ध करता है और वेदता है, ये एकार्थ है, क्योंकि चेतना, अनुभूति, उपलब्धि और वेदना एकार्थक है।

शंका- उपलिब्ध किस कर्म के क्षयोपशम से होती है ?

समाधान - (पं.का.ता.वृ. ४३/२६/९) में कहा है कि-

मतिज्ञानावरणीय क्षयोपशम जनितार्थ ग्रहण शक्ति रूप लब्धिः।

अर्थ- मति ज्ञानावरणीय (कर्म) के क्षयोपशम से उत्पन्न अर्थ ग्रहण करने की शक्ति रुप लब्धि को ही उपलब्धि कहते है।

शंका - अंतरंग में श्रुतज्ञान के क्षयोपशम के बिना क्या द्रव्य श्रुतज्ञान हो सकता है ?

समाधान - श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के बिना तो बहिरंग श्रुतज्ञान भी नहीं हो सकता है। अतः आध्यात्मिक भाषा में श्रुतज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम को भी बहिरंग द्रव्य श्रुतज्ञान ही जानता है।

शंका- ऐसा क्यों कहते हो ?

समाधान- क्योंकि क्षयोपशम रूप श्रुतज्ञान तो मिथ्यादृष्टि को भी पाया जाता है।

शंका - मिथ्यादृष्टि को श्रुतज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम नहीं पाया जाता है उसे तो कुश्रुतज्ञानावरण कहना चाहिए ?

समाधान - ध्यान रखिये ज्ञानावरण कर्म के पांच ही भेद कहे हैं उसमें सम्यक् या मिथ्या के भेद नहीं हैं देखिये **(त.सू.अ.८/सू.६)**

मतिश्रुतावधिमन: पर्यय केवलानाम्।

ज्ञानावरण कर्म के पांच भेद हैं मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मन: पर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरण।

शंका - 'विपर्यश्च' यह सूत्र भी तो कहा है ?

समाधान - यह सूत्र ज्ञान के विषय में कहा है कि ज्ञान मिथ्या भी होते है।

शंका - यदि ज्ञान मिथ्या है हो फिर उसके आवारक कर्म भी मिथ्या होना चाहिए ?

समाधान - अगर ऐसा माना जाएगा तो फिर ज्ञानावरण कर्म के पाँच भेद नहीं आठ भेद हो जायेंगे।

शंका - हो जाने दो ?

समाधान - तो फिर आगम तथा जिनदेव के वचन गलत ठहरेंगे, फिर उनका सम्यग्ज्ञान भी गलत होगा, क्योंकि सम्यग्ज्ञान वस्तु को न्यूनाधिकता से रहित जानता है। देखिये **(र.क.श्रा.गा. ४२)** में कहा भी है कि-

अन्यूनमनतिरिक्तं याथातथ्यं विना च विपरीतात्।
नि:संदेहं वेद य, दाहुस्तज्ज्ञान मागमिन: ।। ४२ ।।

अर्थ- जो ज्ञान, वस्तु के स्वरूप को न्यूनता रहित, अधिकता रहित विपरीतता रहित और संदेह रहित, जैसा का तैसा जानता है उस ज्ञान को आगम के ज्ञाता (श्रुतकेवली) सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

अध्यात्मिक शंका-समाधान कृति से साभार

हँसी ठिठोले

1. **राजा** - मुझे ऐसा छाता चाहिए जो जीवन पर्यन्त खराब न हो।
   छाता विक्रेता- हाँ, लीजिए बस गर्मी, बरसात, धूप से दूर रखना।
२. **पत्नी** - आपको मेरे पापा ने घड़ी दी थी वह कहाँ गई ?
   पति - अब ६ साल तक थोड़े ही चलेगी।
   पत्नी - मैं तो चल रही हूँ।
   पति - तुमको चलाना पड़ रहा है।
३. **टिंकू** - मेरे वर्थ डे में तुम क्या दोगे ?
   मिंकू - १० रूपये
   टिकू - उससे तो एक टाफी तक नहीं आएगी।
   मिंटू - तो फिर आधी टाफी दे दूँगा।
४. **डॉक्टर** - मरीज से, तुम्हें क्या तकलीफ है ?-
   मरीज - कुछ नहीं
   डॉक्टर - तो क्यों आये हो ?
   मरीज - ताकि तकलीफ न आये।

स्नान करना

१. गृहस्थों को नित्य स्नान करना चाहिए।
२. स्नान सदा स्वच्छ जल से करना चाहिए।
३. प्रात: स्नान सर्वांग शरीर से करना चाहिए ताकि सारा शरीर भीग जाये।
४. नित्य स्नान से शरीर स्वच्छ रहता है।
५. चर्म सम्बन्धी रोग नहीं होते हैं।
६. दिमाग ठंडा रहता है।
७. मिट्टी, बेसन, रीठा, शिकाकाई आदि घरेलू सामग्री का प्रयोग भी स्नान के समय हाथ-पैर मुख तथा बाल धोने में किया जा सकता है।
८. इनका प्रयोग करना हमारी प्राचीन आर्य पद्धति रही है जिसका प्रयोग राज घरानों में किया जाता है।
९. दिगम्बर साधु के अस्नान गुण या स्नान का त्याग होता है। वे मात्र हाथ वगैरह धोने के लिए मिट्टी या बेसन का ही प्रयोग करते हैं। इसके प्रयोग से हमारा जीवन अहिंसामयी बन जाता है।
१०. दैनिक उपयोग के कई ब्रान्ड के सौंदर्य साबुन में चर्बी मिलाई जाती है।
११. शैम्पू- (१) नारियों के नेत्रों को कोई नुकसान न हो इसका परीक्षण करने के लिए खरगोश का सिर पकड़ तथा क्लिप लगाकर उसकी आंख को खुला रखा जाता है और फिर शैम्पू को डालकर टेस्ट किया जाता है जिससे वह अंधा हो तड़फ-तड़फ कर मर जाता है।
(२) कुछ कम्पनियाँ शैम्पू में अंडे का प्रयोग करती है।
(३) चिटिन- कीड़ों तथा पपड़ीदार जलचरों (झींगे, केकड़े आदि) के सख्त अवयवों से इसका निर्माण होता है।
(४) इसका इस्तेमाल चर्म-रक्षक (स्किन-केअर) उत्पादों तथा शैम्पू आदि में नमीकारक के रूप में होता है।
१२. ऑफ्टर शेव लोशन तेज तो नहीं है तथा इसके कारण फोड़े या खाज तो नहीं हो रही है यह देखने के लिए गिनीपग नामक छोटे से जानवर की खाल को खरोंचा जाता है फिर निर्दयता से उस पर इसका लेप किया जाता है।

'संस्कार सुरभि' से साभार

गुरु

कठोर भले हो पर हितकारी। स्वार्थ रहित वे उपकारी।।
गुरु रहें जयवंत हमारे। मैं हूँ उनका आभारी।।

हमारे गुरु हमारे लिये प्रभु से भी बढ कर होते हैं। हम उन्हें परमात्मा की तरह पूजते हैं, हृदय के सिंहासन पर आसीन करते हैं। क्यों ? क्यों कि उन्होंने नि: स्वार्थ भाव से हमारा कल्याण किया है, दुर्लभ सयम व्रत दिया है। वास्तव में वे किशमिश से भी मृदु नवनीत वत् होते हैं। यदि कोठर दिखते हैं तो हमारी गल्तियों, स्वच्छदताओं के कारण परन्तु ध्यान दें। कि माता-कुमाता हो सकती है, पर गुरु कभी कुगुरु अहित करने वाले नहीं होते। वे अपने हृदय को कितना भी कठोर बना लें, पर अंतरंग झांकी में वात्सल्य का नीर होता है। अत: भगवान से प्रार्थना करना, कठोर अनुशासक व शिष्य हितकारी गुरु भव-भव में मिलें। मैं उनकी नित सेवा करूँ। वे युगों-युगों तक जयवंत रहें। उनकी डाँट-डाँट नहीं अपितु सफलताओं की वाट है।

साभार-समयोचित शिक्षायें

गोम्मटसार कर्मकाण्ड ग्रंथ की क्लास का शुभारंभ

आज हम सभी ने अंधकार से प्रकाश की ओर आने का उद्यम किया है। अंधकार में कोई नहीं जीना चाहता फिर भी अज्ञानतावश हमने अनंतकाल अंधकार में व्यतीत किया है।

जिनवाणी हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। हम अपने धर्म को समझें, अपने तीर्थंकर आदि महापुरुषों को समझें, कर्म सिद्धान्त को समझें, जिस अहिंसा आदि सिद्धान्त के लिए अनेकों लोग तरसते हैं उन्हें समझने का प्रयास करें। विश्व वैज्ञानिक आइस्टीन हुए उन्होंने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा- मुझे नहीं पता पुनर्जन्म होता है या नहीं, यदि पुनर्जन्म होता हो तो मेरा जन्म भारत देश में हो वह भी जैनधर्म में हो। इन्द्रागांधी जब गोम्मटेश्वर बाहुवली भगवान का अभिषेक देखकर लौटी तो पार्लियामेन्ट में किसी व्यक्ति ने टॉइन्ट कसते हुए कहा- ऐसा लगता है मानो आप भी जैन बन गई हो तो उन्होंने कहा- मैं ही क्या? अपने सारे मुल्क को मैं जैन देखती हूँ अहिंसा सत्य का आचरण करने वाले सभी लोग मुझे जैन मालूम होते हैं। महात्मा गांधी जी ने अपने पत्र में लिखा था मैं जैन मुनि बनना चाहता था लेकिन नहीं बन पाया। अभी कुछ समय पूर्व मोदी जी ने कहा था जो जैन हैं वे संपूर्ण वर्ड में अच्छी और संस्कारित समाज है।

जब किसी के मुख से सुनते हैं कि हम जाति से तो जैन नहीं हैं लेकिन कर्म से जैन हैं और भविष्य में जैन बनना चाहते हैं तो मुझे बड़ी खुशी होता है। संसार में प्राय: जितने भी दर्शन हैं सभी ने जैनधर्म को आदर सम्मान दिया है। जब हम अजमेर में थे, वहाँ मुस्लिम समाज की प्रसिद्ध दर्गाह है। जब वहाँ से अन्य समाजों के जुलूस आदि निकलते है तो दर्गाह के सामने बैंड बाजे बंद करना होते हैं लेकिन जब जैन धर्म का जुलूस निकलता है तो उसके बाजे बंद नहीं होते बल्कि उसके सामने और अधिक तेज हो जाते हैं वो लोग भी आदर सत्कार कर खुशी मनाते हैं ऐसे महान जिनशासन के रहस्यों को हम सभी इस शिविर के माध्यमक से समझने का प्रयास करेंगे।

यह शिविर एक हॉस्पिटल है जहाँ आने वाले भ्रम रोगी, अज्ञान रूपी अंधेपन के रोगी स्वस्थ होकर जायेंगे। शिविर एक कारखाना है जिसमें आने वाला कच्चा माल पक्का होकर जाता है। शिविर एक ऐसा कैम्प है जहाँ धर्म के साथ लौकिक जीवन जीने की भी शिक्षा प्राप्त होगी।

आज तक आपने असंयमी के मुख से अनेक बार पढ़ा लेकिन अब संयमी महाव्रती से पढ़ने का अवसर प्राप्त होगा। साधुसंत मात्र थ्योरी में ही नहीं समझाते अपितु पहले वे अपने आचरण में ढ़ालते हैं फिर उसे अन्य को सिखाते समझाते हैं यही कारण है उनकी बात आसानी से सभी के गले उतर जाती है।

इस शिविर में हम विनय के साथ पढ़ेंगे क्योंकि विणयंददाति विधि विनय से विद्या आती है। हम सभी अपने धर्म ग्रंथों की जितनी विनय कर सकते हैं उतनी अधिक विनय के साथ उन्हें पढ़ेंगे। हाथ-पैर धोकर ग्रंथ को छुयेंगे अगर किसी ने सौप इलायची खाई है तो मुख शुद्धि करके छुये, जब तक क्लास पढ़े तब तक कोई लिपिस्टिक, नैलपेन्ट का प्रयोग नहीं करेगा।

जब भी क्लास में बैठेंगे पंक्तिबद्ध होकर बैठें, ध्यान पूर्वक इस क्लास को पढ़ेंगे क्योंकि गोम्मटसार कर्मकाण्ड कोई सामान्य क्लास नहीं शास्त्री डिग्री. प्राप्त करने वालों की क्लास है इसमें हर बात बार-बार नहीं बताई जायेगी। एक बार बताई गई बात को ध्यान रखकर आप आगे के सभी कार्य करें।

किसी भी ग्रंथ को प्रारंभ करने के पूर्व छह बातों का ध्यान रखना होता है-

मंगल णिमित्त हेऊ परिणामं णाम तह यह कत्तारं।
वागरिय छप्पि पच्छा वक्खाणउ सत्वमाइरियो।। १।।

१. सबसे प्रथम मंगलाचरण किया जाता है। शिष्ट पुरुषों की प्रथम यही पहचान है कि वे किसी भी कार्य के पूर्व मंगलाचरण करते हैं मंगलाचरण क्यों किया जाता है इसके विषय में कहा है-

नास्तिकत्वपरीहारः शिष्टाचारप्रपालनम्।
पुण्यावाप्तिश्च निर्विध्नः शास्त्रादौ तेन संस्तुति।। दृ.स.टी.।।

पहला विशेषण है नास्तिकता का परिहारं, हिन्दू दर्शन में जैनधर्म को नास्तिक माना है क्योंकि हमारे जैनधर्म से उनकी कुछ-कुछ बाते भिन्न हैं। जैनधर्म में ईश्वर का अवतार स्वीकृत नहीं है ईश्वर को कर्ता स्वीकार नहीं किया। यहाँ अपने-अपने कर्म और उनके फल पुण्य-पाप की स्वतंत्र व्यवस्था है कोई भगवान किसी को सुख दुख नहीं देता क्योंकि भगवान् किसी को सुख और किसी को दुख देंगे तो वे रागी द्वेषी ठहरायेंगे जबकि भगवान राग-द्वेषादि सभी दोषों से सर्वथा मुक्त हैं सिद्ध परमात्मा है उन्होंने अपने संपूर्ण कर्म (जला दिये) नष्ट कर दिये हैं इसलिए वे कभी संसार में पुनः नहीं आ सकते लेकिन हम सभी उनकी भक्ति करते हैं उन सच्चे देव, शास्त्र, गुरु पर श्रद्धा रखते हैं इसलिए जैनधर्म नास्तिक नहीं आस्तिक्य है और मंगलाचरण करने का अर्थ ही है जो अपने आराध्य पर श्रद्धा आस्था रखता है वही मंगलाचरण करता है।

२.शिष्टाचार का पालन- जो योग्य सम्य और अच्छे शिष्य होते हैं वे शिष्टाचार का पूर्ण रूपेण ध्यान रखते हैं आपने देखा हमारे शिष्य देश के किसी भी कौने में क्यों न हों फिर भी वे सभी कार्य आज्ञा से करते हैं। चातुर्मास कहाँ करें पूछते हैं श्रावकों को प्रार्थना के लिए भेजते हैं। जिसने संघ में रहकर आज्ञा अनुशासन का पालन करना सीख लिया उनके वही संस्कार बाहर जाकर लोगों की दृष्टि में आदर सम्मान बढ़ाते हैं।

जब हम उदगांव पहुंचे तो गुरुदेव सन्मतिसागर जी महाराज बोले पहले तो तुम छोटे थे तब सारे कार्य पूछकर करते थे अब तो बड़े हो गये हो, मैंने कहा- गुरुदेव मैं बड़ा मात्र अपने शिष्य और भक्तों के लिए हूँ आपके समक्ष तो मैं अभी भी छोटा सा शिष्य हूँ और शिष्य ही रहूँगा। बच्चा कितना भी बड़ा क्यों ने हो जाये लेकिन माता-पिता के लिए बेटा ही रहेगा छोटा ही रहेगा।

जब हमसे कोई पूछता है कि हम सभी साधुओं को पेन देना चाहते हैं हम भी कह देते हैं दे दो लेकिन पता चलता है किसी ने लिया ही नहीं क्यों? क्योंकि सभी शिष्य अनुशासित हैं शिष्टाचार का ालन करते हैं वे हर किसी के समक्ष हाथ नहीं फैलाते उन्हें जो भी चाहिए होता है गुरु से लेते हैं।

मंगलाचरण में भी शिष्टाचार का ध्यान रखना होता है। हाथ जोड़कर करें। हाथ कैसे जोड़े कई बार व्यक्ति नाक के पास साथ जोड़ लेता है कहीं मुख के पास ऐसा नहीं, हाथ भी दो प्रकार से जोड़े जाते हैं। शास्त्रों में उल्लेख है 'भाले संस्थापि' सिर के ऊपर हाथ जोड़े। दूसरा हृदय के सन्मुख हाथ जोड़कर रखें, आँखों पर भी संयम रखें, इधर-उधर चंचल दृष्टि से देखते हुए मंगलाचरण नहीं किया जाता आँखे बंद करके किया जाता है अथवा नाशाग्र दृष्टि से करें पैर भी व्यवस्थित रखकर खड़े हो, घोड़े की तरह हिलाते-डुलाते नहीं, उस वक्त अपने मन, वचन, काय तीनों शुभ योग में लेगे होना चाहिए तभी उस मंगलाचरण से पुण्य की प्राप्ति होती है। कितनी बार तो मुझे आश्चर्य होता है जहाँ भगवान की स्तुति स्तोत्र में व्यक्ति का मौन भी खुल जाता चाहिए वहाँ तो व्यक्ति मौन हो जाता है और जहाँ बातों में मौन हो जाना चाहिए वहां मौन खुल जाता है। है ना विपरीत स्थिति ऐसी स्थिति में पुण्य प्राप्त कैसे होगा? पुण्य प्राप्त तो तब होता है जब तीनों योग शुभ हों मंगलाचरण में लगे हों। ऐसी शास्त्र की स्तुति करना मंगलाचरण है।

२. निमित्त- कहा हैं 'बिना निमित्तौ कुतो प्रवृत्ति' बिना निमित्त के प्रवृत्ति कैसे हो सकती है। हम सभी जिस गोम्मटसार ग्रंथ का अध्ययन करना चाहते हैं उसमें चामुण्डराय नामक मंत्री (सेनापति) निमित्त बने थे।

एक दिन जब आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती जैनागम में वेद स्वरूप षट्खण्डागम ग्रंथ का अध्ययन कर रहे थे उसी वक्त वहाँ मंत्री चामुण्डराय उनके दर्शनार्थ आये। चामुण्डाराय को देखते ही महाराज ने ग्रंथ को बंद कर दिया। जब कोई दो व्यक्ति बात कर रहे हो और तीसरे के आने पर वे चुप हो जाये तो उसे बड़ा अटपटा लगता है कोई शास्त्र आदि पढ़ रहा हो और अपने जाने पर सहसा बंद कर दे तो ऐसा लगता है कहीं हम विघ्न बाधक तो नहीं बन गये। चामुण्डराय भी बड़े

व्यक्ति थे उन्हें भी बड़ा आश्चर्य हुआ। इसका कारण जानने के लिए उन्होंने बड़ी विनय से पूछ लिया कि आपने शास्त्र बंद क्यों कर दिया।

पू. आचार्य नेमिचंद्र ने उस समय धवला पु. ९वीं में लिखी बात को समझाते हुए कहा- यह सिद्धान्त ग्रंथ है इसे श्रावक जन नहीं पढ़ सकते इसिलए मैंने बंद किया है।

बन्धुओ! धवला पुस्तक ९वीं में कहा है- जिनका सिद्धान्त में प्रवेश है ऐसे मुनि आर्यिका ही सिद्धान्त ग्रंथ को पढ़ सकते हैं श्रावकगण स्वतंत्ररूप से उसे नहीं पढ़ सकते हाँ मुनिजन स्वाध्याय करें तो जिनका प्रवेश है वे श्रावक बैठ सकते हैं। और भी श्रावक क्या-क्या नहीं करता तो पहली वीरचर्या नहीं कर सकता, मुनियों की तरह योगधारण नहीं कर सकता, सिद्धान्त ग्रंथों की अकेले वाचना नहीं कर सकता और प्रास्थित ग्रंथों का अध्ययन नहीं कर सकता।

महाराज की बात सुन चामुण्डराय ने कहा- भगवन् फिर हम जैसे लोगों का कल्याण कैसे होगा हम कर्मों के विषय में कैसे समझ सकेंगे। हमें भी उस ग्रंथ की कुछ बातें बताईये। तब आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने धवलादि ग्रंथों से आम व्यक्तियों के समझ में आ जाने वाली सरल सी गाथाएँ लेकर तथा उसमें कुछ गाथाएँ और रचकर इस गोम्मटसार ग्रंथ का प्रणयन किया था इसलिए चामुण्डराय इसमें निमित्त हैं।

३. हेतु- स्वपर कल्याण, कोई भी साधु जब भी क्लास पढ़ाते हैं अथवा प्रवचन देते या ग्रंथ लिखते हैं तो वे यही सोचते हैं कि हमारे समय का सदुपयोग हो रहा है। आपको लगता है महाराज हमें पढ़ा रहे हैं लेकिन महाराज सोचते हैं कि हम स्वयं पढ़ रहे हैं क्योंकि कितना ही कण्ठस्थ विषय क्यों न हो फिर भी क्लास पढ़ाने वाले को पढ़कर ही आना चाहिए इसलिए स्व की ज्ञानवृद्धि एवं दूसरों को उपदेश देकर उनके कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।

४. परिणाम- इस ग्रंथ के अर्थ का परिणाम तो असीमित है क्योंकि ज्ञान अनंत है फिर भी गाथा प्रमाण ९७२ है। लेकिन घबराना नहीं यहाँ हमें मात्र ग्रंथ पूरा करना ही आवश्यक नहीं हैं अपितु जितना भी पढ़े उसे ठोस पढ़ना समझना आवश्यक है।

५. नाम - इस ग्रंथ का नाम गोम्मटसार है गोम्मट चामुण्डराय मंत्री का बचपन का नाम था उन गोम्मट के ईश्वर गोमटेश्वर थे और उन्हीं गोम्मट के लिए ग्रंथ का सार नेमिचंद्राचार्य ने पढ़ाया था इसलिए उसका नाम गोम्मटसार रखा था। गोम्मटसार के दो भेद हैं गोम्मटसार जीवकाण्ड और गोम्मटसार कर्मकाण्ड हम सभी जिसे पढ़ने जा रहे हैं वह ग्रंथ गोम्मटसार कर्मकाण्ड है। इसमें प्रकृतियोंक का वर्णन है आत्मा की वैभाविक परिणति का कथन है।

६. कर्ता- इस ग्रंथ के मूल कर्ता तो तीर्थंकर देव हैं किन्तु परम्परागत यह ग्रंथ आचार्य नेमिचंद सिद्धान्त चक्रवर्ती द्वारा लिखा गया है। पटखण्डागम के छहों खण्डों के ज्ञान में चक्रवर्ती सदृश्य होने से उन्हें सिद्धान्त चक्रवर्ती कहा जाता है।

आप दसवी ग्यारहवीं शताब्दि के आचार्य हैं। आपके दीक्षा गुरु आचार्य अभयनन्दि थे। आपने गोम्मटसार, क्षपणासार त्रैलोकसार ग्रंथों की रचना की। आज हम सभी बड़ी भक्ति से उनके द्वारा रचित गोम्मटसार कर्मकाण्ड ग्रंथ का अध्ययन करेंगे।

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ**	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ**	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	**ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ**	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-

प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन

जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

सितम्बर माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
जन्म दिवस	१.९.१९७५	ललितपुर, श्रमण श्री विशोक सागर जी
जन्म दिवस	१.९.१९७४	भिण्ड, श्रमणी आर्यिका विजेताश्री माताजी
जन्म दिवस	२.९.१९७८	भिण्ड, गणिनी आर्यिका विभाश्री माताजी
जन्म दिवस	३.९.१९८६	नोहटा, क्षुल्लक श्री विसौम्यसागर जी
जन्म दिवस	७.९.१९८०	ललितपुर, श्रमणी आर्यिका विसुव्रताश्री माताजी
पुण्य तिथि	१३.९.२०११	सागर, श्रमण श्री प्रत्यक्ष सागर जी
पुण्य तिथि	१५.९.२००८	मुम्बई, श्रमण श्री विश्व प्रिय सागर जी
पुण्य तिथि	१६.९.२००२	श्रेयांसगिरि श्रमणी आर्यिका वियोगश्री माता जी
जन्म दिवस	१७.९.१९८३	गुरसराय, श्रमणी आर्यिका विमुक्तश्री माता जी
पुण्य तिथि	१८.९.२००२	वीना (म.प्र.) श्रमण श्री विश्वकीर्ति सागर जी
जन्म दिवस	२०.९.१९९१	भिण्ड (म.प्र.) क्षुल्लिका विगम्या श्री माता जी
दीक्षा दिवस	२३.९.२००९	गाधीनगर (गुज.) क्षुल्लक विश्वाक्षर सागर जी, क्षुल्लक विश्वदृगसागर जी, क्षु. विजयेश सागर जी
दीक्षा दिवस	३०.९.२०१७	भिण्ड (म.प्र.) श्रमणी आ. सर्वश्री माता जी, श्रमणी आ. शुभश्री माता जी, श्रमणी आ. सिद्धिश्री माता जी, श्र.आ. संयम श्री माताजी, श्र.आ. साम्यश्री माताजी, श्रमणी आ. समय श्री माताजी, क्षुल्लिका शीलश्री माताजी।

भाद्र मास के व्रत एवं कल्याणक महोत्सव

१६ अगस्त २०१९	भाद्र पद कृष्ण १	पोडषकारण व्रत प्रारंभ
२२ अगस्त २०१९	भाद्र पद कृष्ण ६	श्री शान्तिनाथ जी गर्भ कल्याणक
२४ अगस्त २०१९	भाद्र पद कृष्ण ८	अष्टमी व्रत एवं रोहिणी व्रत
२९ अगस्त २०१९	भाद्र पद कृष्ण १४	चतुदर्शी व्रत
१ सितम्बर २०१९	भाद्र पद शुक्ल ३	रोहतीज
३ सितम्बर २०१९	भाद्र पद शुक्ल ५	दशलक्षण पर्व प्रारंभ, पुष्पाञ्जलि व्रत प्रारंभ
४ सितम्बर २०१९	भाद्र पद शुक्ल ६	श्री सुपार्श्वनाथ जी गर्भ कल्याणक
६ सितम्बर २०१९	भाद्र पद शुक्ल ८	अष्टमी व्रत, श्री पुष्पदंत जी मोक्षकल्याणक
७ सितम्बर २०१९	भाद्र पद शुक्ल ९	श्री पुष्पाञ्जलि व्रत पूर्ण
८ सितम्बर २०१९	भाद्र पद शुक्ल १०	सुगन्ध दशमी
११ सितम्बर २०१९	भाद्र पद शुक्ल १३	रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
१२ सितम्बर २०१९	भाद्र पद शुक्ल १४	चतुर्दशी व्रत, अनन्त चतुर्दशी, श्री वासुपूज्य जी मोक्ष कल्याणक दशलक्षण व्रत पूर्ण
१४ सितम्बर २०१९	भाद्र पद शुक्ल १५	रत्नत्रय व्रत पूर्ण

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के तीर्थराज सम्मेद शिखर जी से कोलकाता तक विहार का विवरण (दिनांक १०.१.२०१९ से)

दिनांक	स्थान	कि.मी.	समय	विशेष
१०.१.१९	हरलाडीह जि. गिरडीह	६	रात्रि	
११.१.१९	पार्श्वनाथ इसरी	१३	आहार	श्री पार्श्वनाथ बीसपंथी को.
११.१.१९	औरा	१४	रात्रि	
१२.१.१९	बगोदर	१५	आहार	
१२.१.१९	गगेहर	१३	रात्रि	
१३.१.१९	बरकट्ठा	१०	आहार	
१३.१.१९	स्क्रेज	१०	रात्रि	
१४.१.१९	पंचमाधव	१२	आहार	
१४.१.१९	सिघराव	१०	रात्रि	
१५.१.१९	चोपारण	१२	आहार	
१५.१.१९	बेठना जि-पतरा	९	रात्रि	
१६.१.१९	इटखोरी	६	आहार	
१६.१.१९	इटखोरी क्षेत्र	४	रात्रि	श्री शीतलनाथ
१९.१.१९	बागमुण्डी	११	रात्रि	भ.जन्म स्थली
२०.१.१९	गारुकुरहा	१२	आहार	
२०.१.१९	पद्मा जि-हजारी बाग	९	रात्रि	
२१.१.१९	सिझुआ	९	आहार	
२१.१.१९	महावीर हॉस्पि.	१०	रात्रि	
२२.१.१९	हजारीबाग नगर	४	आहार	श्री पा.दि.बडा
२५.१.१९	नमनविद्या हजारी.	५	आहार	श्री महा.मंदिर
२६.१.१९	चरही	१४	रात्रि	
२७.१.१९	जोड़ाकरम	१२	आहार	
२७.१.१९	बोंगावार	९	रात्रि	
२८.१.१९	रामगढ कैण्ट	६	आहार	श्री पा.दि.बडा
२८.१.१९	चुट्पालू राची	१२	रात्रि	
२९.१.१९	ओरमाझी	१२	आहार	
२९.१.१९	छोटा नागपुर	१३	रात्रि	
३०.१.१९	रांची नगर प्रवेश	८	आहार	श्री पा.दि.जैन
६.२.१९	रतन जि.-रांची	१२	रात्रि	
७.२.१९	रामपुर	१	आहार	
७.२.१९	माचा	१०	रात्रि	
८.२.१९	बुन्डू जि. रांची	१४	आहार	

दिनांक	स्थान	कि.मी.	समय	विशेष
८.२.१९	सलगाडीह	१२	रात्रि	
९.२.१९	देवडी	७	आहार	
९.२.१९	रूगड	१२	रात्रि	
१०.२.१९	देवलटांड क्षेत्र	८	आहार	श्री आदि.मं.
११.२.१९	शेकरडीह	६	रात्रि	नवडीमे जै
१२.२.१९	चौका	१२	आहार	
१२.२.१९	खूटी	१०	रात्रि	
१३.२.१९	कान्ड्रा	१२	आहार	
१३.२.१९	विजय	१३	रात्रि	
१४.२.१९	सगमकेला	१२	आहार	
१४.२.१९	सागाजाटा	१२	रात्रि	
१५.२.१९	चाईबासा	१३	आहार	
१५.२.१९	विस्टुमपुर	१३	रात्रि	
१६.२.१९	ईलीगाडा	१३	आहार	
१६.२.१९	हाटगम्हरिया	८	रात्रि	
१७.२.१९	करजिया	८	आहार	
१७.२.१९	गोरेयाहुवा	१०	रात्रि	
१८.२.१९	जैतगढ़ जिला	६	आहार	
१८.२.१९	चम्पुया	६	रात्रि	
१९.२.१९	कालीन्दा प्रसाद	१०	आहार	
१९.२.१९	बलीबन्ध	११	रात्रि	
२०.२.१९	तांगरानी	११	आहार	
२०.२.१९	पदमपुर	१२	रात्रि	
२१.२.१९	केन्दुझर	१२	आहार	
२१.२.१९	णरणपुर	६	रात्रि	
२२.२.१९	बागपुटली	१२	आहार	
२२.२.१९	कटरा	९	रात्रि	
२३.२.१९	सानमसीणा	१२	आहार	
२३.२.१९	मुकटपुर	११	रात्रि	
२४.२.१९	पूजामुला	१४	आहार	
२४.२.१९	कालीमाटी	९	रात्रि	
२५.२.१९	बिरगोविन्दपुर	१०	आहार	
२५.२.१९	आनन्दपुर	११	रात्रि	
२६.२.१९	स्वापदा	१२	आहार	
२६.२.१९	मलनिया	६	रात्रि	
२७.२.१९	जाजपुर नगर	६	आहार	जैन मंदिर

दिनांक	स्थान	कि.मी.	समय	विशेष
२८.२.१९	गोलापुर	१३	आहार	
२८.२.१९	कुवाखीया	१०	रात्रि	
१.३.१९	शंखारीडीट	१२	आहार	
१.३.१९	चन्डीखोल	८	रात्रि	
२.३.१९	सतिया	११	आहार	
२.३.१९	बन्दालटांगी	७	रात्रि	
३.३.१९	मंगुली	८	आहार	
३.३.१९	जगतपुर	८	रात्रि	
४.३.१९	मेहताबरोड	१०	आहार	
५.३.१९	कटक	४	आहार	श्रीनमी दि.जैन
७.३.१९	तेलागपेठ	१३	आहार	मंदिर
८.३.१९	रुद्रपुर भुवनेश्वर	६	आहार	
८.३.१९	नि.-भुवनेश्वर	९	रात्रि	
९.३.१९	खण्डगिरि-उदयगिरि कोटिशिला सिद्ध	१०	आहार	
२५.४.१९	रसुलगढ़	१०	रात्रि	
२६.४.१९	तेलागपेठ	१२	आहार	
२६.४.१९	चावलागंज	१०	रात्रि	गृह चै.चन्द्रप्रभु
२७.४.१९	जगतपुर	८	आहार	
२८.४.१९	मुगली कटक	८	रात्रि	
२९.४.१९	बन्दालटांगी	७	आहार	
२९.४.१९	छतीया	८	रात्रि	
३०.४.१९	घातमण्डल	११	आहार	
३०.४.१९	जाका	९	रात्रि	
१.५.१९	कुवाठीया	१२	आहार	
१.५.१९	पानीपोली	१०	रात्रि	
२.५.१९	ब्रजनगर	८	आहार	
४.५.१९	बहुदरा	११	रात्रि	
५.५.१९	भद्राकनगर	९	आहार	
५.५.१९	गेलीपुर	८	रात्रि	
६.५.१९	तीसलपुर	११	आहार	
६.५.१९	सिमलीया	८	रात्रि	
७.५.१९	तलनगर	१०	आहार	
७.५.१९	सोरो	९	रात्रि	
८.५.१९	बहनगा	९	आहार	
८.५.१९	खन्तापडा	९	रात्रि	
९.५.१९	कुरुड़ा बालासोर	९	आहार	
९.५.१९	रेमुना	७	रात्रि	

दिनांक	स्थान	कि.मी.	समय	विशेष
१०.५.१९	फुलाव	७	आहार	
१०.५.१९	हल्दीपाडा	७	रात्रि	
११.५.१९	दण्डीका	८	आहार	
११.५.१९	बरुनगदिया	७	रात्रि	
१२.५.१९	सिक्सराई	१२	आहार	
१२.५.१९	जालेश्वर	८	रात्रि	
१३.५.१९	सोनकानी	१०	आहार	
१३.५.१९	झालीया, मेदीपुर	९	रात्रि	
१४.५.१९	नेकुसनीया	१२	आहार	
१४.५.१९	बेल्डा	९	रात्रि	श्रीपा.दि.जै.मं.
१५.५.१९	नारायण	१०	रात्रि	
१७.५.१९	रामपुर	१०	आहार	
१७.५.१९	काशीपुर	१०	रात्रि	
१८.५.१९	खडकपुर	९	आहार	श्रीशा.दि.जै.मं
२४.५.१९	रूपनारायणपुर	८	रात्रि	
२५.५.१९	मादपुर, मेदीपुर	१०	आहार	
२५.५.१९	काबीलपुर	११	रात्रि	
२६.५.१९	उनसाडीबाध	१०	आहार	
२६.५.१९	पाचकुडा	१०	रात्रि	
२७.५.१९	वारदावाद	१०	आहार	
२७.५.१९	कोलाघाट	८	रात्रि	श्रीपा.दि.जै.मं.
२८.५.१९	बागनन, हावडा	८	रात्रि	
२९.५.१९	माधवपुर	६	आहार	
२९.५.१९	उलवेरीया	८	रात्रि	
३०.५.१९	पाचला	१२	आहार	
३०.५.१९	बाथोडा	८	रात्रि	
३१.५.१९	जगलपुर, हावडा	७	आहार	
१.६.१९	शान्त्रगंज	१०	रात्रि	
२.६.१९	विवेदविहार	१०	आहार	
६.६.१९	विक्रमविहार	२	दर्शन	गृह चै.च.
७.६.१९	बंगवासी हावड़ा	४	दर्शन	गृ.चै.पा.दि.जै
१०.६.१९	डबसन हावड़ा	८	आहार	श्रीपा.दि.जै.मं.
१६.६.१९	बेलगछिया कोल.	९	आहार	श्रीपा.दि.जै.मं.
२४.६.१९	बड़ाबाजार कोल.	५	आहार	श्रीपा.दि.जै.मं.
२८.६.१९	षटजिनालय को.	३	दर्शन	३ मं. ३ गृ.चै.
५.७.१९	चौरंगी कोल.	१०	आहार	श्री महा.दि.जै.
८.७.१९	काकुडगाधी को.	१०	आहार	श्री दि.जै.मं.
१४.७.१९	बेलगछिया को.	६	आहार	
	कुल-	**१३५१**	**कि.मी.**	

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ
वर्षायोग-२०१९ उपसंघों की संशोधित सूची

क्र	साधु का नाम	दीक्षा गुरु	वर्षायोग स्थान/ सम्पर्क सूत्र
१.	पू.श्रमण श्री विश्वास सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री विभंजन सागर जी मुनिराज	प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी	श्री दिग. जैन मंदिर वरुणपथ जयपुर (राजस्थान)
२.	प.श्रमण श्री सुप्रभसागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री प्रणतसागर जी मुनिराज	प.श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज प.श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज	विद्या विहार-मडावरा जिला-ललितपुर (उत्तरप्रदेश)
३.	पू.श्रमण श्री विकसंत सागर जी मुनिराज पू.श्रमण श्री आवश्यक सागर जी मुनिराज पू.श्रमणी आर्यिका समितिश्री माता जी	प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनि. प. पू. गणाचार्य श्री विभवसागर जी मुनिराज प.पू.श्रमणाचार्य विभवसागर जी मुनिराज	श्री दिगम्बर जैन मंदिर लौहारिया जिला-वासवाड़ा (राजस्थान)
४.	पू.श्रमण श्री विश्वाक्षसागर जी मुनिराज (पू. श्रमण श्री विश्वदृगसागर जी महाराज ससंघ के साथ)	प.पू. श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी मुनिराज	श्री दिगम्बर जैन मंदिर बड़ा मलहरा जिला-छतरपुर (मध्यप्रदेश)
५.	गणिनी श्रमणी आर्यि. विज्ञाश्री माता जी श्रमणी आर्यिका विकक्षाश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञानश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञाताश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञप्तिश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञेम्याश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञायकश्री माता जी श्रमणी आर्यिका ज्ञेयकश्री माता जी क्षुल्लिका विभद्राश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माता जी पू. गणाचार्यश्री विरागसागर जी महाराज	श्री दि.जैन मंदिर मदनगंज किशनगढ़ जिला-अजमेर, (राजस्थान)
६.	श्रमणी आर्यिका विनतश्री माता जी क्षुल्लिका विक्रमाश्री माताजी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री दि.जैन मंदिर बरायठा जिला-सागर (म.प्र.)
७.	श्रमणी आर्यिका विनिवृताश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री दि.जैन मंदिर सेलम (तमिलनाडू)
८.	क्षुल्लक श्री विदेहसागर जी महाराज	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	सिद्धक्षेत्र श्री सोनागिर जी जिला- दतिया (म.प्र.)
९.	क्षुल्लिका श्री विजिताश्री माता जी	पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज	श्री दिगम्बर जैन मंदिर, धनवाद (झारखण्ड)

समाचार

बड़े बाजार के बड़े मंदिर में हुई बड़ी प्रभावना

दिनांक २४ जून से ३ जुलाई २०१९ तक कलकत्ता के प्रसिद्ध बड़े बाजार के बड़े मंदिर में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ५० पिच्छी के पावन सान्निध्य से अपूर्व धर्म प्रभावना हुई प्रात:काल स्तोत्र पाठ, आचार्य वंदना, अभिषेक शान्ति धारा प्रवचन आहारचर्या, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, आरती, जिज्ञासा समाधान आनन्द यात्रा एवं वैय्यावृत्ति के माध्यम से सभी के अपूर्व पुण्यार्जन प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। २८ जून को प.पू. गणाचार्य श्री ससंघ द्वारा सभी मंदिरों में गृह चैत्यालयों की वंदना की।

पुष्पाजंली को मिला आशीर्वाद- ३० जून को जैन समाज द्वारा जन कल्याण के लिये समर्पित विख्यात संस्था पुष्पाजलि द्वारा संचालित (पैथोलोजीकल) चिकित्सा की जाँच एवं परीक्षण केन्द्र में प.पू. गणाचार्य श्री ससंघ की मंगल भव्य अगवानी पाद प्रक्षालन एवं मंगल आरती उतारकर की गई। प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा सभी को धर्मोपदेश एवं मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

कल्याण मंदिर विधान- प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में ३० जून को ५१ जोड़ों को साथ अनेकों श्रद्धालुओं ने भक्ति संगीत के साथ श्री कल्याण मंदिर विधान किया जिसमें श्री अभय सरावगी को सौधर्म इन्द्र श्री सज्जन जी सुस्मिता जैन को कुवर बनने का एवं श्री सुमेरुचन्द्र जी चूडीवाल को शान्तिधारा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

चौरंगी में चहुओर हुई धर्म रंग वर्षा

दिनांक ४ जुलाई को चौरंगी में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ की स्थान-स्थान पर पाद प्रक्षालन एवं मंगल आरती उतारकर बड़े हर्षोल्लास के साथ जैन समाज में भव्य मंगल अगवानी की। चौरंगी जैन मंदिर में जिनदर्शन अभिषेक शान्तिधारा के पश्चात् समस्त संघ का वालीगंज आनन्द आश्रम में दिनांक ७ जुलाई तक आवास रहा जहाँ नित्य प्रात: स्तोत्र पाठ आचार्य वंदना मंगल प्रवचन पू. गुरुदेव का पूजन आहार चर्या स्वाध्याय प्रतिक्रमण आरती जिज्ञासा समाधान एवं आनन्द यात्रा वैय्यावृत्तिक कर श्रद्धालुओं अपूर्व आनन्द की अनुभूति के साथ पुण्यार्जन किया।

दिनांक ७ जुलाई को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज की भक्ति एवं संगीत के साथ अष्ट द्रव्य से विशेष पूजन का आयोजन किया गया। प.पू. गणाचार्य श्री ने अपने अमृतमयी उदबोधन से सभी को अपना मंगल आशीष दिया।

श्री दिग. जैन तेरापंथी कोठी सम्मेद शिखर जी बेवसाइट का लोकार्पण- दिनांक ७ जुलाई २०१९ को प.पू. गणाचार्य श्री ससंघ के पावन सान्निध्य श्री दिग. जैन तेरह पंथी कोठी श्री सम्मेद शिखर जी की वेबसाइट का भव्य लोकार्पण एवं ऑन लाइन सुविधाओं भव्य शुभारंभ किया गया। जिसमें मंगला भी ऑन लाइन किया गया। श्री दौलतराम जी विमलकुमार पाटनी परिवार इसके आयोजक रहे। कार्यक्रम में कलकत्ता जैन समाज एवं श्री बंगाल विहार, उड़ीसा तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन जैन जिनवाणी के सम्पादक श्री दिनेश जी द्वारा किया गया।

काकुड गाछी को भी मिला सौभाग्य

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ की ५० पिच्छी का काकुड़ गाछी जैन समाज को ८ जुलाई को भव्य अगवानी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प.पू. गणाचार्य श्री की नित्य भक्ति के साथ अष्ट द्रव्य से पूजन, प्रवचन, स्वाध्याय, मंगलआरती जिज्ञासा समाधान तथा वैराग्यवृत्ति व आहार दान कर सातिशय पुण्यार्जन करने का सौभाग्य प्राप्त करने का अवसर काकुड़ गाछी जैन समाज का इतिहास में प्रथमवार इतने विशाल चतुर्विध संघ से मिला। जन-जन में हर्षोल्लास देखा गया।

भव्य अगवानी एवं ध्वजा रोहण

१४ जुलाई २०१९ को श्री दिग. जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति एवं कलकत्ता जैन समाज के निवेदन पर प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने ससंघ काकुड गाछी से पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर बेलगछिया में वर्षायोग २०१९ हेतु विहार किया। मार्ग में स्टेशन के पास श्रमणी आर्यिका विजेताश्री माता जी एवं श्रमणी आर्यिका विरम्याश्री माता जी ने प.पू. गुरुदेव गणाचार्य श्री ससंघ के साथ वर्षायोग करने हेतु पू. गणाचार्य श्री की आचार्य वंदना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। श्याम वाजार में पू. आचार्य श्री सुवलसागर जी महाराज ससंघ एवं आर्यिका चिन्तनमती माता जी ससंघ ने पू. गणाचार्य श्री का पाद प्रक्षालन कर आचार्य वंदना की एवं वात्सल्य पूर्व मिलन कर आशीर्वाद लिया। मार्ग में कलकत्ता के विभिन्न क्षेत्रों की जैन समाज एवं महिला मण्डलों ने प.पू. गणाचार्य श्री का अनेक स्थानों पर पाद प्रक्षालन व मंगल आरती तथा विभिन्न संस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ भव्य अगवानी की। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर बेलगछिया के मुख्य द्वार पर प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज एवं आचार्य श्री सुवलसागर जी महाराज का पाद प्रक्षालन कर मंत्रोच्चार पूर्वक ससंघ भव्य मंगल प्रवेश कराया गया। मंदिर जी जिन दर्शन के पश्चात् वर्षायोग २०१९ की स्थापना हेतु श्री कमल जी श्रीमती पुष्पादेवी टोंग्या परिवार द्वारा प.पू. गणाचार्य श्री ससंघ के पावन सान्निध्य में मंगल ध्वजारोहण किया गया।

वर्षायोग २०१९ प्रतिष्ठापन अनुष्ठान

१५ जुलाई २०१९ को सम्वत प्रतिक्रमण कर प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज आ.श्री सुबलसागर जी महाराज, मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज ससंघ ६१ पिच्छियों का उपवास पूर्वक वर्षायोग २०१९ प्रतिष्ठापन अनुष्ठान पूर्वक सम्पन्न हुआ।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव सम्पन्न

१६ जुलाई को प्रात: प.पू. गुरुदेव गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज का आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज, पू. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज सहित संघस्थ सभी साधु-साध्वियों द्वारा पाद प्रक्षालन कर शास्त्र भेंट किया। तत्पश्चात् १०८ थालों में १०८ जोडों सहित कलकत्ता जैन समाज व विभिन्न महिला मण्डलों एवं वाहर से आये गुरु भक्त परिवार के श्रद्धालुओं पू. गणाचार्य श्री का पाद प्रक्षालन कर गाजे-बाजे के साथ गुरु पूर्णिमा महोत्सव हेतु धर्म सभा में सिहासन पीठपर विराजमान किया। बेलगछिया महिला द्वारा मंगलाचरण किया। गुरु भक्त परिवार जयपुर तथा केकड़ी, भिण्ड, जबलपुर, जाजपुर, पवई, रांची आदि अनेक स्थानों से आये श्रद्धालुओं द्वारा पम्पराचार्यों के चित्रों का अनावरण एवं श्री सन्तोष जी ललितजी, निर्मल जी, दीपक जी, सेठी द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। तत्पश्चात् श्री गौतम गणधर की भक्ति पूर्वक अष्टद्रव्य से पूजन कर परम्पराचार्य श्री आदिसागर जी महाराज अंकलीकर व आचार्य श्री महावीर कीर्ति महाराज को अर्घ चढ़ाया गया एवं पू. आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज व आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज की पूजन के बाद प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज, आ. सुबलसागर जी महाराज, मुनि सुपार्श्वसागर जी महाराज का पाद प्रक्षालन क्रमश: सुरेश जी, आकाश जी सेठी, सुरेन्द्र पाटनी, श्री सम्पत जी, कुसुम जी छावड़ा तथा महावीर जी संजय जी काला द्वारा किया गया। तत्पश्चात् अष्ट द्रव्य से पूजन कर प.पू. गणाचार्य श्री को १०८ शास्त्र भेंट किये गये। इस अवसर पर पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज ने अपने उद्बोधन में अपने दीक्षा गुरु आ.श्री सन्मतिसागर जी महाराज एवं धर्ममार्ग पर अंगुली पकड़कर चलाने वाले शिक्षा गुरु पू. गणाचार्यश्री के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। गुरु शिष्य की इस अनूठे पर्व गुरु पूर्णिमा का प्रारंभ करने वाले भगवान महावीर एवं उनके शिष्यत्व को स्वीकार करने वाले इन्द्रभूति गौतम सहित १५०३ शिष्यों द्वारा भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में दीक्षा ग्रहण कर गुरु के प्रति समर्पण का व्याख्यान प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अपनी अमृतमयी देशना से किया गया एवं देश के अनेक

स्थानों से आये श्रद्धालुओं सहित उपस्थित जन समुदाय को अपना मंगल आशीष प्रदान किया।

गुरु पूर्णिमा पर गुरुदेव प.पू. गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा सभी के कल्याणार्थ विशेष संदेश दिया।

वीर शासन जयंति मनाई

दिनांक १७ जलाई को वीर शासन जयन्ति पर भगवान महावीर स्वामी जी की अभिषेक शान्ति धारा पूर्वक अष्टद्रव्य से पूजन की गई। भगवान महावीर स्वामी जी की प्रथम देशना लिखने वाले इस महान दिवस पर प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा गौतम गणधर स्वामी की भक्ति से प्राकृत में ८ गाथाओं की रचना की गई। इस अवसर पर प.पू. गणाचार्य श्री का पाद प्रक्षालन कर अष्ट द्रव्य से पूजन की गई। पू. आचार्य सुवलसागर जी महाराज के उद्‌बोधन के पश्चात् प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने अपनी अमृतमयी देशना से कल्पकाल की गणना बतलाते हुए भगवान महावीर स्वामी जी द्वारा कल्याणर्थ दी गई। प्रथम देशना का सार का व्याख्यान कर उपस्थित समूह को अपना मंगल आशीष प्रदान किया।

तीन दिवसीय विधान सम्पन्न- दिनांक १८, १९, २० जुलाई २०१९ को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में क्रमश: जिन गुण सम्पत्ति, चौसठ ऋद्धि, एवं शान्तिनाथ मण्डल विधान बडे उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास मंगल कलश की स्थापना- २१ जुलाई २०१९ को अभी तक के इतिहास में कलकत्ता महानगर में प्रथमवार तीन संघों की ६१ पिच्छी के विशाल चतुर्विध संघ का प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के ४०वें आध्यात्म पावन वर्षायोग २०१९ का श्री दिगम्बर जैन समाज कलकत्ता एवं श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ व्यवस्था समिति को सौभाग्य प्राप्त हुआ है। चातुर्मास मंगल कलश स्थापना कार्यक्रम में मंगलाचरण श्री अनुश्रुति महिला मण्डल द्वारा किया गया। परमार्थ गुरुओं के चित्र का अनावरण श्री भागचन्द्र जी पहाडिया, महेन्द्र जी पाण्डया, राजूकाला, सुधीर जी जैन द्वारा दीप प्रज्वलन श्री दीपचंद्र जी, सनत जी, सुधीर जी छावड़ा द्वारा किया गया। इस अवसर पर प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज पू. आचार्य श्री सुवलसागर जी महाराज, मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज का पाद पक्षालन कर शास्त्र भेंट किये गये। मासिक पत्रिका विरागवाणी के जुलाई २०१९ के अंक का विमोचन किया गया। श्रमणी आर्यिकाओं, ऐलक, क्षुल्लिक-क्षुल्लिका माताजियों ब.ब्रह्मचारी भैया-बहिनों को वस्त्र भेंट किये गये। जो मुनि संघ व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री सुमेरचन्द्र जी चूडीवाल संयुक्त महामंत्री श्री मनीष जी गंगवाल दो शब्दों के माध्यम से अपनी भावांजलि अर्पित की। श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माता जी मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी, पू. आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज के उद्‌बोधन के पश्चात् प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने अपनी अमृतमयी देशना से वर्षायोग का महत्व, साधु साध्वियों की साधना व श्रावकों द्वारा धर्म साधना सुनने व सीखने के प्रसंगों एवं आहारदान सेवा वैय्यावृत्ति कर पुण्यार्जन करने प्रेरणा दी एवं सभी को अपना मंगल आशीष दिया। चातुर्मास का प्रथम कलश श्री लालचन्द्र जी निर्मल-पुष्पा विन्दायका परिवार को द्वितीय कलश श्री पवन जी मनीष जी भरत जी गंगवाल परिवार को तृतीय कलश श्री सन्तोष जी, श्रीमती मन्जूजी सेठी परिवार को चतुर्थ कलश श्री पवन जी, श्रीमती पानादेवी सेठी परिवार को श्री श्रेयांसगिरि मंगल कलश श्री इन्दरचन्द्र जी श्रीमती शान्तिदेवी पाटौदी को श्री विरागोदय मंगलकलश श्रीमती मन्जू पाटनी अध्यक्षा सम्यक्त्व वर्धिनी महिला मण्डल को स्थापित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मंगल कलशों को विधिपूर्वक मंत्रोच्चार कर पं. आनन्द जी शास्त्री द्वारा स्थापित कराया गया। सभा का संचालन श्री दिनेश जी धगडा द्वारा किया गया।

प्रारंभ हुआ वर्षायोग में ज्ञान पिपास से संतृप्ति का क्रम

प.पू. राष्टसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ का आ श्री सुबलसागर महाराज मुनिश्री सपार्श्वसागर जी महाराज सहित ससंघ ६१ पिच्छी के चातुर्मास कलश स्थापना के साथ ही दिनांक २२ जुलाई से वर्षायोग की ज्ञान वर्षा

का शुभारंभ हुआ। प.पू. गणाचार्य श्री स्वयं के चिन्तन लेखन के साथ संघस्थ साधु साध्वियों को समयसार **संस्कृत व्याकरण, मूलाचा**र का अध्ययन एवं **गोम्मट सागर कर्मकाण्ड** का साधु साध्वियों के अलावा योग्य श्रावक-श्राविकाओं को सहज एवं सरलतम भाषा में कक्षाओं के माध्यम अध्ययन करा रहे है। आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज तत्वार्थ सूत्र एवं श्रमणी आर्यिका विशिष्टश्री माताजी श्रावक-श्रावकों को चौबीस ठाणा की कक्षाओं के माध्यम से अध्ययन कराकर तथा प्रति शनिवार व रविवार को विशेष प्रवचन व प्रशिक्षण शिविर के माध्यम अवाल वृद्ध सभी वर्ग को ज्ञान की त्रिवेणी से अभिसिंचित कर रहे है और पिपासुजन अपनी ज्ञानपिपास से संतृप्त हो रहे हैं।

पू. श्रमणमुनि विश्वपुण्य सागर जी महाराज के समाधिमरण महोत्सव

यूँ तो संसार में प्रतिक्षण अनेकों प्राणियों का जन्म-मरण होता रहता है लेकिन उस मरण को समाधिमरण महोत्सव बनाने वाले विरले ही पुण्यवान पुरुष होते हैं।

ऐसे ही पुण्यशाली थे कोलकाता बड़ा बाजार निवासी श्रीमान ललित कुमार जैन कासलीवाल आप सरल स्वभावी, भद्र परिणामी अपने संपूर्ण परिवार के अच्छे नायक थे। आपकी पत्नी श्रीमति शोभा जैन एवं पुत्र निखिल जैन, निर्मल जैन, पुत्री निकिता जैन भी धार्मिक संस्कार वान है। यद्यपि आपकी उम्र ६५ वर्ष की थी किन्तु विगत ७ माह से असाता कर्मोदय की तीव्रता वश आपके अलसर की बीमारी ने घेर रखा था। अनेकों जगह डॉक्टरों के उपचार चले लेकिन वे कार्यकारी न हो सके। भोजन की नली में अलसर होने के कारण लगभग ४ माह से आप उन्न की कोई वस्तु नहीं खा पा रहे थे। साथ ही जो भी पेट में जाता वह तुरंत उल्टी में निकल जाता था। जिसके कारण शरीर अत्यंत क्षीण होता जा रहा था। कतिपय डॉक्टर्स ने ऑपरेशन की सलाह भी दी लेकिन उसमें भी बचने की गारंटी नहीं थी। अत: संसार की समस्त बातों से उदासीन हो आप १६.७.२०१९ गुरु पूर्णिमा के दिन कोलकाता बेलगछिया में ६१ पिच्छियों के साथ विराजमान परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी की शरण में आये तथा पूज्य गुरुदेव को अपने जीवन का गुरु स्वीकार किया।

२०.७.१९ को आप पुन: पूज्य गुरुदेव के दर्शन करने आये साथ ही श्रीफल चढ़ा सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण की भावना व्यक्त की। पूज्य श्री ने भी आपकी संपूर्ण परिस्थिति को अच्छी तरह जानकर श्रावक के १२ व्रत एंव संल्लेखना व्रत दिया।

आपकी शारीरिक स्थिति प्रतिदिन क्षीण होती जा रही थी। अत: आपके अत्यंत आग्रह से परिवार जन २८.७.१९ को पुन: गुरु चरणों में लाये उस वक्त आपने दीक्षा देने की प्रार्थना की एवं स्वेच्छा से घर का त्याग कर दिया था। बीमारी की तीव्रता के कारण अब आप मात्र पानी ही ले पा रहे थे। प्रतिदिन आपको मार्मिक संबोधन देने वाले गणाचार्य भगवन आपकी शारीरिक क्षीणता को जान रहे थे अत: आपकी प्रार्थना पर ३१.७.१९ को मात्र पेय छोड़कर तीन प्रकार के आहार का त्याग कराया।

२ अगस्त प्रात: पूज्य गुरुवर ने समयसार की क्लास के पूर्व आपको संबोधन दिया कि आप तो वीर पुरूष हो वीरों की तरह मरण करना है। आपका पुण्य आपको गुरु चरणों में लाया है तो अब निसंदेश मुनिदीक्षा प्रदान करायेगा। दोपहर में आपने गुरु दर्शन की इच्छा जाहिर की गुरुवर भी अविलम्ब ३ बजे आपके पास आये उस समय आपको ७ प्रतिमा के व्रत देकर धार्मिक पाठ सुनाये। ३.३० पर १० प्रतिमा के व्रत प्रदान किये।

जब आपने स्वयं बोलकर मुनिदीक्षा देने की प्रार्थना की तब पूज्य श्री ने आपकी अत्यंत नाजुक स्थिति देख ४ बजे कल्याणकारिणी मुनिदीक्षा प्रदान की एवं चारों प्रकार के आहार का त्याग करा यम सल्लेखना दी तथा आपका नाम श्रमण मुनि विश्वपुण्य सागर जी महाराज रखा।

उस समय आप अपनी सभी इच्छाएँ पूर्ण होने से अत्यंत प्रसन्न थे और सभी से हाथ जोड़ क्षमा याचना की। परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज, क्षमणाचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज, श्रमण मुनि सुपार्श्वसागर जी महाराज

सहित समस्त ६१ पिच्छियाँ आपको पाठ सुनाने में संलग्न थी तभी ४.१० पर पूज्य गणाचार्य भगवन् के श्रीमुख से ऊँ नम: सिद्धेभ्य: मंत्र का श्रवण करते हुए आपने अपनी अंतिम श्वास ली।

जिस समाधि मरण के लिए बड़े-बड़े साधक तरसते हैं जिसके लिए संत जीवन भर तक धर्म साधना करते हैं वह समाधि मरण गुरुकृपा से आपने प्राप्त किया। ऐसे ही जीव जगत पूज्य बनते है।

परम पूज्य गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज बड़े ही उपकारी हैं जन-जन पर अपनी करुणा बरसाने वाले हैं पूज्य श्री के कर कमलों से यह २२८ वी दीक्षा एवं आपके कुशल निर्यापकाचारित्व में १११वीं सफल समाधि हुई है।

श्रमण मुनि विश्वपुण्य सागर जी महाराज का अंतिम संस्कार ३ अगस्त शनिवार को प्रात: ६ बजे काशी मित्र घाट, बाग बाजार में किया गया। सभी धर्म श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर पुण्यलाभ लिया।

श्रमण श्री विश्वपुण्य सागर जी मुनिराज का समाधि मरण

पूर्वनाम	–	श्री ललित कुमार जी कासलीवाल
निवास	–	बड़ा बाजार, कलकत्ता
आयु	–	६५ वर्ष
पिता -माता	–	श्री नेमीचन्द्र जी कासलीवाल, श्रीमती महेन्द्राणी कासलीवाल
परिवार	–	भाई-श्री सुनील कुमार, धर्म पत्नी- श्रीमती शोभा देवी कासलीवाल, पुत्र-निलिख जैन, निर्मल जैन, पुत्री- श्रीमती निकिता जैन।
श्रावक के व्रत व संल्लेखना व्रत	–	२० जुलाई २०१९
ग्रह त्याग	–	२७ जुलाई २०१९
तीन प्रकार के आहार का त्याग	–	३१ जुलाई २०१९
मुनिदीक्षा	–	२ अगस्त २०१९, सायं ४.०० बजे
दीक्षागुरु	–	प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
नामकरण	–	श्रमण श्री विश्वपुण्य सागर जी मुनिराज
समाधि मरण	–	२ अगस्त २०१९, सायं ४.१० बजे
समाधि स्थल	–	श्री दिगम्बर जैन मंदिर बेलगछिया कलकत्ता
निर्यापकाचार्य	–	प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
सान्निध्य	–	६१ पिच्छी

धुआं रहित तम्बाकू का सेवन ९० प्रतिशत मुंह के कैंसर का प्रमुख कारण : विशेषज्ञ

चबाने वाले तम्बाकू का सेवन करनेवालों को छोड़ने की कम दी जाती है सलाह- देश दुनियाँ में दिन प्रतिदिन बढ़ रही तंबाकू उत्पादों की लत से कैंसर का प्रकोप महामारी का रूप लेता जा रहा है। इसमें खासतौर पर बचाने वाले तंबाकू उत्पादों का उपयोग प्रमुख हैं, जिसके कारण ९० प्रतिशत मुंह का कैंसर होता है, इसमें युवा अवस्था में होने वाली मौतों का मुख्य कारण भी मुंह व गले का कैंसर है।

इस अवसर पर कैंसर रोग विशेषज्ञों ने एक बहुत की चिंताजनक आशंका जतायी है कि आने वाली सदी तम्बाकू के उपयोग के कारण अरबों मौंते होगी। यदि कोई हस्तक्षेप नहीं हुआ तो इन मौतों में ८० प्रतिशत मौंते विकासशील देशों में होगी, विशेषज्ञों ने लोगों से तंबाकू से दूर रहने की अपील करते हुए यह आशंका जतायी और कहा कि कैंसर का मुख्य कारण तंबाकू सेवन हैं।

२१.४ फीसदी लोग धूम्रपान रहित तंबाकू का करते हैं इस्तेमाल- वायॅस ऑफ टोबेको विक्टिमस (वीओटीवी)

के पैट्रेन एंव और नारायण सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल के कैंसर सर्जन डॉ. सौरव दता ने कहा कि ग्लोबल एडल्ट टोबैको सर्वे, २०१७ के अनुसार भारत में बीड़ी, सिगरेट की तल की तुलना में चबाने वाले तंबाकू की लत के अधिक लोग शिकार हैं, इस सर्वे की रिपोर्ट में पाया गया है कि २१.४ प्रतिशत (१५ वर्ष से अधिक) धूम्रपान रहित तंबाकू का उपयोग करते हैं जबकि १०.७ प्रतिशत धूम्रपान करते हैं, जिसका मुख्य कारण ९० प्रतिशत मुंह का कैंसर हैं, हालांकि जब तंबाकू की बात होती है, तो सरकार, स्वास्थ्य विशेषज्ञ, गैर सरकारी संगठन और अन्य स्वैच्छिक संगठन तुरंत सिगरेट और बीड़ी के उपयोग और इसके दुष्प्रभाव के बारे में ही अधिक बात करते हैं।

दुनियाभर में हेड नेक कैंसर के ५ लाख ५० हजार नेय मामले सामने आते है, जिनमें से दो लाख लोगों की मौत हो जाती है, वहीं भारत में करीब डेढ़ लाख नये मामले सामने आ रहे है, जो कि बेहद चिंता का विषय है।

३०-३५ फीसदी मरीज भारत में- ग्लोबल एडल्ट टोबैको सर्वे, २०१७ के अनुसार इस तरह के मरीजों की संख्या की कुल मिलाकर ५७.५ प्रतिशत एशिया में है, इनमें ३०-३५ प्रतिशत मरीज भारत में पाये जाते हैं। तंबाकू या धूम्रपान के धूम्र रहित रूपों का उपयोग करने वाले आम रूप से जानते हैं कि इससे गंभीर बीमारी हो सकती है, लेकिन केवल ४९.६ प्रतिशत धूम्र रहित तंबाकू का सेवन करने वाले इसे छोड़ने की सोचते हैं जबकि ५५.४ प्रतिशत धूम्रपान करने वालों लोग छोड़ने की योजना या इसके बारे में सोचते हैं।

वर्ल्ड हेड नेक कैंसर डे पर हेड एंड नेक कैंसर सर्जन, टाटा मेमोरियल अस्पताल और वॉयस ऑफ टोबैकों विक्टिम्स (वीओटीवी) के संस्थापक डॉ. पंकज चतुर्वेदी ने कहा : धुआं रहित तंबाकू का उपयोग ९० प्रतिशत मुंह के कैंसर का कारण है, धूम्ररहित तंबाकू के उपयोग के कारण मरीज ऑपरेशन टेबल तक पहुँच जाते हैं, इसका कारण धूम्ररहित तंबाकू (एसएलटी) के उपयोगकर्ता धूम्रपान रहित उत्पादों के सारोगेट विज्ञापन के कारण छोड़ने की योजना बनाने वालों की संख्या कम है।

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमशः शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान- १. **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली पिन को. ११०००३
सं.सूत्र श्री संजय दुवे मो. ८५०६८६२९५४ फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

विराग वर्ग पहेली 44

उदाहरण - र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे-विराग

श्रे	णि	क	च	रि	त्र	ओ	मे	त्र
रे	गु	रु	व	रि	र	ए	रि	स
प्र	द्यु	म्न	च	रि	त्र	च	क	म्यं
बा	त	ग	ब	ता	ल	ओ	कँ	क्त्व
हा	रा	है	प	पा	प्र	भु	आ	कौ
वं	व	र	श्री	द्म	र्श्व	ह	दि	मू
में	दि	खा	ओ	ह	पु	पु	पु	दी
ण	रा	पु	र	त्त	उ	रा	रा	म
मे	रु	मं	द	र	पु	रा	ण	ण

विराग वर्ग पहेली 43 के उत्तर

(1) वर्धमानसागर
(2) विद्यासागर
(3) सुनीलसागर
(4) कुंथुसागर
(5) विभवसागर
(6) देवनन्दि
(7) पुष्पदंत
(8) विरागसागर
(9) विनम्रसागर
(10) सुविधिसागर

नोट- (1) आपको इसमें प्रथमानुयोग के कोई १० शास्त्रों के नाम खोजने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ ☐ डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....